पशुओं का इलाज

लेखक
श्री परमेश्वरीप्रसाद गुप्त,
बी. एस-सी., आई. डी. डी.

१९४८
नवयुग साहित्य सदन,
इन्दौर

प्रकाशक
गोकुलदास धूत
नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर ।

चौथी वार : १९४८
मूल्य
आठ आना

मुद्रकः—
पं० उमाशंकर जोशी
श्री म. भा. हि. सा. स. प्रेस, इन्दौर.

भूमिका

यद्यपि भारतवर्ष में पशु-चिकित्सा के अनुभवी विद्वान् सदैव होते रहे हैं जिन्होंने इस विषय में बहुत खोज और कार्य किया है; तथापि संगठित कार्य कभी नहीं हुआ और जो कुछ हुआ है वह इतना तितर-बितर हो गया कि अब मिलना कठिन-सा है। शालिहोत्र तथा अश्विनीकुमार ने घोड़ों तथा अन्य ढोरों के विषय में जो कार्य किया है उसे कौन भूल सकता है! पांचों पाण्डवों में नकुल को कौन नहीं जानता! वे इस विषय में बड़े दक्ष थे। ये लोग जो विद्या छोड़ गये उसमें से जो कुछ थोड़ा-बहुत मिलता है यह इस रूप में और इतना नहीं है कि उससे इस समय की हमारी आवश्यकताएं पूरी हो सकें।

इसी प्रकार मुसलमानों के समय में भी इस विषय के बड़े—बड़े विद्वान् हुए हैं। उनकी खोज और अनुभव से भी लाभ उठाया जा सकता है। 'फारस नामा' के लेखक सादतयारखाँ और उनके पुत्र रंगनि ने 'फारस-नामे-रँगनि' में जो कुछ लिखा है वह कम महत्वपूर्ण नहीं है।

ईस्ट इंडिया कम्पनी के अर्थात् अंग्रेजों के भारतवर्ष में आगमन के समय तथा उनके राज्य के प्रारम्भिक काल में अंग्रेजी दवाइयाँ हर समय और हर जगह नहीं मिलती थीं और फौजों को बराबर एक स्थान से दूसरे स्थान को मार्च करना पड़ता था, तब उन्हें हिन्दुस्तानी दवाइयों की आवश्यकता हुई। उस समय इस विषय में कुछ फौजी अफसरों ने खोज की थी और कुछ ऐसा संग्रह भी किया था जैसे Veterinary Aid-de Memoire, Bazar Medicine, Materia Medica Veterinica जिनकी मदद से आसानी से घोड़ों तथा अन्य ढोरों का स्थानिक दवाइयों से ही इलाज किया जा सके। परन्तु यह भी इस दिशा में समुचित और पर्याप्त कार्य नहीं कहा जा सकता।

भारतवर्ष के केन्द्रीय तथा प्रान्तिक वेटरिनरी विभागों ने भी इस सम्बन्ध में आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से बहुत-कुछ उपयोगी कार्य किया है, खास करके सीरम (Serum) और वेक्सीन (Vaccine) इत्यादि बनाने के सम्बन्ध में बड़ी खोज हुई है; और जो कामयाब साबित हुई है, उसका प्रचार भी किया है। परन्तु जो कुछ आधुनिक कार्य इस विषय में हुआ है वह सरकारी दायरे में ही परिमित है। वह इस ढंग का नहीं है कि उससे सर्वसाधारण स्वतन्त्र-रूप से लाभ उठा सकें।

मनुष्यों के मामले में भी भारतवर्ष में एलोपैथिक तथा वेक्सीन, इंजेक्शन इत्यादि आधुनिक अंग्रेजी तरीके मंहगे साबित हुए हैं। हिन्दुस्तान के निवासी बहुत गरीब हैं। वे इस प्रणाली (System) के अनुसार इलाज में जितना चाहिए उतना पैसा खर्च नहीं कर सकते। उनको तो पुराना तरीका अधिक माफिक आता है जिसमें घर और आसपास के बाग–बगीचों; खेतों तथा जंगलों में मिलजाने वाली चीजों की मदद से इलाज होता है। ढोरों के मामले में तो समस्या और भी विकट हो जाती है। कारण कि पहिले तो ढोरों के इलाज के लिए मनुष्यों से सात-आठ गुनी अधिक दवा चाहिए और दूसरे प्रायः ढोर पालने वाले तो भारतवर्ष में किसान या वे लोग हैं जो यहाँ सबसे अधिक गरीब हैं। आजकल की आधुनिक अंग्रेजी दवाइयाँ खरीदना उनके वश की बात नहीं है। इसलिए ऐसी दवाइयों के जरिये हमारे ढोरों के इलाज का प्रश्न हल नहीं हो सकता। ढोरों के इलाज के प्रश्न को हल करने के लिए हमें अपने भारतीय शालिहोत्र-शास्त्र को पुनर्जीवित करना होगा। मेरा खयाल है कि यदि इस विषय में भली प्रकार खोज की जाय तो हमारे यहाँ इतनी सामग्री मिल सकती है कि इसके आधार पर भारतीय शालिहोत्र-विज्ञान की नींव डाली जा सके। जब से प्रांतों में राष्ट्रीय सरकार जारी हुई है ग्राम-सुधार तथा ढोरों की देख-भाल की ओर उसका विशेष रूप से ध्यान गया है। अब यह आशा की जा सकती है कि वह भारतीय शालिहोत्र-शास्त्र

को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता अनुभव करेगी और इस काम को आगे बढ़ाने में सहायक होगी।

जब मैंने ढोरों के लिए 'चारा-दाना' पुस्तक लिखी थी तब तो मेरे सामने केवल एक ही प्रश्न था कि इसको इस प्रकार लिखा जाना चाहिए कि साधारण आदमी भी, जिसने किसी प्रकार की वैज्ञानिक शिक्षा नहीं पाई है, इसे समझ सके और उससे पूरा लाभ उठा सके। परन्तु 'पशुओं का इलाज' लिखने में इसके अलावा एक और प्रश्न उपस्थित हो गया कि इस पुस्तक में जो दवायें तजवीज की जायं वे ऐसी होनी चाहिएं कि जिनको प्राप्त करने में कम-से-कम खर्च और परिश्रम करना पड़े और वे उन ग्रामवासी भाइयों को सहज में ही मिल सकें जो बड़े-बड़े शहरों और कस्बों से बहुत दूर बसते हैं। इसलिए इस पुस्तक में जो दवायें तजवीज की गई हैं वे उन्हीं घरेलू और गांव में मिलने वाली चीजों में से हैं जो गांववालों के घर, गांव, खेत या आस-पास के जंगल में भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रांतों में मिल सकती हैं। इनी-गिनी कुछ ही चीजें ऐसी होंगी जो आस-पास के कस्बे या शहर से लानी पड़ें, जैसे काला नमक, भंग, बेलगिरी, सुहागा, कपूर इत्यादि।

इसके अलावा मैंने एक बीमारी के कई नुस्खे लिखे हैं ताकि एक नहीं तो दूसरा या तीसरा काम में लाया जा सके।

यह पुस्तक गांव में रहने वाले भाइयों की तत्संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने की दृष्टि से ही लिखी है। प्रायः गांवों में जब कभी ढोर बीमार हो जाता है तब आरम्भ में उसकी कोई परवाह नहीं करता और जब उसको ज्यादा तकलीफ हो जाती है या उससे काम में हर्ज होने का डर होता है तब उसके इलाज करने का विचार आता है। उस समय हर एक मिलने वाला अपने-अपने तजुर्बे की दवा बतलाता है और ऐसी स्थिति हो जाती है कि कभी किसी की दवा दी जाती है और कभी किसी की। इससे प्रायः हानि ही होती है। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि ढोरों के मालिक के पास कोई ऐसी चीज होनी चाहिए जिसके आधार पर वह अपने ढोरों का

इलाज कर सके और कभी किसी को बताई दवा न देकर परेशानी और फिजूल-खर्च से अपने-आपको बचाता हुआ ढोरों के कष्ट को दूर कर सके। गांव में ही क्या, कस्बों और शहरों में भी लोग छूत की बीमारियों से बिलकुल नावाकिफ होते हैं। इसलिए उनको बड़ी हानि होती है और उनके बहुमूल्य ढोर बड़ी भारी संख्या में मर जाते हैं। इस नुकसान को रोकने के लिए छूत की बीमारियों का पहचानना तथा यह जानना कि बीमारी की हालत में ढोरों की देख-भाल किस प्रकार की जाती है, बहुत आवश्यक है। पुस्तक के अन्त में दवाइयों के नाम अंग्रेजी में भी इसलिए दे दिये गये हैं कि अंग्रेजी नामों की सहायता से हर प्रांत के लोग अपनी भाषा में दवाइयों के नाम जान सकें और उन्हें उनको पहचानने में सुविधा हो।

मैंने इस बात की कोशिश की है कि इस पुस्तक के लिखने का ढंग और भाषा ऐसी हो जिसे एक साधारण पढ़ा-लिखा ग्रामीण भी समझ सके और बिना पढ़ा-लिखा किसान भी पुस्तक को दूसरे से सुनकर कुछ लाभ उठा सके। यदि इस पुस्तक से किसान भाइयों तथा ढोरों के मालिकों को लाभ पहुँचा तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा। पाठकों से मेरा निवेदन है कि उन्हें इसमें किसी भी तरह की कोई त्रुटि जान पड़े या इसको अधिक उपयोगी बनाने के लिए उनकी कोई राय हो तो लेखक को सूचित करने की कृपा करें। उसके लिए लेखक उनका कृतज्ञ होगा।

गोपाष्टमी, १९९७ वि० परमेश्वरीप्रसाद गुप्त

मॉडल टाउन, गाजियाबाद (यू० पी०)

दूसरे संस्करण की भूमिका

मेरे पास पत्र-पर पत्र आ रहे थे कि हमें 'चारा-दाना' और 'पशुओं का इलाज' नामक पुस्तक भेजिये। मैं बराबर उनको प्रकाशक के पास भेजता रहा था। जब मेरे पास सेवाग्राम मे पत्र आया कि उन्हें पच्चीस प्रतियां 'चारा-दाना' और उतनी ही प्रतियां 'पशुओं के इलाज' की चाहिए, तब मैं प्रकाशक के पास स्वयं गया। वहां मालूम हुआ कि दोनों ही पुस्तकें समाप्त हो चुकी हैं। दो-चार प्रतियां भी भेजना असम्भव है। लड़ाई के जमाने में उनको छपवाना बहुत कठिन प्रतीत हुआ, कारण कागज के अभाव के साथ-ही साथ अच्छे प्रेस भी व्यस्त थे।

मैंने जब से गौ-सेवा का कार्य आरम्भ किया है मन में यह विचार दृढ़ होते चले आ रहे हैं कि गौ-सेवा के दो पहलू हैं—आध्यात्मिक और आधिभौतिक। दोनों पहलुओं में समता नहीं रही और असमता इस हद तक हो गई कि एक प्रकार का बेढंगा व्यूह-चक्र बन गया कि उसको तोड़ना कठिन हो गया है। जबतक आधिभौतिक स्थिति में सुधार न होगा तबतक आध्यात्मिक पहलू सतह (Surface) पर ही रहेगा। इस समय संसार-व्यापक घोर युद्ध के कारण जो स्थिति उपस्थित हुई है, इसमें बिछुड़े हुए गाय, बैल क्या, हर एक जीव और चीज की उपयोगिता लोगों को अनुभव हुई है, इसके साथ-ही-साथ गाय-बैलों के भली प्रकार पालन-पोषण की आवश्यकता भी महसूस हुई है। भारतवासी यह भी अनुभव करने लगे हैं कि गाय का भली प्रकार पालन-पोषण करके ही उससे अधिक-से-अधिक लाभ उठाया जा सकता है और गौ माता के असली स्वरूप का दर्शन कर सकते हैं। हमें गौ-सेवा का बड़ा अच्छा अवसर मिलगया है, इसे हाथ से नहीं

छोड़ना चाहिए । आज भारत वर्ष में गौ जाति का क्या अनिवार्य स्थान है उसका पता चला है। आज यदि एक बार अपने यहां के गाय-बैलों की ओर दृष्टि डालेंगे तो मालूम होगा कि वे पहले जितने कमजोर, भूखे मरते, अनाथ नहीं दिखाई देते । इस समय हमें प्रयत्न करके उन्हें इतना ताकतवर और उपयोगी बना देना चाहिए कि वे अब पिछड़ने न पावें । इसके लिए जो भी प्रयत्न हो थोड़ा है । हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे यहां की आधिभौतिक और आध्यात्मिक उन्नति गौ-जाति पर ही निर्भर हैं । महात्मा गांधीजी ने ठीक ही कहा है कि भारत की सुख समृद्धि गाय और उसकी संतान की समृद्धि के साथ जुड़ी हुई है । मेरा विश्वास है कि गौ-जाति को छोड़ कर हम कदापि उन्नति नहीं कर सकते । हजार प्रयत्न कीजिए बढ़िया-से-बढ़िया पुष्टिकारक (Nutritions) खाने की चीजें बनाइये, अधिक-से-अधिक काम करने वाले ट्रेक्टर (Tractor) मोटर तथा अन्य यंत्र तैयार कीजिए परन्तु गौ-जाति को छोड़कर भारतवर्ष में उन्नति करना स्वप्न देखना है ।

गौ-वंश की उन्नति के लिए उनको भली-भांत पालना, खिलाना-पिलाना रोग से बचाये रखना अत्यन्त आवश्यक है । इसके साथ-ही-साथ उनकी नसल को सुधारना हमारे लिए परमावश्यक है । यही उपयुक्त समय है, हमें इस ओर शीघ्र कदम उठाना चाहिए । गौ-जाति का पतन इतनी शीघ्रता से हो रहा है कि अगर कोइ प्रयत्न इसे रोकने के लिए न हुआ तो बचे-खुचे अच्छे पशु भी नष्ट हो जायंगे । मूल जाति Basic Stock नष्ट हो जाने पर नसल-सुधार (Breed Improvement) का विचार और प्रयत्न सब कुछ ही व्यर्थ । इसके लिए ठीक प्रकार की वांछित जाति की गायों (Right type of animal from the desired breed) के चुनाव (Selection) और नसलोत्पत्ति (Breeding) की ओर तुरन्त ध्यान देना होगा, और जोर से क्रियात्मक कार्य (Intensive Practical work) करना होगा । परन्तु यह तभी सम्भव है जब कि हम इस समय, जो भी हमारे पशु हैं, उनकी तन्दुरुस्ती और खान-

पान पर अभी से ध्यान देने लग जांयं। मुझे आशा है कि यह पुस्तक इसमें मदद करेगी, जैसा कि मेरे पास बराबर इस सम्बन्ध में भारतवर्ष के विभिन्न प्रांतों से पत्र आये हैं। यदि यह सच साबित हुआ तो मैं अपनी मेहनत सफल समझूंगा।

१५७ क्लोथ मार्केट, दिल्ली
गोपाष्टमी २२०२ वि०

परमेश्वरीप्रसाद गुप्त

विषय-सूची

पशुओं का इलाज

: १ :

रोग का निदान

बीमारी के कारण

प्रायः प्राकृतिक जीवन होने के कारण मनुष्य की अपेक्षा पशु बहुत कम रोगी होते हैं। यहां पशुओं के रखने का तरीका और मुल्कों के मुकाबले में अधिक स्वाभाविक होने की वजह से छूत की बीमारियों के सिवा उन्हें और बीमारियां कम ही सताती हैं। छूत की बीमारी तो अधिकतर हमारे अज्ञान के कारण फैलती है। अनेक साधारण रोगों का कारण कमजोरी है जो खुराक की कमी से पैदा होती है। कमजोर पर, चाहे वह मनुष्य हो या पशु, रोग का आक्रमण अधिक होता है।

पशुओं के बीमार होने के साधारण कारण

(१) (क) जरूरत से कम चारा-दाना पाना।

(ख) खुराक में आवश्यक पौष्टिक तत्वों का यथोचित मेल न होना।

(२) सड़ा-गला चारा-दाना खाना तथा गन्दा पानी पीना।

(३) गन्दा स्थान, अधिक सर्दी, गर्मी और वर्षा से बचने का ठीक प्रबंध न होना।

(४) छूत की बीमारियों से तन्दुरुस्त पशुओं को बचाने का उपाय न जानना।

तन्दुरुस्त पशुओं के लक्षण

पहले तन्दुरुस्त पशुओं के लक्षण दिये जाते हैं। इससे रोगी पशुओं के लक्षण समझने में आसानी होगी।

(१) भली प्रकार खाना, पीना और जुगाली करना।

(२) आंखों में चमक, थूथुन पर तरी, कान और पूंछ का स्वाभाविक रूप से हिलते रहना।

(३) स्फूर्ति और चैतन्य होना।

(४) रोमों और बालों में सफाई और चमक।

(५) शरीर को आहिस्ता से छूने से सिकोड़ना।

बीमार पशुओं के लक्षण

(१) पशु का रेवड़ (समूह) से अलग खड़ा होना, सुस्त और निर्बल दिखाई देना।

(२) पूरी तरह न खाना-पीना और जुगाली बन्द कर देना।

(३) दूध कम देना।

(४) कान गिरे रहना, बाल खड़े रहना, थूथुन सूखे होना।

(५) शरीर को आहिस्ता से छूने से न सिकोड़ना।

(६) कानों की जड़ के पास का हिस्सा ज्यादा गर्म और सिरा ठण्डा होना।

(७) आंख, नाक, मुंह से गीड़ (कीचड़) पानी नेटा और लार गिरते रहना।

गाय, बैल, भैंस इत्यादि के शरीर का साधारण तापक्रम-गर्मी—(Normal Temperature) १०१ से १०२ डिग्री तक होता है। इससे कुछ कम हो तो कमजोरी और अधिक हो तो बुखार समझना चाहिए। सख्त गर्मी के दिनों में कभी-कभी एक आध डिग्री, अधिक भी हो जाता है। स्वाभाविक हालत में ढोरों की नब्ज १ मिनट में ४०-५५ चलती है और सांस १ मिनट में १२ बार लेते हैं।

इसके सिवा गोबर और पेशाब की जांच करनी चाहिए। गोबर बहुत पतला, बदबूदार, असाधारण रंग वाला; खून इत्यादि मिला हुआ

अथवा छोटी-छोटी सूखी गांठों वाला भी रोग का लक्षण है। पशु के हरा चारा अधिक खाने पर गोबर प्रायः ढीला-ढाला हरे रंग का होता है और बहुत सख्त, सूखा अधिक रेशे वाला चारा बिना खली और दाने के खिलाये जाने पर गोबर प्रायः सूखा हुआ करता है, परन्तु यह अवस्था असाधारण नहीं है। बहुत गहरे रंग का खून या उसके साथ कोई और माद्दा मिला हुआ या बिलकुल पानी की तरह का बेरंगा मूत्र रोग की निशानी है।

किसी प्रकार के रोग का संदेह होते ही पशु को सबसे पहले दूसरे तन्दुरुस्त पशुओं से अलग करके परीक्षा और उसके यथोचित इलाज का प्रबन्ध करना चाहिए।

बीमारी की दो किस्में

बीमारी दो किस्म की होती हैं--एक छूत की (Contagious या infectious disease) और दूसरी साधारण (Non-contagious diseases)। एक बीमार पशु के साथ खाने-पीने, सांस लेने या छू जाने से ही तन्दुरुस्त पशु के लग जानेवाली बीमारियां छूत-वाली कहलाती हैं। इन्हें खतरनाक समझना चाहिए। ये बिना किसी वजह के केवल छूत से ही पशुओं में फैल जाती हैं। प्रायः ऐसी बीमारियों के एक बार कुछ ढोरों में फैल जाने पर दूसरे अच्छे ढोरों को इनसे बचाना मुश्किल हो जाता है। इनसे बचने का सबसे अच्छा और सरल उपाय ऐसे रोगों को न फैलने देना ही है।

परीक्षा के बाद छूत या साधारण रोग का निश्चय हो जाने पर तदनुसार पशु के रहने-सहने, खाने-पीने, देख-भाल तथा इलाज का प्रबंध करना चाहिए। यदि खतरनाक छूत की बीमारी होतो फौरन उसे तन्दु-रुस्त पशुओं से अलग दूर ले जाकर हटा दें और साधारण बीमारी हो तो भी दूसरे तन्दुरुस्त पशुओं से कुछ हटा कर, संभव हो तो अलग जगह अथवा वहीं अन्य पशुओं से बचाकर, एक तरफ रखना चाहिए।

: २ :

उपचार

बीमार पशुओं के लिए स्थान

बरसात तथा जाड़े में ठण्ड के कारण होने या उससे बढ़ने वाले रोगों में पशु को ऊपर झरोखों से काफी हवा जाने-आने वाले और साथ ही धूप और रोशनीवाले घिरे हुए मकान में रखना चाहिए, ताकि उसको सीधे हवा का झोंका न लगे तथा मकान की गंदी हवा साफ़ होती रहे। गर्मी में उसे खुले मैदान में पेड़ के नीचे अथवा घर के आंगन में भी रखा जा सकता है। रोगी पशु के शरीर पर सीधे हवा का झोंका न लगना चाहिए। लेकिन हर हालत में रोशनी और हवा की आमद-रफ्त बराबर रहनी चाहिए। अच्छा तो यह है कि रोगी पशु के बैठने का फर्श पक्का हो। उस पर खूब सूखी घास, रेत, रद्दी सूखा भूसा या पत्तों वगैरह बिछाकर जानवर के बैठने का स्थान नरम कर देना चाहिये। बिछावन को रोज बदलने का ख्याल रखना चाहिए। रोग की दशा में पतला गोबर करने, वस्ति-कर्म (एनिमा) से दस्त कराने या योनि से बच्चेदानी को साफ करने (डूश) के कारणों से बीमारी की हालत में जगह ज्यादा गंदी हो जाया करती है। रोग की हालत में ज्यादा सफाई की जरूरत हुआ करती है। इसलिए पक्का फर्श और पक्की दीवाल अधिक उपयुक्त है; पर यह न हो तो कच्चे स्थान से भी काम चल सकता है, बशर्तें कि उसको अच्छी तरह साफ रखा जाय। गोबर, कीचड़ जो कुछ हो उसे फौरन हटाकर स्थान को सुखा

देना चाहिए और दीवार पर जहां कहीं गंदगी के छींटे वगैरह लग गये हों तो गोबर-मिट्टी से लीप कर साफ कर देने चाहिए।

बीमार पशुओं के लिए खुराक

बीमार पशु की खुराक की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। अलग-अलग रोगों के वर्णन में उसके लिए खुराक भी बतलाई गई है, पर जहां कोई खास खुराक न बतलाई गई हो वहां नीचे लिखी बातों का खयाल रखना चाहिए।

(१) बीमार जानवर को थोड़ा-थोड़ा कई बार करके खिलाना चाहिए। एक ही दो बार में पेट भरकर खिला देना ठीक नहीं है।

(२) जल्दी पचने वाली, अधिक गरम, बादी तथा कब्ज न करनेवाली रुचिकर और पौष्टिक खुराक देनी चाहिए। जिसमें जानवर बीमारी की हालत में भी खुराक रुचि से खाकर आसानी से पचा ले और ताकत बनाये रख सके।

(३) खास-खास रोगों में तरल पदार्थ वर्जित होते हैं और कुछ बीमारियों में जानवर सूखे पदार्थ खा ही नहीं सकता। इसलिए रोग के अनुसार उपर्युक्त बातों का ख्याल रखते हुए खुराक देनी चाहिए।

(४) अकसर रोगी पशुओं को उनकी दशा के अनुसार हरा या मुलायम सूखा चारा, दलिया, दूध, कांजी, चाव, सत्तू, रोटी, चोकर इत्यादि दिया जाता है।

हरे चारे में—दूब या दूसरी मुलायम घास, जई, गेहूँ, बरसीम, कच्ची गिनी घास, मक्का, नेप्यिर तथा हाथी घास इत्यादि देनी चाहिए।

मुलायम सूखे चारे में—दूब तथा दूसरी मुलायम घासें जिनमें रेत मिट्टी न हो, सुखाई हुई जई का चारा, जौ, गेहूँ, जई का भूसा, पुआल, बारीक मुलायम चरी, मुलायम गिनी घास की बारीक कुट्टी इत्यादि देनी चाहिए।

दलिया—बाजरा, गेहूँ, चोकर, जई, इत्यादि को खूब पकाकर अन-

मुलायम हो जाय, देना चाहिए।

कांजी या मांड—चावल, अलसी, चोकड़ इत्यादि का देना चाहिए।

कांजी या मांड बनाने की विधि—तीन पाव चावल या चोकर या १॥ पाव कटी हुई तीसी को ५ सेर पानी में भली प्रकार उबालो फिर कपड़े में छान लो और ठंडा होने पर थोड़ा-सा नमक या गुड़ मिलाकर पिलाओ।

(५) कुछ रोगों में कुछ समय तक पानी बिलकुल नहीं पिलाते और कुछ में गरम पिलाते हैं। बाकी में हमेशा कूए का ताजा पानी पिलाना चाहिए। गरम पानी गुनगुना पिलाना चाहिए।

(६) जहां तक संभव हो, दवा के सिवा जानवर को और कोई चीज जबरन नहीं खिलानी चाहिए। थोड़े-थोड़े नियत समय के बाद उसके सामने खाने-पीने की चीजें रखनी चाहिए ताकि इच्छा हो तो खा-पी ले।

बीमार पशुओं की देखभाल

बीमार पशु की देख-भाल बड़ी होशियारी से करनी चाहिए क्योंकि उस समय वह बिलकुल लाचार होता है। मनुष्य की तरह न उसमें विचार शक्ति ही होती है और न बोल ही सकता है। इसलिए उसकी देखभाल और इन्तजाम करने वालों की बड़ी जिम्मेदारी हो जाती है। उसकी देख-भाल और दवा इत्यादि में जरा भी लापरवाही या चूक होने से उसका नतीजा न मालूम क्या हो जाय। नीचे लिखी बातों का खास खयाल रखना चाहिए:—

(१) सख्त धूप, सर्दी, बारिश, तेज हवा से बचाने के लिए बीमार पशु को छाया या मकान में रखना तथा सर्दी में उसपर झूल डालना चाहिए।

(२) बीमार पशु को मक्खी-मच्छरों से बचाने के लिए भी उसपर झूल डालना चाहिए। उसके रहने के स्थान पर सबेरे शाम गूगल, राल, गंधक या और किसी ऐसी ही चीज की धूनी देना और यह न हो तो नीम के

पत्तों या और कोई पत्ते या कूड़ा-करकट, घास इत्यादि हो जलाकर धुँआ कर देना भी लाभप्रद होता है। मच्छर इससे कम होंगे और वहां की हवा भी कुछ शुद्ध हो जायगी।

(३) पशु को नाल, ढरके (बांस की नली) बोतल इत्यादि से दवा देने के समय, पशु को गिराकर कोई दवा लगाते समय, पशु को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाते समय, तथा बीमार जानवर को खड़ा करते समय, या करवट बदलवाते समय, यह ध्यान रखना चाहिए कि पशु के साथ ज्यादा जबरदस्ती किये बिना उसे कम-से-कम तकलीफ पहुँचाकर काम किया जाय।

(४) यदि जानवर एक दिन से ज्यादा एक करवट पड़ा रहता है तो उसके दबे हुए हिस्से की खाल गलने लगती है। इसलिए जानवर के शरीर के हर एक हिस्से पर प्रकाश और हवा लगने के लिए यथासंभव एक-दो बार रोज करवट लिवाना नहीं भूलना चाहिए।

(५) साधारण बीमार जानवर को भी अच्छे जानवर से अलग ही रखना लाभप्रद है, लेकिन ज्यादा बीमार जानवर को तो अच्छे जानवर से अलग रखना बहुत ही जरूरी है ताकि समय-असमय (रात-बिरात) आदमी आसानी से उसके पास आ-जा सके और उसकी सेवा-टहल कर सके। खास करके छूत की बीमारी वाले जानवरों को अलग करना न भूलिए।

(६) बीमार जानवर के रोग का निदान या पहचान (Diagnosis) करने में जल्दी न करें। बीमारी ठीक समझ में नहीं आवे तो अपने यहां जो आदमी बीमारी को समझनेवाला हो उससे सलाह करके दवा तजवीज करें। यदि खुद फैसला न कर सकें तो आस-पास के पशुओं के डाक्टर से सलाह लेकर ही इलाज आरम्भ करना चाहिए।

(७) बीमारी से अच्छे हुए जानवर को तन्दुरुस्त जानवरों में मिलाने में जल्दी नहीं करनी चाहिए। बीमारी से अच्छा हो जाने के एक सप्ताह बाद ही अच्छे जानवरों में मिलाना चाहिए। इससे उसकी व्यक्तिगत

देख-भाल हो सकेगी और वह शीघ्र स्वस्थ होकर अपना कार्य पूर्ववत् कर सकेगा।

(८) तेज या जहरीली (Poisonous) दवा जहां फोड़े-फुंसी पर लगानी हो उससे इधर-उधर न लगे, इसका ख्याल करना चाहिए।

(९) कोई दवा जानवर को खिलाने-पिलाने के पहिले देख लेना चाहिए कि उसमें कोई जहरीली दवा तो शामिल नहीं है और है तो उसके बारे में भली-भांति निश्चय कर लेना चाहिए कि वह ठीक है या नहीं और मात्रा से अधिक तो नहीं है।

(१०) मालिक को अपने नौकर व साथी पर ही बीमार जानवर की देख-भाल का सब भार नहीं छोड़ना चाहिए बल्कि उसे खुद भी एक-आध बार देख लेना चाहिए जिससे कोई भूल हो रही हो तो उसे सुधारा जा सके। बीमार जानवर की देख-भाल करने वालों के पास जहां तक हो घर-बार का या अन्य पशुओं का या दूसरा कोई काम बीमारी के दिनों में नहीं होना चाहिए ताकि उसे यथोचित समय देने में कोई दिक्कत न हो। खास करके छूत की बीमारी के जानवरों की देख-भाल करनेवालों के पास दूसरे तन्दुरुस्त जानवरों का या घर का कोई भी काम नहीं होना चाहिए, अन्यथा छूत फैलने का डर रहेगा।

: ३ :

दवाइयों के विषय में कुछ जानकारी की बातें

सब दवाइयों को इस्तेमाल के तरीके का ख्याल करते हुए तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है।

(१) खिलाने-पिलाने वाली दवाइयां—

(अ) कूटी-पीसी बारीक दवाइयां चूर्ण या सफूफ के रूप में।

(आ) तरल दवाइयां जैसे काढ़ा, तेल तथा तरल पदार्थ में घुली हुई।

(२) लगाई चुपड़ी या बुरकाई जानेवाली दवाइयां—

(अ) बारीक पिसी हुई चूर्ण या सफूफ के रूप में।

(आ) काढ़ा, तेल या तरल पदार्थ में घुली हुई।

(इ) मलहम के रूप में।

(ई) पलस्तर अर्थात् चिपकाई जानेवाली।

(उ) धुआं या भाप देकर असर पहुँचानेवाली।

(ऊ) गुदा या योनि द्वारा दी जाने वाली।

(३) पिचकारी द्वारा देने की या टीका लगाने की दवाइयां अर्थात् वे दवाइयां जो सुई द्वारा खाल के नीचे की नस या शरीर के हिस्से में पहुँचाई जाती हैं।

(१) (अ) सफूफ या चूर्ण की शक्ल में दी जानेवाली दवाइयां खरल, इमामदस्ता, ओखली, या सिलबट्टे, किसी से कूट-पीसकर झिनझिने कपड़े या जहरीली दवा न हो तो आटा छानने की छलनी से छानकर तैयार की जाती हैं। सफूफ के रूप में पशुओं को दवा रोटी अथवा गुड़ में या किसी दूसरे खाने की चीज में रख या मिलाकर दी जाती है। कभी-कभी पानी, दूध या अन्य किसी तरल पदार्थ में जिसका बीमारी पर खराब असर न पड़ता हो घोलकर भी दी जाती है। यदि दवा थोड़ी मिकदार में हो तो जानवर का मुंह खोलकर उसकी जीभ पर डाल देने से और उसका मुंह देर तक ऊपर किये रहने से, ताकि राल द्वारा दवा बाहर न आवे, काम हो सकता है।

(आ) इनमें बहुतेरी दवाइयां जैसे तैल, शीरा इत्यादि तो तैयार ही होती हैं। कुछ दवाइयां पानी या अन्य किसी तरल पदार्थ में घोलने से या मिलाने से ही तैयार हो जाती है। कुछ ऐसी भी हैं जो पानी या दूसरे तरल पदार्थ में आसानी से घुलती या मिलती नहीं हैं। उन्हें गर्म पानी

में घोला जा सकता है। जो उसमें भी न घुलनेवाली हों उन्हें बहुत बारीक करने की आवश्यकता नहीं, छोटे टुकड़े करके बतलाये हुए अंदाज के पानी में खूब उबालकर पानी की पौन या आधी मिक्दार रह जाय उस समय छानकर गर्म या ठण्डी, जैसी बतलाई गई है, दी जाती है। कुछ दवाइयां पानी या अन्य किसी तरल पदार्थ में कुछ अर्से तक भिगो या सड़ाकर दी जाती हैं। अपने-आप पी जा सकनेवाली दवा तो पशु के सामने बर्तन में रख देनी चाहिए। अपने आप न पी जानेवाली दवाइयां बांस की नाल (ढरके) या टीन या शीशे की मजबूत बोतल में डालकर पिलानी चाहिए।

नाल या ढरके से दवा पिलाने की तरकीब—जानवर की बाईं ओर खड़ा होकर दाहिने हाथ से उसका सिर उठाये और बायें हाथ से जानवर का मुंह खोलकर दवा की बोतल या ढरके का मुंह होशियारी से जानवर के मुंह में एक तरफ जबड़े के पास जीभ के ऊपर रखकर धीरे-धीरे पिलादे। इस बात का बराबर ध्यान रखना चाहिए कि जानवर के नथुने में दवा न चली जाय। अगर खांसी बहुत तेज हो या हलक में गर्मी हो तो दवा की चटनी बनाकर चटा देना अच्छा है। अगर दवा पिलाते समय जानवर खांसे या मालूम हो कि जानवर खांसना चाहता है तो जल्दी उसका सिर छोड़ देना चाहिए जिससे वह खांस सके और दवा नथुने (सांस की नली) में न जाने पावे। दवा नथुने में चली जाने पर जानवर का सांस घुट जाने का भय रहता है।

२—(अ) ऊपर नं० १ (आ) में लिखी गई विधी से चूर्ण तैयार कर ले परन्तु वह बहुत बारीक होना चाहिए। इसको महीन कपड़े से छानना आवश्यक है। दवा लगाने की जगह साफ करके, तेल चुपड़कर या बिना तेल चुपड़े साफ रूई या हाथ से बुरका देनी चाहिए।

(आ) यह नं० १ (आ) के अनुसार तैयार करें। इन दवाइयों में कुछ उड़नेवाली (Volatile) और शीघ्र आग लग जाने वाली

(Inflamable) भी होती हैं। गर्म करने की आवश्यकता हो तो बहुत होशियारी से हल्की आंच पर ही गर्म करें, जिसमें दवा उड़ न जाय या आग न लग जाय। यह दवा किसी तिनके या बारीक लकड़ी इत्यादि के सिरे पर जरा-सी रूई या कपड़ा लपेटकर अर्थात् उसकी फुरहरी बनाकर उसे दवा में डुबोकर लगानी चाहिए। यदि शरीर के किसी भीतरी हिस्से में पहुँचाना हो तो फुरहरी या पिचकारी द्वारा पहुँचाना चाहिए बाज दफा पिचकारी की बहुत बारीक बौछार (Spray) द्वारा भी यह दवा इस्तेमाल की जाती है।

(इ) मलहम बनाने में चर्बी, तैल, मोम, वेसलीन या घी और मक्खन काम में लाते हैं। इसे मलहम का आधार (base) कहते हैं। जिस चीज का मलहम बनाना हो वह दवा उपर्युक्त आधार में भली-भांति मिलाने से मलहम तैयार हो जाता है। जहां लगाना हो वह जगह विधि-पूर्वक साफ करके ठीक नाप का कपड़ा काटें। उसपर पलस्तर की तरह लगाकर उस जगह पर चिपकादें। कभी-कभी दवा किसी चीज से या हाथ से लगाकर आहिस्ता-आहिस्ता उस जगह पर मालिश करें ताकि जज्ब होकर असर करे। मालिस करते समय खयाल रखें कि जिस ओर शरीर के रोओं (बाल) का रुख हो उसी ओर को मालिस करें अर्थात् जिस तरफ से रोयें शुरू हों उधर से हाथ रगड़ना शुरू करके जिस ओर रोयें खत्म हों उस ओर हाथ रोकना चाहिए, वरना बालतोड़ होने का भय है।

(ई) दवा पलस्तर के रूप में लगाई जाती है। दवा को किसी मोटे कपड़े पर एक-सा फैलाकर जानवर के पीड़ित भाग पर चिपका देते हैं।

(उ) धुआं और भाप देकर असर पहुँचाने के लिए आंच पर दवा डालकर धुआं पैदा करते हैं। भाप के लिए बर्तन में पानी तथा दवा डालकर बर्तन को हल्की आंच पर रख देते हैं, जिससे पानी गर्म होकर धीरे-धीरे भाप द्वारा दवा का असर हो। जिस स्थान पर दवा का

असर पहुँचाना हो उस जगह उपरोक्त तरीके से धुआं या भाप उत्पन्न करके नली द्वारा या सीधे ही उस स्थान पर धुआं या भाप लगाते हैं।

धुआं या भाप आम तौर से ऐसे मकान के अन्दर जहां सीधी हवा का झोंका न लगे लगानी चाहिए। बीमार हिस्से के नजदीक वह धुआं व भाप उत्पन्न करते हैं ताकि वह धुआं व भाप शरीर के उस हिस्से पर भली-भांति लगे। कभी-कभी यह रबड़ या हुक्के की नली द्वारा भी उस स्थान पर लगाया जाता है। जिस दवा का धुआँ या भाप सांस के जरिये अन्दर पहुँचाना है उस दवा का धुंआ या भाप जानवर की नाक के नजदीक उत्पन्न किया जाता है ताकि जानवर के सांस के जरिये अन्दर चला जाय। या यह भी हो सकता है कि एक लम्बी लकड़ी के सिरे पर कोई कपड़ा बाँध दिया जाय और वह उबलती हुई दवा के पानी में डुबोकर जानवर की नाक के नजदीक ले जाया जाय, ताकि भाप सांस के जरिये अन्दर चली जाय। इस प्रकार कई बार करके खतरनाक और भड़कने वाले जानवर को भी भफारा दिया जा सकता है। धूनी केवल सुलगे हुए उपले पर दवा डालकर या चिलम में आग रखकर उसपर दवा डालकर दी जा सकती है।

(ऊ) योनि-द्वारा दवाई का असर पहुंचाना (डूस) करना और गुदा-द्वारा हुकना (एनिमा) देने की तरकीब—

(१) सबसे पहले ८-१० सेर पानी में नीम के पत्ते डालकर खूब उबालने चाहिए या गर्म पानी में कुंए में डाली जानेवाली लाल दवा डालकर खूब मिला लेना चाहिए।

(२) एक नली, रबड़ की हो तो अच्छा है अन्यथा बांस की जिसके दोनों सिरे गोल और चिकने कर लिये गये हों; पपीते अथवा प्याज की नली भी काम में लाई जा सकती हैं। यह आधा इंच या एक अंगुल तक मोटी और ३-४ फीट या २-३ हाथ लम्बी होनी चाहिए।

(३) एक कीफ या टीप (लालटेन में तेल डालने की) यदि टीप न मिले तो चौड़ी चिलम या बदना (जिससे मुसलमान लोग पानी पीते हैं)

जिसमें नाली ठीक लग जाय, होनी चाहिए।

एक छोटी मशक या बाल्टी या डोल जिससे टीप में पानी डाला जा सके।

नली को नीम के तैल, या कपूर मिले तिल के तैल से खूब चुपड़ लो। उसके एक सिरे में कीफ या टीप, चिलम या बदना लगाकर मशक या डोल में से पानी डालते हैं और नाली का दूसरा सिरा एक बालिश्त के करीब पशु की योनि अर्थात् पेशाब करने की जगह में और बस्तिकर्म कराने के लिए गुदा में भीतर डालदो। मशक या डोल पशु से काफी ऊँचा रहना चाहिए, जिससे पानी टीप में डालते रहने से नली द्वारा जान-वर के अन्दर के हिस्से में सहूलियत से जा सके। डोल से दवा मिला हुआ पानी आहिस्ता-आहिस्ता डालते रहें। जानवर को बराबर एक जगह खड़ा रखें, इधर-उधर हटने न दें वरना नाली निकल जायगी। योनी या गुदा के पास भी नाली को हाथ से पकड़े रहें कि नाली निकल न सके। और उस जगह को दबाये रखें क्योंकि जब काफी पानी शरीर के अन्दर चला जाता है तब वह उनको निकालने के लिए जोर करता है उस समय पानी निक-लने न पावे। इस प्रकार काफी पानी जब अन्दर चला जाय तब दो-एक मिनट पानी अन्दर रोके रखें फिर हाथ हटालें और पानी निकल जाने दें। इस प्रकार दो-तीन बार करना चाहिए। ऐसा करने से अन्दर की सब गंदगी पानी के साथ निकल जाती है।

३—पिचकारी-द्वारा दवा देना या टीका लगाना—जिस तरह मनु-ष्यों में चेचक का टीका लगाते हैं उसी तरह जानवरों को छूत की बीमारियों से बचने का टीका लगाते हैं। इसमें पिचकारी के जरिये जानवरों की खाल के नीचे दवा प्रवेश करते हैं इससे जानवर कुछ अर्सेके लिए या उम्र भर के लिए उस बीमारी से बच जाते हैं। इस तरीके से जानवर को कोई तक-लीफ नहीं होती। सिर्फ सुई चुभाते समय जरा सा दर्द होता है। इसके लिए विशेष यंत्र और जानकारी की आवश्यकता होती है। इसलिए यह सदा जानकार डाक्टर से ही कराना चाहिए। इसमें जो दवा पिचकारी द्वारा अन्दर पहुँचाई जाती है वह खून की गति के साथ साथ मिलकर तमाम

शरीर में बड़ी जल्दी फैल जाती है और अपना असर करती है।

दवा की खूराक या मिकदार (Dose)—खूराक या मिकदार आमतौर से जहां दवा तजवीज की गई है वहां लिख दी गई है कि किसके लिए कितनी है; अन्यथा उसे पूरे कद के प्रौढ़ जानवर के लिए; जिसका वजन करीब ८०० पौंड या १० मन हो समझें। कम या ज्यादा वजन के जानवर को उसके वजन के अनुसार कम या ज्यादा मिकदार में दें। एक वर्ष से दो वर्ष के जानवर के लिए आधी से पौनी मिकदार और ६ महिने से साल भर के जानवर के लिए १/३ या १/२ मिकदार में, ४ माह से ६ माह तक के जानवर के लिए चौथाई मिकदार में, ४ माह से कम उम्र के जानवर को १/८ हिस्सा की मिकदार में और १ माह से कम के जानवर को ११६ भाग की मिकदार में उनके कद, वजन और अवस्था के अनुसार देते हैं। गायों से भैंसों को सवाई, बकरों को चौथाई और घोड़े को बराबर मिकदार में उनके कद, वजन और अवस्था के अनुसार दवा की खुराक देनी चाहिए।

वास्तव में मनुष्य और जानवर में जहांतक बीमारी का सवाल है कोई खास फर्क नहीं है। प्रायः जो दवा मनुष्य को लाभ पहुँचाती है वह जानवरों को भी लाभ पहुँचाती है। मनुष्य को बाज दफा बेशकीमती दवायें दी जाती हैं जो जानवरों को देना सम्भव नहीं लेकिन यदि वह जानवरों को भी दी जायं तो उनको लाभ करती हैं। मनुष्यों के मुकाबले में छःगुनी से आठगुनी तक दवा पूरे कद के प्रौढ़ जानवरों को दे सकते हैं।

: ४ :

छूत वाली बीमारियां

छूत की बीमारियां आमतौर से बीमारी के कीटाणुओं द्वारा होती हैं।

हर एक बीमारी के अलग-अलग कीटाणु होते हैं। ये इतने छोटे होते हैं कि बिना यंत्र के आंखों से दिखाई भी नहीं देते और रेत के एक जर्रे पर हजारों की तादाद में आ जांय इतने छोटे होते हैं। इनकी बढ़ोतरी भी जल्दी होती है, कई बीमारियों के कीटाणु तो एक दिन में एक से १००० या इससे अधिक हो जाते हैं। इससे अन्दाजा किया जा सकता है कि छूत की बीमारी कितनी जल्दी फैलनेवाली हो सकती है। ये कीटाणु इतने छोटे और हल्के होते हैं कि जरा-से स्पर्श से खाने-पीने की चीज द्वारा, हवा द्वारा, नाक, थूक, गोबर, पेशाब, बीमार जानवर की झूठन तथा सेवा करनेवाले मनुष्य-द्वारा बेजाने बीमार जानवरों से अच्छे भले-चंगे जानवरों के पास पहुँच जाते हैं, और उनको बीमार कर देते हैं। इसलिए आस-पास कहीं भी किसी प्रकार की छूत की बीमारी हो जाय तो पशुओं के मालिक को बहुत चौकन्ना होना चाहिए और बहुत होशियारी से अपने पशुओं की हिफाजत करनी चाहिए, ताकि उनमें वह बीमारी न फैल पाये।

छूत की बीमारी से ढोरों को बचाने के लिए नीचे लिखी बातें अमल में लानी चाहिए।

(१) आसपास के गांव या इलाके में जब कोई छूत की बीमारी फैलने की खबर मिले तब किसी आते-जाते आदमी द्वारा उस इलाके के पशुओं के डाक्टर या अस्पताल में खबर दे देनी चाहिए कि अमुक गांव में अमुक छूत की बीमारी की खबर मिली है। इस प्रकार अपने गांव में तथा आस-पास के गांव में भी सब जगह चर्चा कर देनी चाहिए, जिससे सब आदमी होशियार हो जांय और अपने-अपने पशुओं को बीमारी से बचाने का इन्तजाम कर लें।

(२) सम्भव हो तो पंचायत करके अपने गांव के पशु उस इलाके में न जाने दें; अपने निजी पशुओं को न उस इलाके में जाने दें और न उन इलाकों के पशु अपने पशुओं में आने दें।

(३) अपने पशुओं की तथा उनके रहने के स्थान की सफाई का

हमेशा और खास करके ऐसे समय ठीक प्रबन्ध रखना चाहिए।

(४) पशुओं का गोबर और पेशाब बराबर देखते रहना चाहिए कि वह साधारणतः जैसा होना चाहिए वैसा ही है या नहीं, तथा यह भी देखते रहना चाहिए कि वे भली-भांति जुगाली करते हैं कि नहीं, किसी के मुंह से राल तो नहीं गिरती, कोई लंगड़ाकर तो नहीं चलता, कोई सुस्त तो नहीं है इत्यादि, ताकि किसी पशु के जरा भी गड़बड़ हो तो फौरन मालूम हो जाय।

(५) हमेशा ही और खासकर ऐसे समय तो अवश्य ही ढोरों को कोई गला-सड़ा चारा-दाना कदापि नहीं खिलाना चाहिए, क्योंकि बहुत-सी छूत की बीमारियां गली-सड़ी चीजें खाने और सील, नमी या तरी में रहने से जल्दी होती हैं।

(६) ऐसे समय जबकि आस-पास बीमारी फैली हो अपने ढोरों को उन ताल-तलैयों का पानी नहीं पिलाना चाहिए जहां कि दूसरों के ढोर पानी पिया करते हैं और उस नहर या नदी का पानी भी नहीं पिलाना चाहिए जो बीमारी के इलाके में से गुजर कर आती है। अपने घर के पास के कुएं में से पानी खींचकर अपने ढोरों को पिलाना चाहिए। अक्सर ऐसे समय पानी द्वारा भी बीमारी फैल जाया करती है।

(७) बीमारी के इलाके से अपने यहां खाल और चमड़ा नहीं लाना चाहिए क्योंकि छूत की बीमारी से मरे हुए ढोरों की खाल व चमड़े से बीमारी बड़ी जल्दी फैलती है।

(८) डाक्टर से अपने ढोरों को टीका लगवा लेना चाहिए। सरकारी ढोरों के डाक्टर बिना किसी किस्म की फीस लिये इत्तिला मिलते ही फौरन टीका लगा जाते हैं। टीका लगवा देने पर फिर टीका लगे ढोर को वह बीमारी जितने दिन तक उसकी (टीके की) मियाद होती है उतने दिन तक और बाज बीमारी हमेशा के लिए नहीं होती। यदि एक बार ढोर के छूत की बीमारी लग जाय तो फिर उसका अच्छा होना मुश्किल होता है।

इसलिए अपने ढोरों को टीका तो अवश्य लगवा लेना चाहिए, इसमें कोई हर्ज की बात मालूम नहीं देती।

(९) यदि उपरोक्त सब बातों का खयाल रखते हुए भी आपके ढोरों में कोई जानवर बीमार हो जाय तो उसे फौरन अच्छे ढोरों से अलग कर देना चाहिए। अलग जगह में रखकर देखना चाहिए कि उसको क्या बीमारी हो गई है? यदि किसी छूत की बीमारी का संदेह हो तो गांव के दक्षिण या उत्तरी हिस्से में छूत की बीमारी वाले अहाते में ले जाकर उसे रखना चाहिए और उसका इलाज व सेवा-टहल करनी चाहिए ताकि गांव के या मालिक के अन्य जानवरों में वह बीमारी न फैले।

(१०) छूत की बीमारी से मरे हुए जानवर की खाल कभी नहीं उतारनी चाहिए। उसको जहां तक हो जला देना चाहिए अन्यथा ४-५ फुट गहरा गड्ढा खोदकर गाड़ देना चाहिए और इसी प्रकार उसके मरने के स्थान का गोबर, मूत्र बुहारन, उसकी जूठन इत्यादि भी कभी किसी काम में नहीं लेनी चाहिए। उसको भी जला देना या गड्ढा खोदकर गाड़ देना चाहिए। प्राय- जमींदार चमारों को खालों का ठेका दे देते हैं और वे छूत से मरे हुवे जानवरों की भी खाल निकाल लेते हैं। इस कारण गांव में छूत फैल जाती है। अक्सर यही छूत की बीमारी फैलने का कारण हो जाता है।

यदि संभव हो तो गांव के दक्षिण अन्यथा उत्तर की ओर जहां से वर्ष के ज्यादा समय में हवा गांव की तरफ न आती हो, बीमार मवेशियों के लिए गांव की पंचायत की ओर से करीब ५०+५० फीट का एक अहाता (घेर), कम से कम गांव से ५०० गज के फासले पर बनवा देना चाहिए। उसमें ५—६ जानवरों के रहने के लिए एक कोने में पश्चिम की ओर एक १४ फीट चौड़ा, ४० फीट लम्बा छप्पर होना चाहिए जो पूर्व की ओर बिलकुल खुला रहे। उसके फर्श का ढाल पूर्व की ओर होना चाहिए। छप्पर में दीवार की ओर हर एक जानवर के

लिए दो मिट्टी की नांदे, मिट्टी की ऊंची चबूतरी बनाकर उस पर लगा देनी चाहिए जिनमें से एक खाने के लिए और दूसरी पानी पीने के लिए रहे। छप्पर के आगे अर्थात् पूर्व की ओर जिधर से बिलकुल खुला है आवश्यकता हो तो बांस का टट्टा हवा रोकने को रात को या दिन को लगाया जा सकता है। उसी अहाते में दक्षिण की तरफ दो-एक कोठरियां बनाई जा सकती हैं जिसमें बीमार जानवरों के इलाज का सामान रखा जा सके और सेवा-टहल करने वाले रह सकें। अहाते का दरवाजा पूर्व की ओर होना चाहिए। चौक के बीच में दीवार से पंद्रह-पंद्रह फीट के फासले पर दो चार पेड़, हो सकें तो नीम के या फिर कोई और अच्छी छाया वाले लगाये जा सकते हैं।

गांव में जगह की ऐसी कोई कमी नहीं रहती। अहाते की दीवार कच्ची हो सकती है जो पंचायत के जरिये गांववाले अपने-आप ही बिना कुछ खर्च के बना सकते हैं। इसी प्रकार अहाते में वृक्ष भी लगाये जा सकते हैं। कूण्डी या नांद कुम्हार के घर से आ जायगी। लकड़ी या बांस छप्पर के लिए गांव की शामलात धरती के वृक्षों से या बन में से ला सकते हैं। छप्पर के लिए फूंस गांव में काफी होता है। उसको बनाने में, गांव के चमारों से, या अन्य जो आदमी उस काम को जानते हों, उनसे मदद लेनी चाहिए। साधारण मजदूर के काम में गांव के अन्य सब आदमियों को हाथ बंटाना चाहिए। मेरे खयाल से थोड़ा बहुत लोहा, बान या अन्य कोई चीज भी उपरोक्त चीजों के अलावा चाहिएगी तो वह भी गांव में ही प्राप्त हो सकती है, अन्यथा उस पर जो थोड़ा-बहुत खर्च आयेगा वह इतना कम होगा कि एक-दो आना या सेर-दो-सेर अनाज प्रति घर भी इकट्ठा किया जाय तो पूरा हो सकता है। गांव में जितने भी मजदूर पेशेवाले (Professional) आदमी रहते हैं उनका गुजारा तो गांव के काम से ही होता है। फिर गांव के इस पंचायती काम को बिना किसी उजरत के करने में उनको क्या उज्र हो सकता है? गांव

की चौपाल में तो बहुत-कुछ करना पड़ता है, परन्तु इसमें तो उसके मुकाबिले में कुछ भी नहीं करना पड़ता। गांव के आदमियों का सबसे बेशकीमती धन उनके ढोर ही हैं। उत्तरीय भारत में ढोरों को धन कहकर पुकारते ही हैं। असल में देखा जाय तो गांव वालों के लिए तो ढोर उनके आदमी से भी बेशकीमती हैं। तो क्या वे सब मिलकर अपने इतने बेशकीमती धन को बचाने के लिए इतना काम भी नहीं कर सकते? मेरे खयाल से तो केवल उनके इधर ध्यान देने की ही बात है। यदि सब लोग इस बात पर गौर करें तो सभी गांव के धन को बचाना जरूरी समझकर इस कार्य को प्रसन्नता से करेंगे।

छूत की बीमारियां बहुत हैं। सब बीमारियां हर एक जगह नहीं होतीं, इसलिए जो प्रायः भारतवर्ष में बहुतायत से होती हैं उन्हीं का हम नीचे जिक्र करेंगे।

(१) माता या रिंडरपेस्ट (Rinderpest)

(२) जहरी बुखार या एन्थ्रेक्स (Anthrax)

(३) लंगड़ा बुखार या ब्लैक क्वार्टर (Black quarter)

(४) (गला घोटू या हेमरेजिक सेप्टीसीमिया (Haemorrhagic septicimia or Alignant soar throat)

(५) तपेदिक या ट्यूबरक्लोसिस (Tuderculosis)

(६) फेफड़े का बुखार या प्लोरो निमोनिया (Contagious Pleuro pneumonia)

(७) सूखा या जोन्स डिजीज (John's disease)

(८) खुर-मुंह की बीमारी या फुट एण्ड माउथ डिजीज (Foot and mouth disease)

(९) छूत से हमल गिरना या कन्टेजियस एबोर्शन (Contagious abortion)

(१०) छूत से खूनी पेशाब आना या रेड वाटर (Red water)

(११) दूध का बुखार या मिल्क फीवर (Milk fever)

(१२) चेचक या काउ पॉक्स (Cow pox)

(१३) गज-चर्म या मेन्ज (Mange)

(१४) खुजली (Khujli)

(१५) दाद या रिंगवर्म (Ring worm)

(१६) कीड़ों के दुम्बल और मूंजे या मनिया फूटना या वारवल फ्लाईज (Warble flies)

(१७) जूं या लाइस (Lice)

इनमें से पहली सात बीमारियां ज्यादा खतरनाक बीमारियां हैं। यदि ये बीमारियां किसी जानवर को हो जांय तो वह भाग्य से ही बच सकता है। उसका इलाज अब तक जो मालूम हो सका है वह टीके के अलावा अन्य कोई कामयाब नहीं पाया गया। ऐसी बीमारी हो जाने पर उस बीमार जानवर के बचाने की तो कोशिश करनी ही चाहिये; उससे अधिक ऐसी बीमारी से अपने अच्छे जानवर को बचाने का प्रयत्न करना चाहिये। उससे बचाने के उपाय हमने ऊपर लिख दिये हैं। ये सब बड़ी सावधानी से अमल में लाने चाहिए।

छूत की बीमारियों में से ८, ९, १०, ११, १२ वीं साधारण खतरनाक बीमारियां हैं, जिनका इलाज यदि एहतियात से किया जाय तो जानवर अच्छा हो सकता है।

इनके अलावा कुछ छूत की बीमारियां ऐसी हैं जो खतरनाक नहीं हैं और उनका इलाज आसानी से हो सकता है। वे १३, १४, १५, १६ और १७ वीं हैं। इनके सबके लक्षण और इलाज का तरीका आगे दिया जाता है।

(१) माता या रिंडरपेस्ट

(इसके अनेक नाम हैं जैसे माता, चेचक घोल, भवानी, देवी सीतला, छेरा, दुख, पोकनी।)

यह बीमारी ढोरों में अचानक दिखलाई दे जाती है और बड़ी जल्दी फैलती है। इसकी छूत प्रायः खून, लार, गोबर, बिछावन, जूठा चारा और मरे ढोर की खाल खींचने से फैलती है। पहाड़ी इलाके में मैदान में रहने वालों की अपेक्षा इसका अधिक असर होता है। एक दफा ढोरों में यह बीमारी फैलने पर इसका हटाना बड़ा कठिन हो जाता है, जबतक कोई खास कार्रवाई न की जाय। साधारणतया ६०-७० फी सदी जानवर पहाड़ी इलाके में और ४०-५० फी सदी जानवर मैदानी इलाके में मर जाते हैं। एक बार किसी जानवर के यह बीमारी हो जाती है और वह उसको झेल जाता है तो फिर ऐसा देखने में आया है कि जिन्दगी भर उसके यह बीमारी नहीं होती।

पहचान—आरम्भ में ढोर को बुखार आता है जो कि १०५ डिग्री तक हो जाता है और ढोर कांपने लगता है। कमर धनुष जैसी मुड़ जाती है। भूख बन्द हो जाती है और अकसर कब्ज होने के चिन्ह भी दिखाई देते हैं। ३ या ४ रोज तक बुखार बढ़ता रहता है। इसके खास चिन्ह हैं—तीसरे-चौथे दिन कमर का धनुष जैसा मुड़ जाना, सिर का एक तरफ गिरना, आंखों से पानी गिरना और गीड़ आना, जीभ पर छोटे-छोटे छाले दिखाई देना और मुंह में बदबू आना। ज्यों-ज्यों जानवर की हालत खराब होती जाती है दस्त लगने आरम्भ हो जाते हैं जिसमें बदबूदार गोबर के साथ आंव जैसी लुआबदार चीज अकसर खून के साथ दिखाई देती है। सांस भारी हो जाती है। जानवर से उठा नहीं जाता और आठ-दस रोज में मर जाता है। यह हालत २०-२१ रोज तक भी जारी रह सकती है।

इलाज—इस बीमारी का माकूल इलाज टीका लगवाना ही है। अच्छे जानवरों के 'गोट वीरस या सीरम साइमल्टेनियस मेथड' (Goat virus or Serum simultaneous method) से रिंडपेस्ट का टीका लगवा देने से फिर जन्म भर यह बीमारी नहीं होती।

खान-पान—मुलायम चारा देना चाहिए। इसके अलावा गेहूं, बाजरे

इत्यादि का दलिया, चोकर और बहुत खराब हालत में चावल का मांड और दूध देना चाहिए। ताजा कुएं का पानी पिलाना चाहिए।

दूसरी हिदायतें—बीमार होते ही अच्छे जानवरों से बीमार जानवर को फौरन अलग कर देना चाहिए और यदि छूत के बीमार जानवरों के लिए कोई खास जगह गांव में मुकर्रर हो तो वहां, अन्यथा गांव के बाहर अपने खेत में किसी पेड़ के नीचे जानवर को रख देना चाहिए और वहां सिवाय जानवर की सेवा-टहल करने वाले अन्य आदमी या जानवर की आमद-रफ्त नहीं होनी चाहिए। यदि जानवर मर जाय तो वहीं खेत में खूब गहरा गड्ढा खोदकर उसको उसकी जूठन व गन्दी मिट्टी समेत उसे उसमें रखकर उसपर कम-से-कम दो या डेढ़ फीट मिट्टी ढककर जमीन हमवार कर देनी चाहिए। सेवा-टहल करने वाले आदमी को बिना सोड़े, साबुन या नीम के पत्ते के पानी से हाथ-पैर और कपड़े धोये अच्छे ढोरों के पास नहीं जाना चाहिए।

(२) जहरी बुखार या एन्थरेक्स

(बावला या जहरी बुखार)

यह बीमारी भी खून में बीमारी के कीटाणु प्रवेश होने से होती है। यह इतनी जल्दी फैलती है कि एक-आध जानवर मरा ही दिखाई देता है। यह बीमारी बड़ी खतरनाक होती है और इससे जानवरों को बचाना बड़ा कठिन है।

पहचान—अचानक एक-दो जानवरों का मरा पाना तथा उनके मुंह और नाक से तथा गोबर के रास्ते से काला खून निकलना। खाल का रंग नीला व काला-सा हो जाना तथा मृत शरीर का जल्दी से सड़ना आरंभ हो जाना। यदि ऐसा मिले तो समझना चाहिए कि उपरोक्त बीमारी फैल गई है। ऐसी हालत में अच्छा तो यही है कि तन्दुरुस्त जानवरों को वहां से हटा दें और यदि सम्भव न हो तो बीमार जानवर को ही अच्छे जानवरों

से अलग करदें और उसके नीचे की ४-५ अंगुल मिट्टी तथा वहां का मल-मूत्र कूड़ा करकट और जूठन इत्यादि हटाकर गहरे गड्ढे में गाड़ दें या जला दें। उस स्थान पर नई मिट्टी डालकर और चूना इत्यादि छिड़ककर या थोड़ी-सी सूखी घास जलाकर शुद्ध करलें। यदि सम्भव हो तो कुछ अर्से तक वहां तन्दुरुस्त जानवर को न बांधे। इस बीमारी में जानवर के बीमार होते ही उसकी हालत खराब होनी आरंभ हो जाती है। तेज बुखार हो जाता है। नब्ज मन्दी पड़ जाती है और खाल की चमक जाती रहती है। रंग मैला नीला-सा होना आरम्भ हो जाता है और वह चिल्लाने लगता है जैसे उसको बड़ा दर्द हो रहा हो और डर गया हो। उसकी आंखें मुरझा जाती हैं। बाज दफा गोबर काले खून से सना हुआ होता है और पेशाब भी गहरे रंग का होता है। जानवर बेहोश हो जाता है और मर जाता है। कभी-कभी यह हालत एक-दो रोज तक बनी रहती है।

खान-पान—इस बीमारी में जानवर की हालत आरम्भ से ही खतरनाक होती चली जाती है, इसलिए खाना-पीना तो जानवर का बिलकुल ही छूट जाता है। लेकिन यदि वह खा ले तो उसको मुलायम हरी सूखी घास देनी चाहिए, अन्यथा पतला दलिया व दूध पिलाने की कोशिश करनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—इस बीमारी से अच्छे जानवरों को बचाने के लिए यह बहुत जरूरी है कि जिस हिस्से (इलाके) में यह बीमारी हो गई हो वहां अपने तन्दुरुस्त जानवर न जाने देने चाहिए और जिस हिस्से (इलाके) में जानवर चरते हैं यदि वहां कोई जानवर बीमार हो जाय तो वहां भी जानवर ले जाना बन्द कर देना चाहिए। मरे हुए जानवर की खाल तो खींचनी ही नहीं चाहिए बल्कि यदि जानवर खुले मैदान में मरा हो तो उसको उसी स्थान पर जला देना चाहिए और उसके नीचे की ५-६ अंगुल मिट्टी घास-पात या उसके मुंह, गोबर के रास्ते या और कहीं से जो खून, गन्दा माद्दा

आदि निकला हो उन सबको इकट्ठा करके उसके साथ ही जला देना चाहिए। यदि जलाना बिलकुल असम्भव हो तो बहुत गहरा गड्ढा खोदकर उसको गाड़ देना चाहिए और दो-तीन फुट मिट्टी उसके ऊपर डालकर इकसार कर देना चाहिए। जानवर को, जहां वह मरा है वहां से उसको फूँकने या गाड़ने की जगह तक लाने में रास्ते में उसका खून आदि न गिरे इसका पूरा ध्यान रखना चाहिए। मरे हुए स्थान से जानवर को हटाने के पहिले ही उसके मुंह व नाक में और पैखाने के रास्ते पर घास या कपड़े इत्यादि का डाट लगाकर उसके ऊपर कपड़ा या पुरानी बोरी बांधकर या उस हिस्से पर गीली मिट्टी लगाकर ढक या बांध देना चाहिए ताकि रास्ते में खून या गंदा माद्दा गिरने का अन्देशा न रहे।

(३) लंगड़ा बुखार या ब्लैक क्वार्टर

(इसके अनेक नाम हैं जैसे लंगड़ी, चेचड़ा, गोली चिरचिरा, फजसूजा)

यह बीमारी भी खून में कीटाणुओं द्वारा विकार पैदा हो जाने से ही होती है।

पहचान—इस बीमारी से पीड़ित पशु अन्य जानवरों से अलग खड़ा दिखलाई दिया करता है। चलाने से लंगड़ा मालूम देता है; जैसे कोई लकवा मार गया हो और थोड़ी देर बाद गिर जाता है। सिर एक तरफ गिरा देता है, कान लटक जाते हैं। जहां से लंगड़ाता है उसके आस-पास सूजन दिखाई देती है। इस सूजन को जब हाथ से दबाया जाता है तो कर-कर की आवाज मालूम देती है और ऐसा मालूम देता है कि इसमें हवा भरी है। तेज बुखार हो जाता है। जल्दी-जल्दी सांस लेता है और दांत पीसता है। अक्सर २४ घण्टे के अन्दर जानवर मर जाता है।

इलाज—इसका माकूल इलाज तो ढोरों के डाक्टर को बुलाकर टीका (Vaccine) लगवाना है। परन्तु यदि यह न हो तो नीम का तेल या और कोई कीड़ों (कीटाणुओं) को नष्ट करने वाली तेज दवा सूजन-वाली जगह

में खाल चीरकर पहुँचानी चाहिए। यदि वक्त पर यह इलाज किया जाय तो सम्भव है कि जानवर बच जाय।

खान-पान—अन्य बीमारी के बीमार जानवरों की तरह इसको भी मुलायम चारा व दूध-दलिया वगैरा तथा कुएं का ताजा पानी पीने को देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—बीमार होते ही जानवर को अन्य जानवरों से अलग करदें और उसको जूठन, गोबर, पेशाब, बिछावन व बैठने के स्थान की मिट्टी इत्यादि को जला दिया करें या गाड़ दिया करें। उसकी खाल नहीं खींचनी चाहिए।

(४) गलाघोंटू या हेमरेजिक सेप्टीसीमिया

(इसके अनेक नाम हैं जैसे गलघोंटू, घुटरवा, घुड़खा, घटरीन घुरवा)

यह एक प्रकार की खून की बीमारी है जो कीटाणुओं-द्वारा बहुत ही जल्दी फैलती है। प्रायः तगड़े और नौजवान जानवरों को अधिक सताती है। यह तराई या सीलवाली जमीन में रहनेवाले जानवरों को तथा वर्षा-ऋतु में या उसके बाद अक्सर होती है और जो जानवर सड़ी-गली घास व तराई में पैदा हुई पनियल घास खाते हैं उनमें जल्दी फैलती है।

पहचान—यह बीमारी इतनी जल्दी फैलती है कि जहां यह बीमारी फैल जाय वहां एक-दो जानवर मरा हुआ मिले तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। इस बीमारी में बहुत तेज बुखार होता है जो कभी-कभी तो १०७ से १०६ डिगरी तक पहुँच जाता है। जानवर बिलकुल सुस्त हो जाता है। गले पर गर्म, सख्त तथा बड़ी दुखदायी सूजन दिखाई पड़ती है। उसको उंगलियों से दबाया जाय तब भी नहीं दबती। बाज दफा ऐसा प्रतीत होता है कि जानवर के गले में कोई सख्त चीज अटक गई है। नाक से गंदा माद्दा निकलता है। जानवर रुक-रुककर सांस लेना आरम्भ कर देता है। ऐसा प्रतीत होता है मानों जानवर का सांस घुट रहा हो।

जानवर गिर जाता है और इतना कमजोर हो जाता है कि उठ नहीं सकता। एक-दो रोज में मर जाता है। अखीर समय में दस्त भी आरंभ हो जाते हैं। इस बीमारी और रिंडरपेस्ट, एन्थरेक्स और ब्लेक क्वार्टर में अन्तर है। रिंडरपेस्ट में मुंह में छाले होते हैं और एन्थरेक्स में खून का रंग बदल जाता है। इसमें खून का रंग नहीं बदलता और गले पर सूजन होती है, जो उपरोक्त दोनों बिमारियों में नहीं होती। इसी प्रकार ब्लेक क्वार्टर में जो सूजन होती है वह दबाने से कर-कर बोलती है और दब भी जाती है परन्तु इसकी सूजन न तो आवाज करती है और न दबती है।

इलाज—यदि यह सन्देह हो कि किसी जानवर को यह बीमारी हो गई हो तो फौरन अपने नजदीक के सरकारी अस्पताल से ढोरों के डाक्टर को बुलाकर जानवर के टीका लगवाना चाहिए। इसके अलावा इस बीमारी का और कोई इलाज नहीं है।

खान-पान—अन्य बीमार जानवर की तरह होना चाहिए।

अन्य हिदायतें—आसपास इस बीमारी के फैलने की खबर मिलते ही फौरन सब जानवरों के टीका लगवा देना चाहिए। इस बीमारी से मरे जानवर की खाल नहीं खींचनी चाहिए और जहां तक हो उसे जला देना चाहिए और सम्भव न हो तो बहुत गहरा गाड़ देना चाहिए। यह बीमारी ढोरों की खाल खींचने से छूत द्वारा बहुत फैलती है।

यदि कोई जानवर इस बीमारी से अच्छा हो गया हो तो उसे १०-१२ दिन अच्छा होने के बाद तक अलग ही रखना चाहिए इसके बाद अच्छे ढोरों में मिलाना चाहिए।

(५) तपेदिक या ट्यूबरक्लोसिस

यह बीमारी भारतवर्ष के मैदानी हिस्से में बहुत कम मिलती है। अन्य देशों के मुकाबले में भारतवर्ष में बहुत कम होती है। पहाड़ी हिस्सों में या अन्य स्थानों में जहां जानवरों को बंद जगहों में रखते हैं यह बीमारी पाई जाती है।

पहचान—ऊपरी देख-भाल से जब तक जानवर बहुत अधिक इस बीमारी का शिकार न हो गया हो तबतक नहीं मालूम हो सकती। ज्यादा खराब हालत में प्रायः जो साधारण बीमारी के चिन्ह होते हैं, वे देख पड़ते हैं और उसके खांसी तथा रुक-रुककर सांस लेने की शिकायत होती है। इस बीमारी की परीक्षा ट्यूबरक्लोलीन टेस्ट (Tuberculin test) द्वारा वैटरिनरी डाक्टर से कराई जा सकती है। यही एक मानी हुई परीक्षा है जिससे इस बीमारी का निश्चित रूप से पता लगाया जा सकता है।

इलाज—इस बीमारी का कोई माकूल इलाज अबतक नहीं मालूम हुआ है। इस बीमारी से बीमार जानवर को तन्दुरुस्त जानवर से अलग रखना चाहिए, ताकि दूसरे जानवरों में इसकी छूत न फैले।

खान-पान—शीघ्र पचनेवाली खुराक थोड़ी-थोड़ी दिन में तीन-चार बार देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—बीमार जानवर को अन्य जानवरों से अलग रखें। उसकी जूठन, गोबर, पेशाब; बिछावन, कूड़ा-कर्कट जला देना चाहिए या हटाकर बहुत गहरा गाड़ देना चाहिए। मरने पर खाल नहीं खींचनी चाहिए बल्कि लाश को ज्यों का-त्यों गाड़ देना चाहिए।

(६) फेफड़ का बुखार या प्लोरो-निमोनिया

(इसे फेफड़े का मर्ज या छूतदार निमोनिया भी कहते हैं)

यह बीमारी बीमार जानवर को छूने या उसके जख्म, फोड़ा-फुंसी, इत्यादि के गन्दे माद्दे के लगने से तथा बीमार जानवर के मुंह के सामने सांस लेने से फैलती है। इस बीमारी से फेफड़ों पर असर होता है।

पहचान—भूख बन्द हो जाना, दूध घट जाना, बराबर कायम रहने वाला हलका बुखार हो जाना, सूखी खांसी, खास करके गौशाला के बाहर पानी पीने का समय होना, मवाद की तरह नाक से सिनक आना इसके लक्षण हैं। एक दो सप्ताह के बाद सांस भारी हो जाता है और जानवर टसके के माफिक साँस लेता है और धीरे-धीरे अधिक बीमार हो जाता है। बैठ जाता

है, फिर उठ नहीं सकता तथा पैर फैला देता है। पैर पीटने लगता है, जैसे कि बड़ा भारी दर्द हो, और मर जाता है।

इलाज—बुखार के लिए जो साधारण दवाई दी जाती है वह देनी चाहिए। नीम, सफेदा, महुआ इत्यादि के पत्ते या तारपीन का तेल डालकर पानी में उबालिए और उसकी भाप में सांस लेने दीजिए ताकि वह सांस के जरिये फेफड़ों तक पहुँचकर फेफड़ों को तन्दुरुस्त करने में मदद करे। एक हिस्सा तारपीन का तेल १० हिस्से तिल के तेल में मिलाकर छाती पर मालिस करनी चाहिए।

खान-पान—मुलायम और दस्तावर खाने-पीने की चीजें दीजिए जैसे चाय, दलिया चोकर व दूध, पीने को गरम गुनगुना पानी।

अन्य हिदायतें—बीमार जानवर को फौरन अलग कर दीजिये। इस बीमारी वाले जानवर का दूध जहांतक हो पीना नहीं चाहिए। लाचारी हालत में उसको आध घंटे तक खूब उबालकर या उसका घी इस्तेमाल करना चाहिए। जानवर पर झूल डाले रखिये तथा उसको हवा के झोंके और सर्दी से बचाइए।

(७) जोन्स डिज़ीज़

यह बीमारी भी तपेदिक जैसी ही है। इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है। धीरे-धीरे जानवर कई महीनों में दुःख पाकर मरता है। इस बीमारी में प्रायः दस्तों की शिकायत रहती है। कमर ऊपर को मुड़ (Humped) जाती है। सुस्ती छा जाती है। सिर और कान गिरे हुए दिखाई देते हैं। करीब-करीब तपेदिक के सभी चिन्ह इस बीमारी में होते हैं।

इलाज—यह बीमारी होते ही जानवर को दूसरों से अलग कर देना चाहिए और उसकी देख-भाल दूसरे बीमार जानवरों की भांति करनी चाहिए।

खान-पान तथा अन्य हिदायतें—अन्य बीमार जानवरों के माफिक।

नोट—छूत के उपरोक्त सात भयंकर रोगों में यदि नीचे लिखी दवाइयां

दी जांय तो मेरे एक मित्र का विचार है कि बहुत हद तक आराम हो सकता है।—

(१) आक, मदार की जड़ की छाल ऽ≈
कालीं मिर्च ऽ-
घी ऽ।-

छाल व मिर्चों को खूब बारीक पीसकर घी में घोलकर नाल से दें। यह दवा दिन में तीन बार देनी चाहिए।

(२) रींठे के ऊपर के छिलके, जो कपड़ा धोने के काम आते हैं, ऽ-
घी ऽ।-

छिलकों को बारीक पीसकर घी में घोलकर नाल से दिन में तीन बार दें।

(३) निर्वसी काली ऽ≋
घी ऽ।-

निर्वसी को बरीक पीसकर घी में मिला लें और दिन में तीन बार नाल से दें।

(८) खुर-मुंह की बीमारी या फुट एण्ड माउथ डिज़ीज़
(इसके अनेक नाम हैं, जैसे खुरिया, खसीट', खुरका, खुरा, रोड़ा)

यह बीमारी बड़ी भयानक बीमारियों में से है, क्योंकि इसकी छूत हवा द्वारा भी फैल जाती है। और एक बार ढोरों में फैल जाने पर इसका निकलना मुश्किल हो जाता है। इस बीमारी में अगर लापरवाही होती है तो जानवर के मर जाने का भी डर रहता है। होशियारी से इलाज व सेवा-टहल करने से बच तो जाता है परन्तु बहुत कमजोर हो जाता है। दूध देने वाले जानवर का दूध कम हो जाता है और काम करने वाले जानवर शक्ति-हीन हो जाते हैं। पहले जैसी ताकत प्राप्त करने में काफी समय लगता है।

पहचान—जानवर के मुंह से लार और झाग आता दिखाई देना, जानवर के पिछले पैरों का कांपना और जानवर का खुरों के बीच के हिस्से को चाटना, चलने के साथ लंगड़ाना, भली-भांति खुराक का न खा सकना

और जबड़ों के पास छालों का हो जाना इसकी पहचान है। इस बीमारी में बुखार भी हो जाता है। ज्यों-ज्यों बीमारी बढ़ती जाती है जबड़ों के छाले तमाम मुंह और जबान पर फैल जाते हैं। इसी प्रकार खुरों के बीच में जख्म हो जाते हैं और शीघ्र ही यथोचित इलाज न किया जाय तो उनमें कीड़े पड़ जाते हैं। ज्यादा बीमारी बढ़ने पर जानवर का चलना फिरना तो दूर रहा, वह खड़ा भी नहीं रह सकता और उसका खाना-पीना बिलकुल बन्द हो जाता है। बाज दफा आदमी इस बीमारी में और रिंडरपेस्ट के पहचानने में गड़बड़ा जाता है। रिंडरपेस्ट में केवल मुंह में छाले होते हैं और दस्त आरम्भ हो जाते हैं। किंतु इस बीमारी में ऐसा नहीं होता। इसमें सिर्फ मुंह में और खुरों में छाले होते हैं। इसके छाले हमेशा पीली-सी झिल्ली से ढके रहते हैं। यह एक खास पहचान है। अन्य बीमारियों के छाले आमतौर से लाल होते हैं।

इलाज—जहां एक ही जगह अधिक जानवर रहते हों, उनके दरवाजे पर या गांव में से ढोर आने-जाने के जो खास रास्ते हैं उनपर पैर-डुबकी या फुटबाथ (Foot bath) बनवा देने चाहिए, ताकि जो जानवर वहां से गुजरें उनके खुरों के बीच में दवा भली प्रकार प्रवेश कर जाय। वहां पैर-डुबकी बनवाना सम्भव न हो तो बीमार पशु को जहां कहीं कीचड़ ज्यादा हो उसमें से गुजारने से भी ठीक रहता है। परन्तु पैर-डुबकी के बदले यह चीज अपनाई नहीं जा सकती।

पैर-डुबकी (Foot bath) बनवाने की विधि—जहां से जानवर निकलते हों उस दरवाजे पर या रास्ते पर उसकी पूरी चौड़ाई का ८ या १० इंच गहरा पक्का चौबच्चा (स्थान) इतना लम्बा बनवा दें कि पशु उसे कूद कर पार न कर सके बल्कि उसमें पैर रखकर दूसरी तरफ जा सके। यह जितना लम्बा होगा उतना ही अच्छा होगा। कम-से-कम १०-१२ फीट तो होनी ही चाहिए। इसमें फिनाइल या कीड़े मारने की कोई अन्य दवा पानी में मिलाकर भरदें। यह पैर-डुबकी हर समय बनी रहनी चाहिए। जब बीमारी की कोई आशंका न हो तो इसमें रेत-मिट्टी भरकर इकसार कर दें और जब बीमारी

फैलने की आशंका हो जाय तो उसे साफ करके इसमें पानी भरकर उसमें फिनाइल या अन्य कोई कीड़े मारने की दवा घोल देनी चाहिए।

पैर-डुबकी के अलावा कीकर की छाल वगैरा के क्वाथ से दोनों समय साँझ-सवेरे बीमार ढोरों के खुरों और मुंह को साधारण पिचकारी से या स्प्रे पम्प (spray pump) से धोना चाहिए। अगर किसी के पास लोहे या पीतल की पिचकारी न हो तो थोथे बांस की पिचकारी बनवाकर या कपड़े डुबोकर उससे धो सकते हैं।

कीकर की छाल का क्वाथ बनाने की विधिः—

कीकर या बबूल की छाल	४ छटांक
जवासे का हरा पौधा	१ छटांक
फिटकरी	१। छटांक
हीरा कसीस	॥ छटांक
कत्था	॥ छटांक

इन सबको किसी लोहे के बर्तन में करीब ४ सेर पानी में उबाला जाय और जब पौना पानी रह जाय तो उसको छानकर जरा-सा कपड़े धोने का सोड़ा मिला देने से उपरोक्त क्वाथ बन जाता है। यदि उपरोक्त चीजों में से कोई चीज न मिले तो जो-जो चीजें मिलें उन्हीं को पानी में उबालकर जरा-सा सोड़ा डालकर काम में लेने से भी लाभ होता है।

मुंह और पैर में अगर जख्म अधिक हो गये हों, तो शहद या शीरा मिले तो अच्छा है अन्यथा, तिल या नारियल के तेल में या घी में जरा-सी फिटकरी, कत्था, फुलाया हुआ सुहागा और जरा सोड़ा मिलाकर लेप कर देना चाहिए। किन्तु लेप करने से पहले उपरोक्त क्वाथ से जख्मों को भली प्रकार धो देना चाहिए ताकि जख्मों के ऊपर का पीला हिस्सा दूर हो जाय और जख्म लाल और साफ दिखाई दें। खुरों के बीच में प्रायः गोबर या मिट्टी इत्यादि आ जाने से दवा का असर नहीं होता, इसलिए दवा लगाने के पहले जख्मों को उपरोक्त क्वाथ से भली प्रकार बांधकर ढक देना चाहिए कि

मिट्टी-गोबर इत्यादि जख्म तक न पहुँच सके। इस प्रकार दोनों समय दवा लगानी चाहिए। खुर में चाहे उपरोक्त दवा यानी सुहागा, कत्था, फिटकरी, सोड़ा, तिल के तेल में मिलाकर लगाइए या जख्म अच्छा करने के लिए जो मल्हम या अन्य दवाई लगाई जाती है, वह लगाइए। यदि कीड़े पड़ गये हों तो कीड़े मारने की दवा से कीड़े मारकर फिर जख्म अच्छा करने की दवा लगाकर जख्म अच्छा कीजिए।

खान-पान—मुलायम बारीक चारा देना चाहिए। यदि मुमकिन हो तो हरा चारा दें। गर्मी पैदा करने वाली व सख्त चीजें, जो आसानी से न चबाई जा सकें न देनी चाहिए। कुँए का ताजा पानी पिलाना चाहिए। जिन जानवरों की जबान ज्यादा खराब हो गई है उनको मुलायम हरा चारा जैसे बरसीम, कच्ची जई या अन्य कोई चीज देनी चाहिए। दूध, चावल इत्यादि का मांड या कांजी, व पतला दलिया खिलाना चाहिए। अगर वे ये भी न खा सकें तो उन्हें नाल द्वारा पिला देना चाहिए। यह खयाल रखना चाहिए कि खाने-पीने की कमी से जहां तक हो जानवर कमजोर न होने पावें।

अन्य-हिदायतें—कोई भी जानवर इस रोग से बीमार हो जाय तो उसे फौरन दूसरे जानवरों से अलग कर देना चाहिए। उसे छूत की बीमारियों के स्थान पर या गांव से बाहर खेत में पेड़ के नीचे रखना चाहिए। यह बीमारी हवा से भी फैलती है इसलिए जहां तक हो गांव के या अच्छे जानवरों के दक्षिण या उत्तर में या जिधर की हवा हो उसके दूसरी ओर रखें ताकि अच्छे जानवरों को उस ओर की हवा न लगे। बीमारी आरंभ होने के १५ या २० रोज बाद तक अगर ढोरों में बीमारी न रोकी जा सके अर्थात् अच्छे ढोरों में बीमारी ज्यादा फैलती जाय तो इसके माने यह है कि बीमारी रोकना नामुमकिन है। ऐसी हालत में इस बीमारी से बीमार और अच्छे सब ढोरों को आपस में मिला देना ही अच्छा होता है। इससे बीमारी बहुत दिन तक जारी नहीं रहती। बल्कि जिन ढोरों को बीमार होना है वह बीमार होकर जल्दी से निबट जाते हैं। इस बीमारी की मियाद २१ दिन की है तो

है। जानवर को अच्छा हो जाने पर भी थोड़े दिन तक अच्छे जानवरों से अलग रखना चाहिए।

(९) छूत से हमल गिरना या कन्टेजियस एबोर्शन

यह छूत का गर्भ-पात साधारण गर्भ-पात से बिलकुल अलग बीमारी है। साधारण गर्भ-पात तो तेज दौड़ने से, छलांग लगाने से, लात इत्यादि बेढंगे तरीकों की हरकतों और व्यवहारों से या किसी विशेष गर्म चीजके खा लेनेसे होता है, परन्तु छूत से गर्भ-पात इस बीमारी के कीटाणु के किसी तरह से गर्भाशय या बच्चेदानी में प्रवेश हो जाने से होता है। साधारण गर्भ-पात एक बार होकर रुक जाता है परन्तु छूत से गर्भ-पात की बीमारी एक बार होने पर जबतक इसका पूरा इलाज न हो जाय बराबर होता रहता है और अगर एहतियात न रखा जाय तो दूसरे ढोरों में भी फैल जाता है।

पहचान—गर्भाशय तथा पेशाब की जगह सूजन का होना और समय के पहले ही बच्चे का गिर जाना, गर्भ-पात के बाद जेल का भली प्रकार न गिरना, पेशाब का बदबूदार होना, गंदा माद्दा निकलना और जानवर का सुस्त दिखाई देना इसके लक्षण हैं। गर्भ-पात की बीमारी और ढोरों में भी दिखाई दे तो अच्छा तो यही है कि ढोरों के डाक्टर से इसकी परीक्षा करा लें। यदि छूत के गर्भ-पात की बीमारी हो तो उसका यथोचित् इलाज करायें।

इलाज—इस बीमारी का सबसे ज्यादा कामयाब इलाज एन्टीकन्टेजियस एबोर्शन वेक्सीन (Anti-contagious Abortion Vaccine) का है। अगर इस इंजेक्शन (सुई-द्वारा खाल में दवाई पहुँचाकर इलाज) कराने से भी जानवर अच्छा नहीं होता तो उसके अच्छा होने की ज्यादा उम्मीद नहीं समझनी चाहिए। गर्भ-पात होने पर अगर जानवर जेल को दो-तीन दिन तक न गिरावे तो मीठे तिल के तेल में थोड़ा नीम का तेल या और कोई कीड़े मारने वाली दवा मिलाकर हाथ में कोहनी तक चुपड़ कर उसकी बच्चादानी में हाथ डालकर आहिस्ता-आहिस्ता छोटे-छोटे टुकड़े करके निकाल देनी चाहिए। हाथ से जेल निकालने में यह ख्याल रखना चाहिए कि यदि जेल का कोई हिस्सा गर्भाशय में चिपका हुआ हो तो जोर से नहीं खींचना चाहिए और

नाखून इत्यादि से किसी प्रकार से गर्भाशय में खुरच न लगने पावे। इस प्रकार एक या दो या इससे अधिक बार हाथ डालकर धीरे-धीरे जेल निकालनी चाहिए। जिस रोज हाथ से जेल निकालने का काम आरम्भ किया जाय उस रोज तो दो-तीन बार गाय के गर्भाशय को डूश द्वारा धोना चाहिए और बाद में रोज दो दफे दस-बारह रोज तक; जबतक जानवर का अन्दर का हिस्सा बिलकुल साफ न हो जाय दोनों वक्त डूश देकर धोना चाहिए। डूश करने के बाद जो गंदगी व गंदा पानी, खून इत्यादि निकले उसे गाड़ या जला देना चाहिए ताकि बीमारी की छूत दूसरे ढोरों को न लगे। डूश करने की तरकीब अन्यत्र देखिए।

खान-पान—साधारण तन्दुरुस्त जानवरों को जो खूराक दी जाती है वही गाय को देनी चाहिए। केवल यह खयाल रखना चाहिए कि इस अर्से में कई ज्यादा गर्म तासीर वाली और कब्ज करने वाली चीज न दी जाय और गाय खाने-पीने की वजह से कमजोर न होने पावे।

अन्य हिदायतें—यदि आस-पास या अपने ढोरों में इस बीमारी के होने का खयाल हो तो अपने यहां की सब गाय-भैंसों को और ८ महिने से ऊपर की सभी बछिआयों व बछड़ियों को एन्टी कन्टेजियश एबोर्शन (Anti-contagious Abortion) का टीका लगवा देना चाहिए और जिस जानवर को यह बीमारी होने का सन्देह हो; उस जानवर को फौरन अच्छे जानवरों से अलग, जहां छूत के बीमार जानवर रखे जाते हैं; वहां या अन्य किसी जगह रखना चाहिए और उनके रहने के स्थान की मिट्टी पेशाब गन्दा माड़ा आदि हटाकर फर्श को बिलकुल साफ करके उस पर चूना इत्यादि भली-भांति बिखेर देना चाहिए। गन्दी मिट्टी और वहां की जो गंदगी हो इकट्ठी करके जला देनी चाहिए या बहुत गहरे गड्ढे में गाड़ देना चाहिए। जिस ढोर को छूत से गर्भ-पात की बीमारी होने का शक हो उसको जहां तक हो, जबतक वह अच्छा न हो जाय, लाचार को ३-४ माह तक तो गाभिन हरगिज नहीं कराना चाहिए। जब गाभिन करावे तब गाभिन करने के बाद सांड के मूतने की जगह को भली प्रकार नीम के पानी से धोकर नीम का तेल या एक हिस्सा

कपूर और बीस हिस्से तिल का तेल या घी खूब अच्छी तरह मिलाकर चुपड़ देना चाहिए। ऐसी गाय को जिस सांड से गाभिन करावें उस सांड से कुछ दिनों तक अच्छी गाय गाभिन न करावें।

(१०) छूत से खूनी पेशाब या रेड वाटर

यह बीमारी भी कीटाणुओं-द्वारा खून में विकार पैदा होने से होती है। इसी बीमारी की छूत थनों द्वारा और उस मच्छर के काटने से, जो बीमार जानवर को काटकर अच्छे जानवर को काटता है, होती है। इस प्रकार एक जानवर से दूसरे जानवर में फैलती है। पहचान के लिए ख्याल रखना चाहिए कि गर्मी की वजह से अक्सर जानवरों के पेशाब में खून आने लगता है, इससे बीमारी का कोई सम्बन्ध नहीं है।

पहचान—जानवर को तेज बुखार हो जाता है। जल्दी-जल्दी सांस लेने लगता है। नब्ज कमजोर हो जाती है, आंखें तथा जीभ इत्यादि पीली पड़ जाती हैं जैसे पीलिया के रोगी की होती हैं। ऐसा भी देखने में आया है कि एक-दो रोज के बाद जानवर का बुखार उतर जाता है और शरीर ठण्डा हो जाता है। पेशाब के जरिये खून आता है, कब्ज हो जाता है। इसकी निश्चित पहचान खून की डाक्टरी परीक्षा कराने से होती है।

इलाज—इस बीमारी का इलाज नजदीक के ढोरों के डाक्टर को बुलाकर उससे करवाना चाहिए। आमतौर से इस बीमारी में एक नीली दवा का जिसे ट्रिपन बिल्यु (Tripen Blue) कहते हैं, इन्जेक्शन दिया जाता है।

खान-पान—अन्य दूसरे बीमार जानवरों की तरह।

अन्य हिदायतें—अन्य छूत की बीमारियों की तरह जानवर को बीमार होते ही फौरन दूसरे जानवरों से अलग करना चाहिए और अन्य हिदायतें भी उसके माफिक ही समझनी चाहिए।

(११) दूध का बुखार या मिल्क फीवर

यह बीमारी अधिक दूध देने वाली, नौजवान और तगड़ी गायों को तीसरे या चौथे बियात के बाद होती है। बुड्ढे या पहले बियात के जानवरों

में नहीं होती।

पहचान—यह बीमारी ब्याने के २४ घंटे बाद या एक-दो दिन बाद दिखाई पड़ती है। बहुत से जानवरों में पहले-पहल दूध दुहे जाने पर दिखलाई देती है। जानवरों को दीखना कम हो जाता है। आंखे चढ़ जाती है। मुंह मे राल गिरने लगती है। जानवर सुस्त रहता है और खड़ा नहीं रह सकता, पशु एक करवट पड़ा रहता है। पैर पेट के नीचे सिकोड़ लेता हैं और सिर एक ओर को गर्दन के सहारे मोड़ लेता है। इसका खास चिन्ह यह है कि यदि सिर को ठीक हालत में करते हैं तो वहफिर उसी हालत में करलेता है। बुखार हो जाता है। पेशाब बन्द हो जाता है। दूध का स्रोत कम हो जाता है। जानवर सिर पटकता है और घबरा जाता है। थन सूज जाते हैं। यदि अच्छी तरह इलाज किया जाय तो कुछ घण्टों में आराम हो जाता है अन्यथा जानवर थोड़ी देर में मर जाता है।

इलाज—पहले इस बीमारी में बहुत से जानवर मर जाते थे: परन्तु अब इसका माकूल इलाज मालूम हो गया है और अब ९० फी सदी जानवर इस बीमारी से बचाये जा सकते हैं। इस बीमारी वाले जानवर के थनों में से सब दूध निकाल लो ताकि उनमें जरा-सा भी दूध न रहे। अब एक बाइसिकल के वालट्यूब को साइकिल की पिचकारी की नली में लगाकर साफ करलो और नीम के तेल या कपूर मिले हुए तिल के तेल में खूब अच्छी तरह डाल कर हिला-डुला दो ताकि खूब अच्छी तरह उसमें तेल लग जाय। फिर धीरे-धीरे उस नली को थन के सूराख में अन्दर चढ़ाकर भली प्रकार फिट करदो। एक आदमी, जिस थन में वालट्यूब वाली नली लगाई है, उसे एक हाथ से दबाकर थाम ले और दूसरा आदमी धीरे-धीरे जैसे बाईसिकिल में हवा भरते हैं इस तरह हवा भरनी शुरू करदे। पहला आदमी अपने बायें हाथ से तमाम बाक (udder) पर धीरे-धीरे मालिश करे ताकि हवा तमाम बाक में जज्ब हो जाय। इस प्रकार थन में हवा भरने के बाद थन भली प्रकार कपड़े की चौड़ी पट्टी या फीते से बांध देने चाहिए

ताकि थन से हवा बाहर न निकले और असर कर सके। आवश्यकता हो तो थोड़ा कपूर मिले या सादे तेल की मालिस की जा सकती है। थोड़ी देर बाद हो सके तो पशु को करवट दिला देनी चाहिए। ३ या चार घंटे में पशु को खड़ा हो जाना चाहिए। जब गाय खड़ी हो जाय तो फिर हवा भरनी चाहिए और १२ घंटे तक दूध नहीं निकालना चाहिए। जानवर को बांधना नहीं चाहिए।

खान-पान— इस बीमारी में खाने-पीने को बहुत कम देना चाहिए और जो कुछ दे वह शीघ्र पचने वाली चीज होनी चाहिए। जैसे अलसी या चोकड़ की चाय, दूध दलिया इत्यादि और घनी बीमारी की अवस्था में जहां तक हो पानी नहीं पिलाना चाहिए जानवर के अच्छा होने पर शीघ्र पचने वाला चारा-दाना देना चाहिए और थोड़ा-थोड़ा करके कुएं का ताजा पानी पिलाना चाहिए।

अन्य हिदायतें— यह बीमारी आमतौर से ज्यादा दूध देने वाले जानवरों को ही होती है। बीमारी होते ही यदि जानवर के इलाज का तुरंत प्रबन्ध नहीं किया जाता तो जानवर के मर जाने का अन्देशा रहता है। जानवर को अधिक-से-अधिक सफाई की हालत में रखना चाहिए और थनों को बराबर कपूर या सुहागा मिले हुए तेल से चुपड़ते रहना चाहिए ताकि गाय को इस बीमारी से अच्छी हो जाने के बाद, अक्सर थन सूजने की बीमारी हो जाया करती है, वह न होने पावे। अच्छा तो यह है कि यदि आपके गांव में या आस-पास कहीं रस-कपूर मिल जाय तो एक उड़द के बराबर डली हरे केले को चीरकर उसके बीच में रखकर गाय को खिला दीजिए ताकि गाय थनों की बीमारी से बच सके। ज्यादा दूध देने वाली गाय का दूध ब्याने के बाद पहली बार एक दम से सब नहीं निकालना चाहिए, बल्कि थोड़ा-थोड़ा करके दो-तीन बार में निकालना चाहिए। ऐसा करने से इस बीमारी के होने का खतरा कम हो जाता है।

हवा भरने के समय यह खयाल रखना चाहिए कि हवा के साथ रेत-

मिट्टी या अन्य किसी प्रकार की कोई चीज या गंदगी पम्प-द्वारा गाय के थनों में न जाय, नहीं तो वह हानि करेगी।

(१२) चेचक या काउ पोक्स

यह बीमारी उस आदमी-द्वारा फैलती है जिस आदमी के हाल में ही टीका लगा हो या उस दूध दुहने वाले से, जिसने इस बीमारी से पीड़ित ढोर का दूध निकाला हो। बिना हाथ धोये दूसरे ढोर के दुहने से उनमें बीमारी फैलती है या बीमार ढोर का फफोला फूट जाने पर फफोले का जहर तन्दुरुस्त ढोर के किसी स्थान पर या फोड़ा-फुन्सी आदि में लगने से या अन्य किसी नाजुक जगह पर लगने से भी फैलती है।

पहचान—बाक पर, थनों पर या बच्चों के आंख, नाक या नाक के पास आरंभ में छोटे-छोटे लाल-लाल से रंग की फुन्सियां-सी दिखाई देती हैं जिनमें सफेद रस-सा भरा हुआ होता है। ये दस दिन तक बढ़ती चली जाती हैं और बाद में सूखने लगती हैं और करीब-करीब बीस रोज तक सूख-कर खत्म हो जाती हैं। इससे जानवर को आरम्भ में तो थोड़ी तकलीफ होती है परन्तु बाद में कोई खास तकलीफ नहीं होती और न दूध देने वाले जानवरों का विशेष दूध ही घटता है।

खान-पान—शीघ्र पचने वाला और जहांतक हो मुलायम चारा-दाना देना चाहिए और यह खयाल रखना चाहिए कि जानवर किसी प्रकार बीमारी के दिनों में कमजोर न होने पावे।

अन्य हिदायतें—इस बीमारी से बीमार जानवर को अन्य तन्दुरुस्त जानवरों से अलग कर देना ही अच्छा होता है। अगर किसी वजह से अलग न कर सकें तो इस बात का खास खयाल रखना चाहिए कि इस बीमारी की छूत दूसरे जानवरों को न लगे। दूध दुहने वाले आदमी को खास करके नीम के पानी या साबुन और सोडा इत्यादि से भली प्रकार हाथ धोये बिना अच्छे जानवर को दुहना या उसको हाथ लगाना या उसकी सानी-कुट्टी करना ठीक नहीं है। किसी भी जानवर या मनुष्य के काम में आने वाले बर्तन या

चीज को हाथ नहीं लगाना चाहिए। जिस बर्तन में दूध दुहा गया उस बर्तन को भी बिना सोडा या राख इत्यादि से धोये काम में नहीं लाना चाहिए। इस बीमारी से पीड़ित जानवर के दूध में दूध दुहने वाले का हाथ या फफोले या फुन्सियों का रस नहीं लगना चाहिए। ऐसे जानवरों के दूध को साधारण खाने-पीने के काम में जहां तक हो सके न लें। खोया बनाने या गर्म करके दही जमाकर घी निकालने के काम में लिया जा सकता है। और किसी लाचारी हालत में दूध पीने इत्यादि के काम में लिया ही जाय तो उसको कम-से-कम आध घन्टे उबाले बिना काम में न लें।

(१३) गजचर्म या मेन्ज

यह छूत से होने वाली बीमारी है। यह प्रायः कमजोर, गन्दे, तंग जगह में रहने वाले जानवरों को हुआ करती है। यह बीमार जानवर के स्थान पर या उसके साथ रहने वाले जानवर को या बीमार जानवर से छू जाने वाले जानवरों को हो जाया करती है।

पहचान—जानवर के बीमारी के असर वाले हिस्से में बहुत जोर की खाज चलती है। वह उस हिस्से को खुजलाता रहता है, यहां तक कि बाज दफा वहां जख्म हो जाता है। बाल गिर जाते हैं, खाल मोटी हो जाती है और उसमें सलवट पड़ जाती है। आमतौर से आरंभ में यह बीमारी थुई और पूंछ पर होती है फिर वहां से धीरे-धीरे तमाम शरीर में फैलती है।

इलाज—इस बीमारी से पीड़ित जानवरों को अच्छे जानवरों से अलग रखना चाहिए और उसके रहने के स्थान की खास तौर से सफाई रखनी चाहिए। जिस हिस्से में यह बीमारी हो गई हो वहां के बाल काटकर उसको भली-भांति गर्म पानी और साबुन से धोकर साफ कर देना चाहिए। बाद में जानवर को धूप में खड़ा करके गोबर और सरसों का तेल मिलाकर १०-१५ मिनट तक मालिश करनी चाहिए। उसके बाद घंटा भर तक जानवर को धूप में रखकर फिर गर्म पानी से धोकर उस जगह को कपड़े या टाट से सुखाकर नीचे लिखे तेल की दिन में एक बार रोज मालिश करनी चाहिए। नीचे लिखी

खाने की दवा एक बार रोज देनी चाहिए।

मालिस करने का तेल

गन्धक	१ हिस्सा
घी या तिल का तेल	८ हिस्सा
नीम का तेल	$\frac{1}{4}$ हिस्सा

गन्धक बारीक पीसकर, सब चीज मिला लो। आग पर भली प्रकार पकाने के बाद ठण्डा होने पर मालिश करो।

घासलेट या मिट्टी का तेल	१ हिस्सा
मुंह धोने का साबुन	१ ,,
पानी (पीने का)	२० ,,

साबुन को गर्म पानी में भली प्रकार घोलकर मिट्टी का तेल मिलाकर खूब फेंटो। जब मिलकर एक-सा दूध जैसा हो जाय तब काम में लो। हमेशा काम में लेने के पहले उसको भली-भांति मिला लेना चाहिए।

खाने की दवा

खाने का नमक	एक छटांक
गन्धक बारीक पिसी हुई	आधा तोला

आध सेर पानी में घोलकर नाल द्वारा दें या मिस्सी रोटी के बीच में रखकर खिला दें। गर्मी में नीचे लिखी दवा भी दी जा सकती है—

चावल	आध सेर
बारीक पिसे हुए नीम के पत्ते	१ छटाक

दोनों को पानी के साथ पका लें। ठण्डा होने पर आध सेर खट्टा दही मिलाकर हाथ से मथ लें। गरमी के मौसम में एक सप्ताह तक रोज दें। दवा देने के दो-तीन घंटे बाद तक पानी न दो।

खान-पान—कब्ज होने वाली कोई चीज न दें। हो सके तो बीमारी के दिनों में चने की चूरी, दाना या भूसी थोड़ी बहुत जरूर खिलावें।

अन्य हिदायतें—शुरु में ठीक इलाज करने से यह बीमारी आसानी से अच्छी हो जाती है, नहीं तो जानवर को बहुत तकलीफ देती है और बरसों तक अच्छी नहीं होती। दूसरे जानवरों को इस बीमारी से बचाना मुश्किल है। इसलिए शुरु में ही इस बीमारी की दवा दारू करनी चाहिए।

(१४) खुजली

खुजली भी छूत की बीमारी है। गजचर्म और खुजली में विशेष अंतर नहीं है। गजचर्म खुजली से कहीं ज्यादा खतरनाक और दुखदायी बीमारी है और ज्यादा अर्से में अच्छी होती है। खुजली इसके मुकाबिले में कम दुखदायी और जल्दी अच्छी हो जाने वाली बीमारी है। खुजली का इलाज खान-पान व अन्य हिदायतें सब गजचर्म जैसी समझनी चाहिए। खुजली वाले जानवर के जिस स्थान पर खुजली है वहां पर साबुन व गर्म पानी से धोकर दवा की मालिश तो करनी ही चाहिए लेकिन यह अच्छा होगा कि खुजली की हालत में जानवर के तमाम शरीर को सम्भव हो सके तो भली प्रकार साबुन व गर्म पानी से धोकर अन्यथा साधारण तरीके से दवाई की मालिश कभी-कभी कर दिया करें। साबुन न हो तो तन्दुरुस्त गाय का गोबर मलकर नीम के गर्म पानी से धोकर दवा की मालिश कर दिया करें।

(१५) दाद या रिंग वर्म

यह बीमारी भी गंदी और तंग जगह में रहने वाले जानवरों को होती है। छोटे बच्चों को बहुत होती है।

पहचान—गजचर्म की तरह से जानवर की खाल पर इसका असर होता है और इसमें गोल-गोल छल्ले से शरीर पर हो जाते हैं।

इलाज—गजचर्म और इस बीमारी का लगभग एक ही इलाज है। इस बीमारी में पीने की दवा जबतक कोई खास बात न हो, आमतौर से नहीं दी जाती।

खान-पान और अन्य हिदायतें—गजचर्म (Mange) के अनुसार।

(१६) कीड़ों के दुम्बल या मुजे (मनिया) फूटना या वार्बल फ्लाईज

जिन जानवरों के ऊपर खुरारा और ब्रुश अच्छी तरह नहीं फेरा जाता और उनकी सफाई नहीं रखी जाती उनको अक्सर यह बीमारी हो जाती है। वर्षा ऋतु के अन्त में इस बीमारी के कीड़े जानवर के शरीर पर आ जाते हैं और अपना काम शुरू कर देते हैं। गर्मियों के आरंभ में इस बीमारी के कीड़े पूरे ताकतवर हो जाते हैं और खाल में छेद करके बाहर निकल आते हैं, या जानवर के शरीर पर सख्त काले-से रंग की फुन्सी-सी हो जाती है। इससे जानवर को कोई विशेष नुकसान नहीं होता परन्तु इस बीमारी से उसकी उपयोगिता पर असर पड़ता है और मरने के बाद उसकी खाल कम कीमती हो जाती है।

इलाज—जिस जानवर को यह बीमारी हो जाय उसके पीड़ित स्थान को भली प्रकार चूने और तम्बाकू के गर्म पानी से धोकर २½ सेर पानी में एक छटांक ताजा चूना मिलाकर उसमें ४ छटांक बारीक पीसा हुआ तम्बाकू खूब मिलाकर घोल लेना चाहिए और २४ घंटे रखने के बाद उसको झिझिरे कपड़े में छान लेना चाहिए और सफेदी करने की मूंज की जैसी कूंची होती है वैसी बहुत बारीक एक अंगुल मोटी कूंची बनाकर या नीम, दतवन को दांत से कुचलकर कूंची बना लें या किसी सरकण्डे या लकड़ी के सिरे पर जरा-सा कपड़ा बांधकर कूंची या ब्रश जैसा बना लें और उसको दवा में डुबोकर पीड़ित स्थान पर दवा लगानी चाहिए। दवा लगाने में यह खयाल रखना चाहिए कि दवा उन फुंसियों के छेदों-द्वारा अच्छी तरह अन्दर पहुँच जाय ताकि अन्दर यदि इस बीमारी के कीड़े हों तो वे मर जाएं। इस प्रकार बराबर दवाई लगाने से आराम होता है।

अगर छेद फूटकर उनमें से खून जैसा माद्दा बाहर आना शुरू हो जाय तो हाथ से दबाकर गन्दा माद्दा निकालकर एक सींक के ऊपर जरासी रुई बांधकर उसे दवाई में डुबोकर उपरोक्त दवाई उसके अन्दर भली प्रकार लगा

देनी चाहिए। यह दवा तैयार न हो तो नीम का तेल फुरहरी द्वारा उपरोक्त दवा की तरह लगा देना चाहिए।

पीने के लिए

२ तोला खारी नमक ½ तोला गन्धक

एक पाव (गुनगुने) पानी में घोलकर १ हफ्ते तक पिलाओ।

खानपान—कोई खास बात नहीं: कब्ज करने वाली खुराक कम देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को साफ रखें। रहने के स्थान की सफाई जरूर करते रहें। जिस जगह यह बीमारी हो उस इलाके के जंगल में वर्षा के अन्त समय में अपने ढोर नहीं चराने चाहिए क्योंकि उसी समय इस बीमारी के कीड़े अच्छे जानवरों पर हमला करते हैं।

(१७) जूं या लाइस

जूं भी छूत की बीमारी है। यह भी केवल स्पर्श-मात्र से एक जानवर से दूसरे जानवर को लग जाती है। लेकिन यह बीमारी खतरनाक नहीं होती। यह प्रायः छोटे बच्चों को हुआ करती है। यदि एहतियात रखी जाय तो जल्दी ही दूर हो जाती है वरना ज्यादा फैलकर बच्चे को बहुत कमजोर कर देती है।

इलाज—१ हिस्सा तम्बाकू और दो हिस्से मुंह-हाथ धोने का साबुन ४० हिस्सा पानी में उबालकर ठण्डा करलें, और फिर उसमें १ हिस्सा मिट्टी का तैल अच्छी तरह मिलाकर मल दें। मलने के एक या दो रोज बाद साबुन और गर्म पानी से भली प्रकार धो दें।

: ५ :

बिना छूत की या साधारण बीमारियां

साधारण (बिना छूत की) बीमारियां प्रायः इतनी भयानक नहीं होतीं जितनी छूत की होती हैं। यदि आरंभ में ही यथोचित संभाल रखी जाय तो इन बीमारियों को आगे बढ़ने न देकर आसानी से रोका जा सकता है; परन्तु बाज बीमारियां इनमें भी ऐसी हैं, यदि उनके इलाज और देख-भाल में जरा-सी भी लापरवाही हो जाय तो ये बड़ा भयानक रूप धारण कर लेती हैं और जानवर को बचाना कठिन हो जाता है। इसलिए आरम्भ में ही यथोचित कार्यवाही करके बीमारी को रोकने का प्रबन्ध करना चाहिए। क्योंकि साधारण बीमारी खान-पान देख-भाल, रहन-सहन में त्रुटि रहने के कारण होती है इसलिए सबसे पहले त्रुटि को दूर करना चाहिए और बीमारी की हालत में ऐसी व्यवस्था कर देनी चाहिए कि जानवर को काफी सहूलियतें मिल जायं ताकि जो त्रुटियां और कमियां हो गई हैं उनको पूरा कर सकें। बहुत कुछ तो सहूलियतें पहुँचाने से ही ठीक हो जायगा। दवाई तो केवल एक प्रकार की मदद है। वह तो सिर्फ बीमारी की आगे के लिए रोक-थाम और जानवर को जल्दी साधारण हालत में लाने के जो जरिये हैं उनको मदद करने के लिए ही है। इसलिए बीमारियों की हालत में दवाई पर निर्भर न रहकर उससे ज्यादा उनके खान-पान, रहन-सहन का खयाल रखना चाहिए।

खाने-पीने और रहन-सहन के विषय में हम पहले अध्याय में बतला चुके हैं, उन सब बातों को भली प्रकार समझ लेना चाहिए और अमल में लाना चाहिए। बीमारी की हालत में जानवर को साफ-सुथरा रखना चाहिए। तेज हवा, ज्यादा सर्दी-गर्मी और वर्षा से बचाना चाहिए। उसके रहने का स्थान बिलकुल साफ-सुथरा रखना चाहिए। उसमें किसी किस्म की सील,

कीचड़, कादा व बदबू नहीं आना चाहिए। खाने-पीने के लिए गली, सड़ी, बदबूदार, सख्त, देर में हजम होने वाली कोई चीज नहीं देनी चाहिए बल्कि शीघ्र पचनेवाली स्वादिष्ट और हल्की गिजा, जिससे जानवर आसानी से खाकर स्वस्थ रह सके, देनी चाहिए। और कुएं का ताजा पानी तसले, नांद या बाल्टी में अलग पिलाना चाहिए। फोड़ा, फुंसी, चोट, जख्म की सफाई तथा उसकी मरहम पट्टी इत्यादि करने में पूरी सफाई रखनी चाहिए। ऐसा समझकर, कि जानवर के लिए ज्यादा सफाई की आवश्यकता नहीं है और यों ही अच्छा हो जायगा, लापरवाही नहीं करनी चाहिए। जरा-सी लापरवाही में दुख बढ़ जाता है और फिर कहीं ज्यादा परिश्रम करना पड़ता है और जानवर दुःख पाकर अच्छा होता है। बीमारी की हालत में जहां दवाई इत्यादि का प्रबन्ध किया जाता है वहां उनको यथोचित गिजा और आराम का भी प्रबन्ध चाहिए। याद रखिये कि उनको इस समय जितना आराम दिया जायगा और होशियारी के साथ जितनी उनकी देख-भाल की जायगी उतनी ही जल्दी वह बीमारी से अच्छे हो सकेंगे।

१—बदहजमी या अपच

यह बीमारी जानवरों को अक्सर हो जाती है। इसमें जानवर न तो पूरा चारा खाता और न काम ही कर सकता है। बदहजमी अन्य बीमारियों का कारण होती है। गला, गन्दा, बदबूदार चारा खाने तथा साफ और काफी पानी न मिलने से यह बीमारी हो जाती है। मेदा अपना काम ठीक नहीं करता और खाना हजम करने में कमजोर हो जाता है। कभी-कभी पेट के कीड़े व पुट्ठों की कमजोरी भी इसका कारण होती है। बाज दफा जिगर की खराबी और अधिक सर्दी-गर्मी लगने से व अनियमित रूप से कम या ज्यादा काम लेने से भी हो जाती है।

पहचान—जानवर खाना पूरी तरह हजम नहीं करता और दिन-ब-दिन कमजोर होता जाता है। पूरा चारा नहीं खाता और न ठीक जुगाली करता है; पानी ज्यादा पीता है। जानवर सुस्त-सा रहता है, कब्ज हो जाती है,

कभी-कभी बजाय कब्ज के पतले रंग-बिरंगे दस्त भी हो जाया करते हैं जिनमें बिना पचा खाना निकलता है।

इलाज—पहिले जानवर को जुलाब की दवा देकर हल्के दस्त कराने चाहिए। इसके लिए नीचे लिखे नुस्खों में से कोई-सा नुस्खा दे सकते हैं—

(१) सरसों या रेंडी का तेल	१० छटांक
सोंठ	२ तोला

सोंठ को कूट-पीसकर तेल में मिलाकर नाल (ढरके) से दीजिए। साधारण अवस्था में यह ठीक रहता है।

(२) खारी नमक	८ छटांक
सोंठ	२ तोला

दोनों को कूट-पीसकर आध सेर गुनगुने पानी में घोलकर नाल से पिलावें। यदि जरा तेज जुलाब देना हो तो यह अच्छा है।

(३) सरसों या तिल का तेल	८ छटांक
तारपीन का तेल	½ छटांक

दोनों को घोलकर नाल से पिला दें। पेट के कीड़े, अफारा और बदबूदार दस्तों में यह अच्छा रहता है।

उपरोक्त दवाइयों में से किसी दवा को दें। यदि दो-तीन घंटे तक दस्त न हों तो उसी चीज की आधी खुराक दुबारा देनी चाहिए। दस्त हो जाने के अगले दिन से नीचे लिखी कोई दवाई सुबह को एक बार दें।

(४) सोंठ	१ तोला
राई	१ तोला
अजवायन	२ तोला
नमक	१। तोला

सम्भव हो तो काला नमक लें अन्यथा सादा खाने का नमक लें। इन सब चीजों को कूट-पीसकर पाव भर गर्म पानी के साथ पिलावें और बाद में दो घंटे तक पानी न पिलावें।

(५) खाने का नमक — २ तोला
नौसादर — १ तोला
सोंठ — १ तोला
कसीस — ॥ तोला
कुचला — । तोला

या

भंग — १ तोला

सबको कूट-पीसकर पाव भर गरम पानी के साथ मिलाकर नाल से पिलावें।

(६) काला नमक
जीरा,
राई
कचरी
अजवायन
सोंठ
सैंजना की छाल (यदि मिल जाय तो)

सबको बराबर-बराबर मिलाकर कूट-पीसकर छान लें। यदि सम्भव हो तो चौगुने गर्म पानी में या छाछ में मिलाकर दो-चार रोज धूप में या गर्म जगह में रखकर सड़ा लिया जाय और फिर पाव भर रोज दिया जाय, अन्यथा एक छटांक दवा पाव भर गर्म पानी में मिलाकर पिला दें।

खान-पान - जानवर की खुराक कम कर देनी चाहिए। जो खुराक दी जाय वह थोड़ी-थोड़ी देर में और थोड़ी मात्रा में देनी चाहिए। पहले दिन मुलायम घास व चावल की मांड देनी चाहिए, दूसरे दिन मुलायम चारे के अलावा दलिया, चोकर या अन्य शीघ्र पचनेवाला कोई दाना दिया जा सकता है। इसी प्रकार धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों भूख बढ़ती जाय, थोड़ा-थोड़ा साधारण चारा, दाना देना चाहिए और फिर धीरे-धीरे बढ़ाकर जब जानवर साधारण हालत में आ जाय तब रोजाना की खुराक दी जाय।

अन्य हिदायतें—इस बीच में जहां तक हो सके जानवर को आराम देना चाहिए और देर में पचने व कब्ज करने वाला चारा दाना नहीं देना चाहिए। जानवर को तेज गर्मी-सर्दी से बचाना चाहिए, नहीं तो फिर बीमारी के बढ़ जाने का अंदेशा रहेगा।

(२) अफारा या पेट फूलना

यह बीमारी अक्सर जानवरों के ज्यादा चारा खा लेने या उसको एकदम अच्छा चारा-दाना भर पेट मिलने से हुआ करती है। या कभी ऐसा होता है कि जब अकाल-पीड़ित या भूखे जानवर अकाल के इलाके से सुकाल की जगह आते हैं और एकदम से अधिक घास चर लेते हैं तब यह बीमारी हो जाती है। बाज दफा जानवर खुल जाता है और वह चुपके से अनाज के गोदाम में या जहां दाना इत्यादि रखा रहता है वहां जाकर दाना इत्यादि जल्दी-जल्दी खा जाता है। जब वह दाना या अनाज पेट में फूलता है तो अफारा आ जाता है। यह मेदे की बीमारियों में से है जो खाई हुई खुराक मेदे में ठस जाने से होती है। जो चीजें हजम नहीं होतीं या कहीं अटक जाती हैं और पेट में पड़ी रहकर सड़ने लगती हैं उनमें गैस बनने लगती है और पेट फूलकर अफारा आ जाता है। यदि इस गैस को जल्दी से निकाला न जाय तो गैस अधिक मिकदार में पैदा होकर जानवर की मौत का कारण होती है। सड़े-गले चारे-दाने से, वर्षा में नई उगी हुई घास या हरा चारा एक दम ज्यादा खा लेने से, जहरीले घास खा जानेसे भी यह बीमारी हो जाती है। खाने के बाद जानवर से एकदम काम लेने से भी यह बीमारी हो जाती है।

पहचान—पेट फूल जाता है। बाईं कोख ज्यादा उभरी हुई होती है और दाहिनी भी उठी हुई होती है। पेट में हवा (गैस) भरी हुई मालूम होती है। पेट बजाने से ढोल की तरह बोलता है, सांस बड़ी मुश्किल से आता है। पशु बेचैन होकर उठता-बैठता है यदि जल्दी इलाज न किया जाय तो मर जाने का खतरा रहता है।

इलाज—आरम्भ में नीचे लिखों में से कोई एक नुसखा देना चाहिए।

(१) सरसों, अरण्ड या तिल का तेल ऽ॥।
तारपीन का तेल २ तोला

दोनों को मिलाकर नाल से पिलावें।

(२) खारी नमक २ छटांक
सरसों का तेल ऽ॥

दोनों को मिलाकर नाल से पिलावें।

(३) १० तोला राई बारीक पीसकर आध सेर गर्म पानी में घोलकर पिलावें।

(४) सोंठ २ तोला
हींग ६ माशा
नमक १० तोला
कालीमिर्च ६ माशा
तारपीन का तेल २॥ तोला

सबको घोट-पीसकर गर्म पानी में मिलाकर नाल से पिलावें।

(५) काला नमक २ तोला
अजवान २ तोला
आक के पत्ते २ छटांक

(६) आम का अचार २ छटांक खूब घोट-पीसकर गर्म पानी के साथ पिलावें।

यदि उपरोक्त दवाइयों में से किसी के देने से दो घंटे तक आराम न हो, तो फिर दुबारा एक खुराक दें। यदि फिर भी अफारा कम न हो तो साबुन घोलकर निवाये पानी से पशु को बस्ति-कर्म या एनिमा कराना चाहिए। एनिमा कराने की विधि १२ वें पृष्ट पर लिखी हुई है। अगर एनिमा से भी आराम न हो और अफारा बढ़ता ही जाय तो जानवर की बाईं कोंख में जो अधिक फूला हुआ हिस्सा हो वहां चाकू से छेद करके हवा निकाल देनी

चाहिए। छेद करने के पहले चाकू को आंच में गर्म करें और लाल हो जाने पर सम्भव हो तो नीम के वरना सरसों और कपूर के तेल में डालकर ठण्डा कर लेना चाहिए या १५-२० मिनट नीम के पत्तों के पानी में उबाल लेना चाहिए। अफारा कम हो जाने पर बदहजमी के नुसखे नं० ४, ५, ६ में से कोई-सा नुसखा या नीचे लिखा नुसखा दिन में एक बार देना चाहिए।

सौंठ	१ तोला
काली मिर्च	१ तोला
काला नमक	१ तोला
हींग	॥ तोला

या

नौसादर	१ तोला

सबको कूट-पीसकर आधा सेर गर्म पानी मिलाकर नाल में पिलावें

खान-पान—इस बीमारी में जानवर को चारा-दाना व पानी उस समय तक बिलकुल नहीं देना चाहिए कि जब तक अफारा बिलकुल न उतर जाय। उसके बाद ऐसी खुराक जो जल्दी हजम होने वाली हो थोड़ी मिक्दार में देनी चाहिए और जब जानवर उसे ठीक पचाने लगे और उसकी मामूली हालत हो जाय तो धीरे-धीरे खुराक बढ़ाकर फिर रोजाना की खुराक दे सकते हैं।

अन्य हिदायतें—अफारा कम करने की दवाई देने के बाद सम्भव हो तो जानवर को थोड़ा टहलाना चाहिए और उसकी कोख पर गर्म पानी से सेक और तारपीन के तेल की मालिश करनी चाहिए। अफारा उतरने पर एक दम उससे काम नहीं लेना चाहिए। अफारे वाले जानवर को धूप में नहीं रखना चाहिए।

(३) पेट का दर्द

जब पशु कड़ी सूखी घास खा लेता है और पानी पीने को कम मिलता है तो वह सखकर पेट में जम जाती है और पेट में दर्द करने लगती है।

कभी-कभी गर्मी के दिनों में एक दम ठण्डा पानी पिलाकर खड़ा कर देने से भी यह बीमारी हो जाती है।

पहचान—पशु जुगाली नहीं करता। खाना-पीना छोड़ देता है। बेचेन होकर उठता-बैठता है, पांव पीटता है और दांत पीसता है, गोबर नहीं करता या कभी-कभी पतला, थोड़ा, बदबूदार गोबर कर देता है और कभी-कभी अफारा भी हो जाता है।

इलाज—बदहजमी की नं० १, २, ३ में से कोई-सी एक दवा दस्तों के लिए दें ताकि दस्त होकर गन्दा माद्दा निकल जाय। फिर नीचे लिखी दवाओं में से कोई एक दवा पहले रोज एक दफा शाम को दें। फिर बाद में दो रोज तक दिन में एक बार दें। दवा देने के २—३ घंटे तक खाना न दें।

(१) सौंठ	२ तोला
हींग	६ माशा

दोनों को कूट-पीसकर ऽ≈गुड़ के साथ मिलाकर खिला दें।

(२) पीने की तम्बाकू	२ तोला
पुराना गुड़	६ छटांक

पाव भर पानी पकाकर नाल से दें।

(३) अजवायन	२ तोला
काली मिर्च	१ तोला
सौंठ	१ तोला
गुड़	४ छटांक

औंटी बनाकर अर्थात् आधा सेर पानी में पकाकर गुनगुना पिला दें।

(४) अजवायन	२ तोला
काला नमक	१ तोला
सौंठ	१ तोला
लहसुन	३ तोला

सबको कूट-पीसकर गर्म पानी में मिलाकर पिलावें।

(५) लहसुन	१ तोला
प्याज	१ छटांक
काला नमक	१ तोला
काली मिर्च	॥ तोला
अजवायन	१ तोला
हींग	॥ तोला
सौंठ	१ तोला

खानपान—दस्त जब तक लगे तब तक कोई चीज खाने-पीने को नहीं देनी चाहिए। उसके बाद हाजमा ठीक करने की दवा देने के बाद सिवा गर्म मांड, चाय या गर्म पानी के दो-तीन घंटे तक कोई खुराक नहीं देनी चाहिए। इसके बाद शीघ्र पचने वाला चारा, दलिया, चोकर इत्यादि देना चाहिए। पीने को ताजा पानी दें। फिर धीरे-धीरे चार-पांच दिन में साधारण चारा-दाना देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—यह बीमारी उपरोक्त दवा देने से यदि अच्छी होती न मालूम दे तो बीमारी का निदान (diagnosis) अर्थात् बीमारी की जांच दुबारा करानी चाहिए और देखना चाहिए कि कोई और बीमारी तो नहीं है, क्योंकि इस बीमारी के लक्षण कुछ अन्य साधारण और छूत की बीमारियों से भी मिलते-जुलते होते हैं।

(४) कब्ज

कब्ज प्रायः बदहजमी के कारण ही होता है। यह बीमारी जानवरों के खाने-पीने में गड़-बड़ होने के कारण व सूखा चारा ज्यादा खा लेने और पानी देर तक न मिलने के कारण हो जाती है। इससे और अनेक बीमारियां उठ खड़ी होती हैं।

पहचान—इस बीमारी में गोबर सूखा और कड़ा होता है या मींगनी जैसा आंव या आंव जैसे सफेद लम्बाबदार माद्दे के साथ होता है। कभी-

कभी गोबर बिलकुल नहीं होता, जिसकी वजह से जानवर व्याकुल हो जाता है और खाना-पीना कम कर देता है।

इलाज—आरम्भ में दस्त कराने के लिए नीचे लिखे नुस्खों में से एक देना चाहिए।

(१) अमलतास	२॥ तोला
सौंफ	२ छटांक

दोनों को कूट-पीसकर एक पाव गुड़ या शीरे में मिलाकर पाव डेढ़ पाव गर्म पानी के साथ पिला दें। यह बहुत हलके जुलाब का नुस्खा है।

(२) एलवा शुद्ध	१ तोला
सौंठ	१ तोला

दोनों को बारीक कूट-पीसकर एक पाव तेल या शीरे में मिलाकर नाल से पिला दें।

यदि २—३ घंटे तक दस्त न हो तो फिर दुबारा आधी खुराक उसी चीज की देनी चाहिए। फिर भी यदि दस्त न हो और नुस्खा नम्बर ३—४, या ५ से भी न हो तो आखीर में नुस्खा नम्बर ६ आजमाइए!

(३) सरसों या अरण्ड का तेल	१० छटांक
सौंठ	२ तोला

सौंठ को कूट-पीसकर तेल में मिलाकर नाल से पिला दें।

(४) तिल्ली या सरसों का तेल	आध सेर
तारपीन का तेल	१॥ छटांक

दोनों को मिलाकर नाल से पिला दें।

(५) खारी नमक	८ छटांक
सौंठ	२ तोला

दोनों को कूट पीसकर ऽ॥ गुनगुने पानी में घोलकर नाल से पिला दें।

(६) घी	३ पाव
गर्म दूध	१ सेर

गन्दे मादे के निकल जाने से कुछ गर्मी का असर भी कम हो जाय। फिर मामूली हालत में नमक और फिटकरी के गर्म पानी से भली प्रकार मुंह धोकर दरदरा अर्थात जो अनाज छानने की या आटा छानने की मोटी छेद वाली छलनी से छन जाय ऐसा नमक बराबर के सरसों के तेल में मिलाकर उसके मुंह में और कांटे हों तो कांटे की जगह दिन में दो बार सुबह-शाम भली-भांति मल देना चाहिए और पीने के लिए निम्न लिखित दवा उस दवा के मलने से पहले देनी चाहिए:—

नमक	२ तोला
चिरायता	१ तोला
जीरा	१ तोला
नौसादर	१ तोला

दवाई लगाने के पहले पाव भर गर्म पानी में सुबह-शाम दें।

यदि इससे लाभ न हो तो आध पाव नीम के पत्ते और सेर भर पानी किसी साफ बर्तन में डालकर आग पर रखकर उबालिए। जब पानी उबल जाय तो उसमें एक तेज चाकू या कैंची डाल दो। जब पानी जलकर आधा रह जाय तो बर्तन आग से उतार लो। पानी ठंडा हो जाय तो उससे अपने हाथ धो लो और चाकू या कैंची निकालकर जानवर के मुंह के बढ़े हुए कांटे काट दो व काटने के बाद हल्दी और नमक बराबर पीसकर सरसों के तेल में पिंड बना लो और काटी हुई जगह पर खूब मलकर चुपड़ दो। इस तरह तीन दिन तक बराबर दवा मलनी व चुपड़नी चाहिए।

मुंह में जख्म या छाले हों उस समय कीकर की छाल, नमक और फिटकरी तीनों को उबालकर उसके पानी से अन्यथा फिटकरी या नीम के गर्म पानी से मुंह धोकर नीचे लिखी दवा में से भली प्रकार दिन में तीन-चार बार लगानी चाहिए।

(१) सुहागा, कत्था, बारीक पीसी हुई हल्दी बराबर-बराबर लेकर शहद या शीरा, और दोनों न मिले तो घी में मिलाकर लगानी चाहिए।

(२) सूखे केले की भस्म	२ तोला
मक्खन	४ तोला
दूध	ऽ।

सबको मिलाकर पिलाओ और उपरोक्त दवाई पिलाने के बाद केले की भस्म को कपड़छन करके मक्खन में मिलाकर मुंह और छालों पर लगाओ। यदि दो तोला सूखे केले की भस्म एक पाव दूध में मिलाकर पिलाई जाय तो वह लाभ प्रद होती है।

खान-पान—दवाई लगाने के दो-तीन घंटे बाद तक खाने-पीने को कोई भी चीज नहीं देनी चाहिए। बाद में दलिया, चोकर और मुमकिन हो तो हरा अन्यथा सूखा चारा खिलाना चाहिए। और कुएं का ताजा पानी पिलाना चाहिए। देर में हजम होने वाली कोई चीज हर्गिज नहीं खिलानी चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर के मुंह में हाथ डालने से पहले अपने हाथ खूब धो लीजिए। यदि नाखून बढ़े हुए हों तो उनको कटवाकर साबुन से भली-भांति हाथ धो डालना चाहिए। दिन में २, ३, या ४ प्याज की गांठ रोज खिलाने से गर्मी कम होती है और मुंह के छाले ठीक होते हैं।

(६) पेट के कीड़े

सड़ा-गला चारा-दाना खाने, गंदा, मैला और मिट्टी मिला हुआ, कीड़े पड़ा हुआ पानी पीने से यह बीमारी हो जाती है। बछड़ों को ज्यादा हुआ करती है।

पहचान—जानवर अच्छी तरह खाता है परन्तु पनपता नहीं और दुबला होता जाता है। यदि गौर से देखा जाय तो उसके गोबर में छोटे-छोटे कीड़े मिलते हैं। ये कीड़े दो प्रकार के होते हैं—लम्बे व गोल। प्रायः दूध पीते बच्चों के पेट में, जो मिट्टी बहुत खाते हैं, लम्बे कीड़े पैदा हो जाते हैं। जिनसे उनको कभी-कभी कब्ज हो जाती है या बदबूदार मटियाले दस्त आने शुरू हो जाते हैं।

इलाज—पहले उसको कोई दस्त लगने की दवा देनी चाहिए।

सरसों या अरण्ड का तेल	ऽ॥ सेर
तारपीन का तेल	२ तोला

मिलाकर दीजिए। बाद में नीचे लिखी दवा में से कोई एक दीजिए—

(१) कत्था	॥ तोला
कपूर	३ माशा
खरिया मिट्टी	१ तोला

भली-भांति मिलाकर आध सेर मांड, छाछ या पानी में दें।

(२) भंग	१ तोला
कपूर	॥ तोला
मेंहदी	१ तोला
सफेद जीरा	१ तोला
बेलगिरी	१ तोला

भली-भांति मिलाकर आध सेर मांड, छाछ या पानी में दें।

(३) तूतिया या नीला थोथा	१ माशा
फिटकिरी	१ तोला

दोनों को कूट-पीसकर ऽ॥ ताजे पानी में दें।

यह दवा आखिर में देनी चाहिए जब कि पहले किसी दवा से लाभ न हो।

खान-पान—पहले चारे-दाने को बदल देना चाहिए। पानी की जगह जहां तक हो चावल या मांड या सम्भव हो तो छाछ पिलायें। इस बीमारी में जहां तक हो पानी न पिलावें। खाने को मुलायम शीघ्र पचने वाला चारा, चावल का मांड और दलिया या थोड़ा चोकर दिया जा सकता है।

अन्य हिदायतें—जानवर के रहने की जगह को बिलकुल साफ रखना चाहिए। गोबर तथा अन्य मैल इत्यादि को साफ करते रहना चाहिए। यदि जानवर सन जाय तो उसे धोकर टाट, कपड़े आदि से पोंछकर सुखा देना चाहिए।

(७) पेचिस खूनी दस्त और आंव

पेचिश याने जिसमें दर्द के साथ खून व आंव मिला हुआ दस्त बार-बार होता है। कभी-कभी दस्त अधिक दिन तक आने पर या बदहजमी की वजह से यह बीमारी हो जाती है। पेट में कोड़े हो जाने या अन्य बीमारी के कारण भी हो सकती है।

पहचान—पशु बार-बार आंव या खून मिला कुछ सख्त कुछ पतला गोबर करता है। हर वक्त गोबर करने की इच्छा प्रकट करता है परन्तु थोड़ा-थोड़ा करता है।

इलाज—सबसे पहले सरसों अरण्ड, अलसी या तिल का ऽ॥ तेल और १ छटांक सौंफ को मिलाकर पिला देना चाहिए। इसके ७-८ घंटे के बाद नीचे लिखी कोई दवा दें।

(१) सूखा आंवला	२ तोला
सौंठ	१ तोला
खांड या बताशे	२ तोला

आध सेर पानी में छान कर दें।

(२) खड़िया मिट्टी	२ तोला
कत्था	२ तोला
अफीम या धतूरे के बीज	३ माशा

ऽ॥ सेर चावल के मांड में मिलाकर दिन में दो बार दें।

(३) भंग	१ तोला
कपूर	१ तोला
मेंहदी	१ तोला
सफेद जीरा	१ तोला
बेलगिरी	१ तोला

सबको पीसकर आध सेर चावल के मांड में मिलाकर दें।

(४) बेलगिरी	५ तोला
खड़िया मिट्टी	१। तोला

सबेरे-शाम एक सेर छाछ में मिलाकर दें।

(५) सौंफ	१ तोला
मेंहदी	१ तोला
सफेद जीरा	१ तोला
बेलगिरी	१ तोला

सबको पीसकर आध सेर चावल के मांड में दें।

खान-पान व अन्य हिदायतें—दस्तों की बीमारी के माफिक

(८) दस्त आना

इस बीमारी में पतला गोबर आता है। यह कोई बीमारी नहीं बल्कि अजीर्ण का चिह्न है जो कि खराब चारा, गन्दा पानी आदि के खाने-पीने से हो जाती है। कभी-कभी विशेष सर्दी-गर्मी से या अंतड़ियों के विकार से भी ऐसा हो जाता है। एकदम ज्यादा हरी घास खाने से या पेट में कीड़े हो जाने से भी दस्त होने लग जाते हैं।

पहचान—इस बीमारी वाला जानवर जल्दी-जल्दी पतला गोबर करता है। जुगाली कम करता है या बिलकुल नहीं करता। कमजोर हो जाता है, पानी ज्यादा पीता है। आखिर में पशु अधिक बेचैन मालूम पड़ता है जैसे कोई कष्ट हो रहा हो। पीठ सिकोड़कर खड़ा हो जाता है।

इलाज—जिस चीज से दस्त आते हों वह नहीं खिलानी चाहिए अर्थात् चारा-दाना बदल देना चाहिए। जानवर को सर्दी-गर्मी से बचाना चाहिए। पहले-पहल आंतों की खराश दूर करने के लिए अलसी, तिल, अरण्डी या सरसों का तेल ऽ॥, सौंफ १ छटांक मिलाकर देनी चाहिए। बाद में नीचे लिखी कोई भी एक दवा सबेरे-शाम दोनों समय दीजिए।

(१) अजवायन	२ तोला
कत्था	२ तोला
सौंफ	३ तोला

सब चीज घोट-पीसकर आध सेर मांड में मिलाकर दें।

(२) बेलगिरी　　　　५ तोला

खड़ियामिट्टी　　　　१। तोला

दोनों को कूट-पीसकर आध सेर पानी में मिलाकर दें।

(३) खरिया मिट्टी　　　　५ तोला

सोंठ　　　　१ तोला

कत्था　　　　॥ तोला

भंग　　　　१ तोला

धतूरे के बीज　　　　३ माशे

सब अच्छी तरह सिल आदि पर घोटकर ऽ॥ मांड में मिलाकर दें।

(९) हलक या खाना निगलने वाली नली का रुक जाना

सख्त व गोल चीज जैसे गाजर, सलगम या इस किस्म की कोई और चीज गले में रुक जाने से या सख्त सूखा चारा-दाना जल्दी-जल्दी निगल जाने से हलक में जाकर गोला बंध जाता है और रुक जाता है, इससे यह बीमारी हो जाती है।

पहचान—जब इस प्रकार कोई चीज गले में अटक जाती है तो उस समय जानवर जो भी कुछ खाता-पीता है उसे निगल नहीं सकता और वह मुंह और नाक के जरिये वापिस आ जाता है। ऐसे मौके पर धांस या खांसी भी हो जाती है जिससे जानवर बेचैन हो जाता है और बार-बार निगलने की, कै या उल्टी करने की कोशिश करता है।

इलाज—अटकी हुई चीज को मुंह में हाथ डालकर बाहर निकालने की कोशिश करनी चाहिए। अगर वह निकल जाय तो अच्छा है, अन्यथा लचकदार बेंत के सिरे पर कपड़ा गोल बांधकर उसको घी या तेल में भिगोकर मुंह में डालकर अटकी हुई चीज को अन्दर धकेलने की कोशिश करनी चाहिए और बाहर के हिस्से पर आहिस्ता-आहिस्ता मालिश करनी चाहिए, ताकि अटकी हुई चीज अन्दर चली जाय और जानवर को थोड़ा आराम भी

मिले। चीज अन्दर चली जाने के बाद थोड़ा तिल का तेल उसमें थोड़ा सुहागा या कच्चे केले की कपड़छन को हुई राख मिलाकर पिला देनी चाहिए ताकि गले की खारिश को आराम पहुँचे।

खान-पान—खाने के लिए कुछ दिन तक चावल का मांड, दलिया, सत्तू, चोकर तथा हरी घास और यदि हरी घास न मिले तो बहुत मुलायम सूखा चारा देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर के मुंह में हाथ डालने के पहले हाथ को भली-भांति धोकर साफ कर लेना चाहिए। बेंत या कपड़ा जो भी अन्दर डालें उसे भी साफ कर लेना चाहिए। यह ख्याल रखना चाहिए कि बेंत या हाथ जानवर के मुंह में इस प्रकार से न लगे कि खुरच या जख्म हो जाय।

(१०) पित्ती उछलना

यह बीमारी पित के विकार के कारण पैदा होती है। जब पित्त खून में मिल जाता है तो वह खाल में चकत्ते से पैदा कर देता है।

पहचान—खाल के ऊपर जगह-जगह मच्छर के काटे जैसे गोल-गोल चकत्ते से पड़ जाते हैं जो दो-तीन इंच तक चौड़े होते हैं। तमाम शरीर में खाज हो जाती है और जानवर बेचैन हो जाता है। ये चकत्ते निकलते और दबते रहते हैं।

इलाज—पहले जानवर को जुलाब देना चाहिए। इसके लिए बदहजमी के नुस्खे नं० १, २, ३ में से कोई-सा नुस्खा दे सकते हैं। दस्त होने के बाद नीचे लिखी दवा दें—

(१) शहद	१० तोला
गेरू	१० तोला

दोनों को मिलाकर नाल से दें।

(२) नीम के पत्ते	३ तोला
अडूसा, जिसको बासा भी कहते हैं, के पत्ते	३ तोला

शीशम के पत्ते ३ तोला

सबको आध सेर पानी में उबालें। जब डेढ़ पाव रह जाय तब ठंडा करके पिला दें।

खानपान—खाने के लिए यदि सम्भव हो तो हरा अन्यथा सूखा नरम चारा देना चाहिए, पीने के लिए पानी ताजा या थोड़ा गरम करके दें।

अन्य हिदायतें—जानवर को अधिक सर्दी-गर्मी से बचाना चाहिए। उस पर यदि सम्भव हो तो काले रंग का कपड़ा या झूल अथवा कोई कपड़ा डाले रखें।

(११) जुकाम या सर्द-गर्म

यह कोई खास बीमारी नहीं है बल्कि किसी दूसरी बीमारी का चिन्ह है। अगर किसी बीमारी का पता न लगे तो यह समझना चाहिए कि पशु को सर्दी लग गई है। एक दम गर्म जगह में से निकलते या काम पर से आते ही ठण्डा पानी पिलाने से, बहुत ज्यादा गर्द या धूल में रहने से या एकदम से ठण्डक में से जानवर को गर्म जगह में लाकर बांधने से भी जुकाम हो जाया करता है।

पहचान—नाक से पानी निकलता है, छींकें आती हैं, जानवर खांसने लगता है, बाज दफा हल्का बुखार भी हो जाता है। बाद में नाक की झिल्ली लाल हो जाती है और जानवर खाना-पीना कम कर देता है।

इलाज—उबलते पानी में तारपीन का तेल या सफेदा (Eucalyptus) के पत्ते डालकर १५-२० मिनट तक उसकी भाप सांस द्वारा जानवर के अंदर पहुँचनी चाहिए। सांस द्वारा बफारा देने की तरकीब पहले दी जा चुकी है। नीचे लिखी दवाओं में से कोई एक दवा खाने को दीजिए—

(२) सोंठ १ तोला

अजवायन २ तोला

गुड़ ४ छटांक

आधसेर पानी में पकाकर औटी बनाकर नाल से पिलादें।

(२) अजवायन	१ तोला
अदरक या सौंठ	१ तोला
मेथी	३ तोला
कपूर	२ माशा

सब चीजों को कूट-पीस कर पावभर शीरे या गुड़ में मिलाकर दें।

उपरोक्त कोई दवा सुबह-शाम देने के बाद दो तीन घण्टे तक पानी न पिलावें। और दवा देने के बाद जानवर को हवा से बचाकर रखें और उस पर झूल फौरन डालदें।

खानपान—पीने को गुनगुना या निवाया (मामूली गर्म) पानी देना चाहिए। खाने के लिए शीघ्र पचनेवाला मुलायम चारा देना चाहिए कब्ज करने वाली ठण्डी तासीर वाली कोई चीज बीमारी में नहीं खिलानी चाहिए। गुड़ डालकर दलिया या चोकर की गर्म चाय देना लाभप्रद होता है। जानवर के अच्छे होने पर रोजाना की साधारण खुराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—जहां तक सम्भव हो जानवर को गर्म सूखी जगह में रखना चाहिए। एकदम उसे गर्म जगह से बाहर मत निकालो या ठण्डक में से लाकर गर्म जगह में एकदम से मत बांधो। पीने को बहुत ठण्डा पानी नहीं देना चाहिए। जाड़े के दिनों में काम पर से लाते ही, तालाब, नहर, नदी और नाले का ठण्डा पानी नहीं पिलाना चाहिए। ठण्डक और तेज हवा से जानवर को बचाना आवश्यक है। बीमारी की हालत में जानवर पर झूल डाले रखिए। उबलते पानी के बर्तन में दवा डाल उसपर थोड़ी सूखी घास-फूस इत्यादि डाल दीजिए ताकि जब वह जानवर के मुँह के पास लाया जाय तो जानवर के मुँह डालने से, उसका मुँह न जले।

(१२) खांसी

यह बीमारी भी दूसरी बीमारियों का लक्षण हो सकती है। यह प्रायः सर्दी-गर्मी और बदहजमी से होती है। गर्मी में आम तौर से सूखी खांसी होती है और जाड़ों में तर होती है।

पहचान—जोर से सांस लेना, जुगाली कम करना, रोयें (बाल) खड़े होना, बाज दफा बुखार का भी होना इसके लक्षण हैं। कब्ज भी अक्सर हो जाया करता है। आंख, नाक से पानी गिरता है। आरम्भ में सूखी खांसी होती है। फिर बाद में बढ़कर तर हो जाती है। खांसी बढ़ जाने पर सांस की आवाज भी बढ़ जाती है।

इलाज—प्रारम्भ में जुकाम की दोनों दवाओं में से कोई-सी दीजिए। इसके दो-तीन घंटे बाद नीचे लिखी कोई दवा देनी चाहिए—

(१) केले की पत्ती की राख	१ तोला
मक्खन या लोनी घी	२ तोला

दोनों को मिलाकर चटाओ।

(२) छःमाशे नमक को डली आक के पत्तों में दबाकर भून लो फिर पाव भर गर्म पानी में मिलाकर ३ दिन तक लगातार दो।

(३) कपूर	३ माशा
कलमी शोरा	१ तोला
नौसादर	१ तोला
आक की छाल	१ तोला
सौंठ	१ तोला

सबको कूट-पीस कर एक छटांक शोरे में मिलाकर दो।

(४) पिसी हुई हींग ६ माशा, अदरक की एक गांठ में रखकर उपले की आग में दबा दो। पक जाने पर उसको बारीक पीसलो। पानी पिलाने के बाद शोरे में मिलाकर दिन में दो तीन बार दो।

(५) लहसुन	१ तोला
काली मिर्च	१ तोला
सौंठ	१ तोला
बांसे (अडूसा) के पत्ते का रस	१ तोला
अनार की छाल या छिलका	१ तोला

सबको कूट-पीसकर गुड़ में मिलाकर खिलाओ।

उपरोक्त दवा में से कोई भी दवा सबेरे-शाम दिन में दो बार दीजिए और दवा देने के पहले १५ या २० मिनट तक उबलते पानी में तारपीन का तेल या सफेदा (Eucalyptus) के पत्ते डालकर सांस के जरिये भपारा दीजिए। उसकी तरकीब पहले दी जा चुकी है।

खान-पान—दवा देने के बाद जानवर को तीन-चार घंटे तक पानी नहीं पिलाना चाहिए। इसके अलावा जो जुकाम में खान-पान बताया है वही देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जुकाम की बीमारी के अनुसार।

(१३) निमोनिया

एकदम सर्दी-गर्मी के बदलने से, पसीने व बुखार की हालत में ठंडी हवा लगने या भीगने या बहुत ठंडा पानी पी लेने से यह बीमारी हो जाया करती है। यह खतरनाक बीमारी है। जरा-सी गफलत से जानवर का बचना मुश्किल हो जाता है।

पहचान—जुकाम-खांसी के सब लक्षण तो मौजूद होते ही हैं, उनके अलावा बराबर बुखार का रहना, जानवर का कांपना, मुश्किल से सांस लेना, नाक से बलगम जाना, आंखें लाल होना, नब्ज का जल्दी-जल्दी चलना, यहां तक कि एक मिनट में ८० से १०० तक हो जाना, इसके लक्षण हैं। जानवर बेचैन हो जाता है। छाती और फेफड़े के दर्द की वजह से दांत पीसता है और कराहता है। छाती पर बांया हाथ रखकर दाहिने हाथ की अंगुली की चोट मारने से ढोल जैसी आवाज आती है। बीमारी होने के ६-७ रोज तक बीमारी बढ़ती दिखाई देती है। करीब सातवें रोज बीमारी का अधिक से अधिक जोर होता है। इसके बाद बुखार उतरना आरंभ हो जाता है और सब हालतें अच्छे जानवर की जैसी मालूम देती हैं। जब बुखार एकदम कम हो जाय और सांस भी सहूलियत से आती मालूम हो तब यह समझना चाहिए कि हालत बहुत खराब हो गई। जानवर का बचना बहुत मुश्किल है।

इलाज—जानवर को खुले स्थान में न रखकर गर्म स्थान में रखना चाहिए और उसको झूल या कम्बल उढ़ाये रखना चाहिए ताकि जानवर को हवा न लगे। दोनों समय (सबेरे-सांझ) नाक के द्वारा जुकाम में बताया हुआ भपारा देना चाहिए। राई का पलस्तर कपड़े पर लगाकर छाती पर दर्द के स्थान पर लगाइए। इस प्लास्टर के बनाने की तरकीब यह है—राई को खूब बारीक सिलपर पानी के साथ पीसकर गाढ़ी-गाढ़ी ठीक नाप कर कपड़ा लेकर उसपर फैलाकर गर्म-गर्म लगा दें। फिर आरम्भ में नीचे लिखी आवटी दें—

(१)	सौंठ	१॥ तोला
	मेथी	५ तोला
	अजवायन	२॥ तोला
	चाय	१ तोला
	गुड़	ऽ॥ सेर

आध सेर पानी में मिलाकर भली प्रकार उबालकर जब पौना रह जाय तब पिला दीजिए। बाद में सवेरे-शाम नीचे लीखी दवा दें—

(२)	कपूर	४ माशा
	बीज धतूरा	१ माशा
	अनार का छिलका या छाल	२ तोला
	सोंठ	१ तोला
	देशी शराब	२ छटांक
	शीरा	२ तोला

कपूर और बीज धतूरे को पीसकर शराब में घोल लो। अनार के छिलके या छाल को कूट-पीसकर आध सेर पानी में मिलाकर आग पर चढ़ा दो। आधा पानी रह जाय तब छानकर यह पानी और कपूर व धतूरे के बीज मिली हुई शराब को घोल व शीरा मिलाकर मामूली गर्म-गर्म जानवर को पिला दो।

बारहसींगे का सींग आग में जला लो। इसमें से एक तोला लो और १ माशा भुनी हुई फिटकड़ी दोनों मिलाकर आधा सवेरे आधा शाम को सोंठ के काढ़े के साथ दो।

खान-पान—दवाई देने के तोन-चार घंटे बाद तक पानी बिलकुल न दो और जब पानी पिलाओ तो गर्म पिलाओ, ठण्डा हर्गिज न पिलाओ और खाने को गर्म दूध या चोकर की गर्म चाय दो। जानवर के अच्छे होने पर थोड़ा दलिया और मुलायम चारा देना चाहिए और ५, ६ रोज के बाद साधारण खुराक देनी चाहिए। बीमारी में यह ध्यान रखना चाहिए कि जानवर जहां तक हो कमजोर न होने पावे और उसको तीन-चार बार चाय और दूध थोड़ा-थोड़ा जरूर देते रहना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जुकाम जैसी ही हैं। इस बीमारी में जानवर के शरीर पर हवा का झोंका हर्गिज नहीं लगना चाहिए। इस बीमारी में बीमार को तन्दुरुस्त जानवर से अलग रखना चाहिए ताकि उसकी भली-भांति सेवा-टहल हो सके और दूसरों को भी तकलीफ न हो; क्योंकि यह बीमारी छूत की बीमारी की तरह दूसरे तन्दुरुस्त जानवरों में भी बीमार जानवर के नाक की सिनक, झूठन या गोबर-पेशाब वगैरा से लग जाती है, इसलिए उपरोक्त चीजें सब इकट्ठी करके जिस तरह छूतवाली बीमारियों की हालत में तुरंत जला देते हैं या गहरे गड्ढे में डालकर ढक देते हैं वैसे ही जला या ढक देनी चाहिए। निमोनिया की बीमारी में बीमार जानवर को जहां तक हो नाल से कोई चीज नहीं पिलानी चाहिए।

(१४) दमा

कमजोर जानवर को ज्यादा दौड़ाने से, बहुत दिनों तक बराबर खांसी और बदहजमी रहने से और बीमारी में खान-पान या इलाज में लापरवाही करने से दमा हो जाया करता है।

पहचान—जल्दी-जल्दी, खींचकर तकलीफ से सांस लेना। यहां तक कि

जल्दी सांस लेने की वजह से कोख और पेट में दर्द हो जाना। लगातार खांसी आते रहना और बलगम का गिरना दमे की निशानी हैं।

इलाज—

बीज धतूरा	१ माशा
कपूर	१ माशा
अनार का छिलका	१ तोला
देशी शराब	१ छटांक
बांसे के पत्तों का रस	१ तोला
शीरा	१ छटांक

कपूर व बीज धतूरे को बारीक पीसकर बांसे के रस के साथ शराब में घोल लो। अनार के छिलके या छाल को पानी में खूब पकाओ। जब पककर आधा पानी रह जाय तो छानकर इस पानी को और शराब में मिले हुए कपूर, धतूरे के बीजों, बांसे के पत्तों का रस और शीरा सबको मिलाकर गर्म-गर्म दिन में एक या दो बार दें।

खानपान—शीघ्र पचनेवाला और मुलायम चारा तथा चोकर की चाय नमक डालकर दीजिए। पीने को निवाया गर्म पानी परन्तु यदि यह सम्भव न हो तो कुएं का पानी देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को तेज सर्दी, गर्मी और ओस से बचाइए और जहां तक हो खुले में न रखकर मकान में रखना चाहिए। कोई ठंडी बासी या कब्ज करने वाली और देर में हजम होने वाली चीज नहीं देनी चाहिए। जानवर को खिलाने-पिलाने में पूरी होशियारी रखनी चाहिए ताकि जानवर कमजोर न हो क्योंकि कमजोर होने से बीमारी के बढ़ने का डर रहता है।

(१३) पेशाब में खून आना

यह बीमारी चोट लगने या अधिक गर्मी या कोई जहरीली चीज आदि खा लेने या दर्द या मसाने की कमजोरी की वजह से हुआ करती है।

इलाज— (१)

कीकर के पत्ते	४ छटांक
हल्दी	२ तोला

दोन को भंग की तरह पीसकर सुबह-शाम जानवर को पिला दें।

(२) बारीक पिसी हुई फिटकरी १ तोला
दूध ॥ आधासेर

फिटकरी दूध में मिलाकर पिला दो।

यदि जानवर ज्यादा गर्मी की वजह से खून का पेशाब करता हो तो उसे नीचे लिखी दवा दो।

(३) अमचूर (आम की सूखी खटाई) २ छटांक मिट्टी के बर्तन में शाम को भिगो दो और सबेरे उसको खूब मथकर छानकर पिला दो।

(४) इसी प्रकार मिट्टी के बर्तन में पाव भर सफेद तिल शाम को भिगो दो और सवेरे ठंडाई की तरह घोटकर पिला दो।

अगर जानवर थम-थमकर खूनदार पेशाब करे तो उसको नीचे लिखी दवा दो।—

(५)	गेरू	१ छटांक
	घी	२ छटांक
	सौंफ	१ छटांक

सौंफ और गेरू को खूब बारीक पीसकर ॥ दूध और घी मिलाकर जानवर को पिला दो।

खान-पान—कोई गर्म चीज, बादी और कब्ज करने वाली खाने को न दो। हरी दूब व घास व शीशम की पत्ती जहां तक हो ज्यादा से ज्यादा खिलावें। यह इस बीमारी में बड़ी लाभप्रद है। पीने के पानी में जरा-सा शोरा मिला देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर के बांधने के स्थान को निहायत साफ रखें। पेशाब इत्यादि फौरन हटाते रहें।

(१६) पेशाब न होना या रुकावट पड़ जाना

यह बीमारी पुट्ठे, मसाने या गुर्दे की कमजोरी व पथरी के होने की

वजह से हुआ करती है। सूखा चारा खिलाना और कम पानी पिलाने की वजह से भी हो सकती है।

पहचान—जानवर को पेशाब न होना, उसका बेचैन होकर उठना-बैठना और बार-बार पेशाब करने की कोशिश करना इस बीमारी के लक्षण हैं।

इलाज—	शोरा	१ तोला
	धनिया	२ तोला
	कपूर	३ माशा

सब चीजें घोट-पीसकर ठण्डे पानी में घोलकर पिला दें और नीचे लिखी दवाओं में से कोई-सी उसके मूतने के स्थान पर लगा दें।

(१) नीम के पत्ते उबालकर नमक मिलाकर मूतने के स्थान पर लगाइए।

(२) बंधे वाले जानवर के मूतने की जगह एक साबित लाल मिर्च रख दें। जब पेशाब करने लगे तो निकाल लें।

(३) इसी प्रकार शोरे के गाढ़े घोल में बत्ती भिगोकर मूतने की जगह चढ़ा दें।

(४) यदि संभव हो तो मूतने की जगह एक या दो खांड के बताशे चढ़ाने से भी पेशाब हो जाता है।

(५) बेरी के पत्ते चबाकर मूतने की जगह रखने से भी पेशाब हो जाता है।

खान-पान—पेशाब में खून आने के विषय में बताये अनुसार।

अन्य हिदायतें—अगर उपरोक्त दवा देने से फायदा न हो तो सरकारी पशु-डाक्टर को बुलाकर दिखाना चाहिए।

(१७) पेशाब का टपकते रहना

यह बीमारी भी मसाने, गुर्दे इत्यादि की कमजोरी व पथरी आदि की वजह से होती है।

पहचान—पेशाब का रुक-रुक कर थोड़ी मिकदार में आना व टपकते रहना।

इलाज—यह रोग प्रायः पथरी के कारण होता है, इसलिए ढोरों के डाक्टर से आपरेशन द्वारा पथरी निकलवा देनी चाहिए। खाने की कोई भी ठण्डी व मौतदिल ताकत की दवा खिलानी चाहिए।

(१) मक्का के भुट्टे के बाल	२ छटांक
काली मिर्च	१ तोला
(२) खरबूजे के छिलके	१ पाव
काली मिर्च	१ तोला

मक्का के भुट्टे के बाल दो छटांक यदि न मिले तो खरबूजे के छिलके एक पाव, काली (गोल) मिर्च १ तोला, दोनों को ठण्डाई की तरह पीसकर ठंडे पानी में घोलकर सुबह-शाम पिलाइए।

खान-पान—पेशाब में खून आने की बीमारी के अनुसार

(१८) फोतों का सूजना

किसी प्रकार की चोट लगने से ऐसा हो जाता है। बाज दफा कीटाणु भी इसका कारण होते हैं। कभी बादी से फोतों पर सूजन आ जाती है।

पहचान—फोतों पर सूजन होती है। जानवर पिछले पैर फैलाकर चलता है और अक्सर ज्यादा तकलीफ होने से उसे बुखार भी हो जाता है।

इलाज—जानवर को आराम दीजिए और बीमार जानवर को बरदाने (ग्याभन कराने) से रोकना चाहिए।

(१) ठण्डा पानी गीले कपडे से बार-बार फोतों पर डालिए और ठण्डक पहुँचाइये।

(२) टेसू व ढाक के फूल थोड़े नमक के साथ पानी में पकाकर उसके पानी से सेक कीजिए और सेक के बाद पत्तों को चारों तरफ लगाकर लंगोट की तरह कपड़ा बांध दीजिए।

(३) इसी तरह अरण्ड के पत्ते, मकोय, झड़बेर के पत्ते और आकाश-बेल इन सबको खूब उबालकर उसके गुनगुने पानी से सेक कीजिए और फिर उन पत्तों को अण्ड-कोष के चारों तरफ लगाकर लंगोट की तरह कपड़ा बांध दीजिए।

(४) हल्दी, चूना, फिटकरी, कड़वा तेल सबको खूब बारीक पीसकर तेल में मिलाकर आंच पर पका लें और फोतों पर मामूली गर्म लगावें।

(५) इमली के पत्ते और नमक सिलबट्टे पर चटनी की तरह पीस लें। फिर किसी बर्तन में उसको भली-भांति गर्म करके अण्ड-कोष पर गरम-गरम लेप करें।

उपरोक्त दवाइयों में से कोई भी दिन में दो बार लगावें और नीचे लिखी दवा सवेरे-शाम खाने को दें।

(६) कपूर	२ माशा
कलमी शोरा	१ तोला
शराब	१ छटांक

शराब में दोनों चीजों को घोलकर पाव भर पानी में मिलाकर पिलाइए।

(७) यदि बादी से सूज गए हों तो –

अरण्डी का तेल	३ छटांक
त्रिफले का पानी	पाव भर

दोनों को मिलाकर पिलाइए और तम्बाकू के पत्ते गर्म करके बांधिए।

खान-पान—शीघ्र पचने वाली खुराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर के रहने का स्थान बिलकुल सूखा रहना चाहिए। यदि जरा भी गीला हो जाय तो फौरन सूखा कर दें। उसके बैठने की जगह पर भली प्रकार बिछावन कर दीजिए ताकि वह आराम से बैठ सके।

(१९) मिरगी

प्रायः यह रोग बच्चों को ज्यादा होता है। उम्र बढ़ने पर कम होता है।

कभी-कभी पेट में कीड़े हो जाने से भी होता है। इसलिए कीड़े दूर करने का इलाज करना चाहिए।

पहचान—जानवर अचानक कांपने लगता है और गिर जाता है। गर्दन तथा पैर अकड़ जाते हैं और बेहोश हो जाता है और बाज दफा मुँह से फेन या झाग भी आते हैं।

इलाज—	पलाश पापड़ा (ढाक के बीज)	१ तोला
	अनार की छाल	१ तोला
	सौंफ	१ तोला
	अमलतास	१ तोला

सब को कूटकर आधसेर पानी में पकावें। जब पावभर रह जाय तो गुनगुना-गुनगुना भूखे पेट पिलावें।

उपरोक्त दवा देने के बाद मीठा, सरसों या अलसी का तेल आध सेर और तारपीन का तेल आधी छटांक मिलाकर पिला देना चाहिए।

पांच-छः दिन दवा देने के बाद यदि रोग न रुके तो फिर उसको उपरोक्त जुलाब देकर दवा आरम्भ करनी चाहिए। एक बार रोग रुक जाने के बाद भी बराबर दस-पन्द्रह रोज तक एक खूराक नीचे लिखी दवा प्रतिदिन देते रहना चाहिए।

नमक	२॥ तोला
नीम की पत्ती	२॥ तोला

आध सेर छाछ में खूब घोट-पीस कर २ छटांक सरसों का तेल मिलाकर पिला दें।

(१) बेहोशी की हालत में रीठे का छिलका बारीक पीस कर सुंघावें।

(२) उपले की राख में आक का दूध मिलाकर सुंघावें।

खान-पान—दवा देने के पहले जानवर को भूखा रखना चाहिए और दवा देने के दो-चार घंटे बाद तक खाने को कुछ भी नहीं देना चाहिए। बाद से चावल का मांड या छाछ या और कोई शीघ्र पचनेवाली चीज व मुलायम

घास देनी चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि भूखा रहने के बाद जानवर को एकदम से ज्यादा खाने को न दें वरना तकलीफ होने का डर रहता है। पीने को कुएं का ताजा पानी दें।

अन्य हिदायतें—जानवर के रहने के स्थान को बिलकुल साफ रखें। जो कुछ भी गंदगी वहां गोबर या दस्त वगैरा से हो उसे फौरन साफ करते रहना चाहिए। अगर जानवर सन जाय तो उसे धोकर कपड़े से पोंछ देना चाहिए।

(२० साधारण बुखार

साधारण खाने-पीने की गड़बड़ से तथा कब्ज रहने से, एकदम मौसम बदलने से, अधिक भीगने और मच्छर इत्यादि के काटने से बुखार हो जाता है। इसके अलावा बहुत-सी बीमारियों के कारण भी बुखार हो जाया करता है।

पहचान—शरीर का गरम होना, बाल खड़े होजाना नब्ज का तेज चलना, सांस जल्दी लेना और जानवर का सुस्त दिखाई देना, बुखार के चिह्न हैं। तेज बुखार में जानवर जुगाली करना बन्द कर देता है। शरीर कांपने लगता है। पेशाब का रंग बदल जाता है और बेचैन होकर पड़ा रहता है।

इलाज—उसे ऐसे मकान में रखना चाहिए जहां उसको सीधी हवा न लगे। ऐसी हालत में प्रायः कब्ज या पेट की खराबी हुआ करती है। इसलिए आरम्भ में एक खुराक साधारण जुलाब की दवा दे देनी चाहिए इसके बाद नीचे लिखी कोई सी दवा दीजिए—

(१) कपूर	३ माशे
कलमी शोरा	१ तोला

एक छँटाक देशी शराब में घोलकर आधसेर गुनगुने गर्म पानी में शोरा घोलकर दोनों मिलाकर पिलावें।

(२) गोमा घास के फूल	१ छटांक
काली मिर्च	१ तोला

आध सेर पानी में घोल-पीसकर गुनगुना गर्म करके दीजिए।

(३) शोरा	१। तोला
नमक	२॥ तोला
चिरायता	२॥ तोला

आधपाव राव, शीरा या गुड़ में मिलाकर खिला दीजिए। या आध सेर गुनगुने गर्म पानी में घोल कर दीजिए।

खान-पान—खाने को मुलायम शीघ्र पचनेवाला चारा देना चाहिए। तेज बुखार में दूध व गेहूँ के चोकर व तीसी की चाय देनी चाहिए। बाद में जरा अच्छा होने पर दलिया इत्यादि और बिलकुल अच्छा होने पर धीरे-धीरे साधारण चारा-दाना देना चाहिए। जानवर को तेज हवा व सर्दी-गर्मी से बचाइए और झूल उढ़ाकर राखिए ताकि सर्दी, मच्छर और मक्खी न सतावें। रहने का स्थान बिलकुल साफ हो। पीने को गुन-गुना गर्म या कुएं का ताजा पानी दीजिए।

अन्य हिदायतें—बहुत तेज बुखार में जुलाब की दवा नहीं देनी चाहिए। अक्सर बुखार अकेले बहुत कम होता है। यह दूसरी किसी बीमारी का चिन्ह होता है, इसलिए बुखार होने पर जानवर को बहुत होशियारी से देखते रहना चाहिए कि कहीं उसको और कोई बीमारी तो नहीं है। बुखार में बहुत ठण्डा पानी पीने से तथा ठण्डी हवा लगने से निमोनिया हो जाया करता है, इसका ध्यान रखना चाहिए।

(२१) सांड का ग्याभन न करना

जब कभी बहुत बड़े रेवड़ में अकेला सांड रहता है या किसी कारण से वह तादाद से ज्यादा गायों को गाभिन करता है या खुराक वगैरा या अन्य कारण से कमजोर हो जाता है, खुराक में चर्बी बनाने वाले अंश ज्यादा होने के कारण उसकी चर्बी बढ़ जाती है या अन्य हानिकारक अंशों की बहुतायत होने से तथा ढलती उमर या बुढ़ापे का समय आ जाता है तब ऐसा हो जाय।

करता है। यह बीमारी खूराक में खास खाद्योजों (Vitamins) की कमी के कारण भी हो जाया करती है।

पहचान—सांड का देर तक गाय को सूंघते रहना या बार-बार कूदने पर भी गाभिन न करना और कई बार गाभिन करने पर भी गर्भ का न ठहरना इसके लक्षण हैं।

इलाज—सबसे पहले यह देखना होगा कि किस कारण से यह बीमारी हुई है। फिर उस कारण को दूर करना चाहिए। बाद में उसको पौष्टिक खूराक और नीचे लिखी दवा खाने को देनी चाहिए।

गेहूँ, जई, या बाजरे में से कोई चीज २४ घंटे तक पानी में भिगोकर एक गीले कपड़े या बोरी में बांधकर छाया में रख दें। जब जमकर दो-दो अंगुल की कोपल (अंकुर) निकल आवे तो खिला दें।

उपरोक्त दवाई १ सेर से आध सेर सुबह व १ सेर से आध सेर शाम को जानवर के कद व वजन के अनुसार महीने सवा महीने तक लगातार खिलाइए।

खान-पान—शीघ्र पचनेवाला पौष्टिक चारा-दाना दें। यह ध्यान रखें कि चारे-दाने में जहां तक हो तेल और चिकनाई वाली चीजें या खानेवाले अनाज की चीजें न दी जावें।

अन्य हिदायतें—कुछ अरसे तक सांड को आराम देना चाहिए और गायों के साथ मिलने न देना चाहिए। यदि मोटा हो गया हो या चर्बी छा गई हो तो खूराक कम कर देना चाहिए और उससे थोड़ा परिश्रम लेना चाहिए। सिवाय सख्त सर्दी-गर्मी व बहुत ठण्डी व गर्म हवा के उसको खुले मैदान में रखना चाहिए। कुछ परिश्रम के लिए रोज उसको घुमाना चाहिए या उससे थोड़ा-सा काम लेना चाहिए। यदि कमजोरी बुढ़ापे के कारण से हो तो फिर उससे गाभन कराने का काम न लेना चाहिए।

(२१) सफेद झागवाला कीड़ा

(इसको अक्सर भौंरी भी कहते हैं)

वर्षाऋतु में या उसके बाद अक्सर खेतों या चरागाहों (गोचर-भूमि) में एक प्रकार का कीड़ा पैदा हो जाता है जिसके चारों तरफ झाग होते हैं और वह अक्सर घास इत्यादि हरे चारे पर पाया जाता है। जानवर घास या चारे के साथ उसको खा जाता है। उसके खा जाने से जहर चढ़ जाता है और जानवर बीमार हो जाता है।

पहचान—जानवर बेहोश होकर गिर जाता है। गर्दन एक तरफ डाल कर पड़ा रहता है। अपने आप खड़ा नहीं हो सकता। कभी-कभी आँखें फिर जाती हैं और मुंह से झाग आने लगता है। खाना-पीना बिलकुल बन्द कर देता है

इलाज - जानवर को चुपचाप आराम करने देना चाहिए। उसको कम्बल या झूल से ढक देना चाहिए। सर्दी और ओस से बचाने के लिए (यदि जानवर खुले में या मैदान में पड़ा हो) यथा संभव उस पर इधर-उधर दो खाटें खड़ी करके पूलों या टाट रखकर या अन्य किसी प्रकार छाया कर देनी चाहिए। फिर नीचे लिखी दवा फौरन ही देनी चाहिए और जब तक अच्छा न हो एक खूराक सबेरे और एक खूराक शाम को बराबर देते रहना चाहिए।

१ तोला पीसी हुई काली मिर्च पावभर घी मिला कर गुन-गुना गुन-गुना गरम करके पिलादें। दवा पिलाने के तीन-चार घण्टे बाद तक पानी नहीं पिलाना चाहिए।

खान-पान—कुएं का ताजा पानी दें और होश में आने के बाद उसको एकदम ज्यादा खूराक खाने को न दें। बल्कि थोड़ा शीघ्र पचनेवाला चारा-दाना दें। और फिर धीरे-धीरे साधारण खूराक दें।

अन्य हिदायतें—जानवर को तेज सर्दी-गर्मी से बचावें और उसको किसी प्रकार से दिक न करें। उसको अधिक-से-अधिक आराम पहुँचाने की कोशिश करें। जिस खेत और जंगल से चारा आता है या जहाँ वे चरते है वह भली प्रकार से देख-भाल करके जहाँ भी सफेद झागवाले कीड़े मिलें, उनको घास समेत वहां से हटाकर जला देना या गाड़ देना चाहिए।

(२३) घामड़

जानवर सख्त गर्मी में तेज धूप व लू अर्थात गर्म हवा में काम करने, फिरने और रहने से यह बीमारी हो जाती है।

पहचान—जानवर को धूप का अच्छा न लगना, हमेशा धूप से हटकर छाया या ठण्डक में खड़े होना, जल्दी-जल्दी सांस लेना, कम खाना और इसलिए दुबले होते जाना और बीमारी का ज्यादा असर होने की हालत में साधारण बुखार हो जाना इसके लक्षण हैं।

इलाज—जानवर को जहां तक हो छाया में रखें और नीचे लिखी दवाओं में से कोई एक दें—

(१) कच्चे आम पाव भर, उपले की या दूसरी किसी आंच में दबाकर पका लें। पक जाने पर आधा सेर या तीन पाव पानी में खूब मथकर छिलके गुठली निकालकर पिला दें। सवेरे-शाम दोनों समय दवा देनी चाहिए।

(२) पवांर (यह तालाबों या जहां पानी रुका रहता है वहां मिलती है। खांड बनाने वाले इसको खांड बनाने के काम में लाते हैं, इसको सेवार भी कहते हैं) आधा पाव पीसकर पावभर कच्ची खांड में घोलकर छः सात दिन तक पिलावें।

(३) सफेद तिल्ली पावभर रात को मिट्टी के कोरे बर्तन में भिगोकर सबेरे घोटकर सात दिन तक पिलावें।

(४) मेंहदी	१ तोला
जीरा सफेद	१० तोला

रात को मिट्टी के बर्तन में भिगो लें और सबेरे घोट-पीसकर नाल से पिलादें।

(५) पावभर जीरा एक पाव सरसों के तेल में खूब घोट-पीसकर रोज सबेरे ४० दिन तक पिलावें।

(६) चने के पत्तों का साग पावभर भंग के साथ पीसकर पानी में घोल कर पिलायें।

खान-पान—कब्ज करनेवाली तथा गरम तासीरवाली चीजें न देकर ठंडी तासीरवाली व शीघ्र पचने वाली चीजें खिलायें। पीने के पानी में थोड़ा कलमी शोरा डालकर पिलादें।

अन्य हिदायतें—जहांतक हो जानवर को धूप में न रखें। धूप में काम न लें और गर्म हवा व लू से बचायें।

(४२) जानवर को जहर चढ़ जाना

गफलत या भूल से या भूख में या अच्छे चारे के साथ मिली हुई कोई जहरीली चीज खा लेने से जानवर को जहर चढ़ जाता है। बाज दफा ऐसा भी होता है कि बिना फली ज्वार (चरी) इत्यादि कुछ चारे की फसलें भी ऐसी होती हैं जिन्हें खास हालत पर खा लेने से उनका जहर जानवर को चढ़ जाता है।

जानवर की खाल अनेक प्रकार के काम में आती है। उसकी कीमत अच्छी मिल जाती है। चमारों का तथा अन्य कुछ आदमियों का यही रोज-गार या जीवन-निर्वाह का तरीका है कि वे लोग जानवरों की खाल उतारकर उसे बेचते हैं। ये लोग कभी-कभी मौकों पर जानवर को जहर दे देते हैं। ऐसे आदमी गांव में ठेका ले लेते हैं कि वहां जितने जानवर मरेंगे उनकी सब की खाल उनकी ही होगी। भारतवर्ष में प्राचीन ग्राम-संगठन की प्रणाली के अनुसार गांव में जितने ढोर मरते हैं उनका चमड़ा गांव के चमार उतारकर बेचते हैं या उसकी चीजें बनाते हैं। इसी प्रकार गो-रक्षिणी संस्थायें चमारों को मरे हुए ढोरों का ठेका दे देती हैं कि अमुक रकम के बदले उनकी संस्था में जितने ढोर मरें उनका चमड़ा ले लिया करें। कभी-कभी चमार अपने लाभ के लिए मौका मिलने पर और खासकर जिन दिनों में बीमारी फैलती है उन दिनों में जानवर को जहर दे देते हैं या छूतवाली बीमारी भी फैला

दिया करते हैं ताकि उनको अधिक आमदनी हो। दुश्मनी से बाज दफा बदला लेने की गर्ज से जानवर को जहर दिया जाता है।

पहचान—आंख लाल और शरीर गरम हो जाता है। अफारा हो जाता है और बाज दफा पतला और खूनी दस्त होता है और जानवर तड़पने लगता है। जानवर की गर्दन ऐंठ जाती है और वह तड़प-तड़पकर मर जाता है।

इलाज—अलग-अलग किस्म के अलग-अलग इलाज हैं। अच्छा तो यह है कि ऐसे मौके पर सरकारी ढोरों के डाक्टर को बुलाकर दिखाना चाहिए ताकि उसका माकूल इलाज भी हो सके और यदि जान-बूझकर या दुश्मनी की वजह से जहर दिया गया हो तो मुलजिम से प्रायश्चित्त भी कराया जा सके। यहाँ पर हम अहतियातन एक-दो दवा लिख देते हैं। आरंभ में नीचे लिखी दवा देनी चाहिए—

एक सेर गरम दूध में आधा सेर घी और आधी छटांक तारपीन का तेल भली प्रकार मिलाकर पिला देना चाहिए।

इसके बाद नीचे लिखी दवा दीजिए—

केले की जड़ का रस	१ पाव
कपूर	१ तोला

भली प्रकार मिलाकर पिला दीजिए।

नोट—यदि केले का रस न मिले तो पाव भर गुलाब-जल या उबाले हुए पानी में १ तोला कपूर भली-भांति मिलाकर पिला दीजिए।

कपूर को केले के रस में या पानी में घोलने की तरकीब यह है कि उसको पहले जरा-सी शराब, तारपीन के तेल या सिरके में घोलकर फिर केले के रस में घोल देना चाहिए। तारपीन का तेल या शराब न हो तो कपूर पर पानी का छींटा दे-देकर बारीक पीस लो। जब बारीक हो जावे तो पानी में मिलाकर पिला दो।

(२५) चरी से जहर

वर्षा में जब पानी पड़ना बंद हो जाता है और हरी चरी छोटी होती है तो उसमें एक किस्म का जहर पैदा हो जाता है। उसको खाने से जानवर का जहर चढ़ जाता है। इसके लिए फौरन ही पीछे बताई दूध, घी, तारपीन के तेल वाली दवा देनी चाहिए। यदि यह सम्भव न हो तो उसके तमाम शरीर पर कीचड़ लपेट देना चाहिए। इसके बाद नीचे लिखी दवा देनी चाहिए।

काली मिर्च	१ तोला
हींग	१ ,,
सौंठ	१ ,,
अजवायन	१ ,,
काला नमक	२ ,,

सबको बारीक पीसकर आध सेर गुनगुने पानी में मिलाकर दिन में दो बार दें।

खान-पान—जहां तक हो जानवर को पानी पीने को न दें और खास कर दवा देने के दो-तीन घंटे तक तो बिलकुल नहीं देना चाहिए। खाने को चावल का मांड तीसी या चोकर की चाय या दूध देना चाहिए। अच्छे होने पर धीरे-धीरे साधारण चारा-दाना देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जहां तक हो जानवर को फौरन दवा देनी चाहिए। जितनी जल्दी दवा दी जायगी उतनी ही जानवर के बचने की अधिक उम्मीद समझनी चाहिए। ऊपर लिखी दवा देने के पश्चात् जानवर को ढोरों के डाक्टर को दिखा देना हर-हालत में अच्छा है।

(२६) लकवा या फालिज

इसमें अचानक जानवर का पिछला हिस्सा या एक ओर का धड़ सुन्न हो जाता है। यह कमर पर चोट इत्यादि लगने से सख्त गर्मी-सर्दी व बारिश

में भींगने से या सूत की तरह एक प्रकार के कीड़े रीढ़ की हड्डी के गुद्दे में हो जाने से होती है।

पहचान—इसकी पहचान यह है कि जिस हिस्से में यह बीमारी होती है उसमें सुई इत्यादि चुभने से दर्द नहीं होता। ऐसा मालूम होता है कि मानो वह हिस्सा शरीर में है ही नहीं।

इलाज—नीचे लिखी कोई दवा दें।

(१)	कुचला	४ माशे
	सौंठ	६ माशे
	हीरा-कसीस	५ माशे
	नमक	आध छटांक

सबको कूट-पीसकर आध सेर गर्म पानी में घोलकर पिलावें।

(२) २॥ तोला सरसों पीसकर गर्म पानी में मिलाकर लेप बना लें और फिर जहां पर लकवे का असर हो वहां पर लगावें।

(३)	अदरक	२ तोला
	देशी शराब	५ ,,
	भुनी हुई हींग	६ माशा

इन सबको मिलाकर दो-दो घंटे बाद दें।

खान-पान—दूध और मुलायम, शीघ्र पचने वाली घास खाने को देनी चाहिए। थोड़ा लाभ होने पर दलिया, चोकर इत्यादि दे सकते हैं पीने के लिए गुनगुना पानी दें।

अन्य हिदायतें—जानवर को अधिक-से-अधिक आराम पहुँचाने की कोशिश करनी चाहिए। उसके रहने के स्थान को साफ रखना चाहिए। बिछाली लगा देनी चाहिए ताकि आराम से बैठे। जानवर यदि खुद करवट न ले सके तो करवट दिलवाते रहना चाहिए।

(२७) गठिया या बाय

इस बीमारी में खून में विकार पैदा होकर पुट्ठों और जोड़ों में सूजन हो

जाती है और सख्त दर्द पैदा हो जाता है। एकदम गर्मी में ठण्ड लगने से सील या नमी की जगह में जानवर के काफी अर्से तक खड़े रहने से यह बीमारी हुआ करती है। खराब चारा-दाना और गन्दा पानी पीने से भी हो जाती है।

पहचान—जोड़ों और पुट्ठों में दर्द हो जाता है। एक-दम से सूजन हो जाना और जानवर का बेचैन हो जाना, दर्द एक जगह से दूसरी जगह बदलते रहना इसकी पहचान है। बाज दफा जब कभी बहुत तेजी से बीमारी होती है तो बुखार भी हो जाता है।

इलाज—जानवर को सर्दी और सील या भीगने से बचाना चाहिए। आरम्भ में एक जुलाब दे दीजिए। इसके लिए नीचे लिखी कोई दवा दे सकते हैं—

(१)	सरसों या अरण्डी का तेल	८ छटांक
	सोंठ	आधी छटांक

सोंठ को कूट-पीसकर तेल में मिलाकर दें।

(२)	खारी नमक	८ छटांक
	सोंठ	आधी छटांक

दोनों को कूट-पीसकर आध सेर गुनगुने पानी में घोलकर दें।

उपरोक्त जुलाब देने के बाद नीचे लिखी दवा खाने के लिए दें।

(३)	गुड़	४ छटांक
	सोंठ	१ तो०
	अजवायन	५ तो०
	मेथी	२ छटांक
	भंग	१ तो०

सोंठ, अजवायन, मेथी को बारीक पीस लें और भंग को भी थोड़े पानी में डालकर सिलबट्टे पर खूब बारीक पीस लें। सबको गुड़ में मिलाकर एक पाव दूध में घोलकर पकालें और गुनगुना-गुनगुना जानवर को पिला दें।

दूसरे रोज एक वक्त नीचे लिखी दवा और सबेरे-शाम उपरोक्त दूध की औटी दीजिए—

(४)	पलास पापड़ा	१ तोला
	अनार की छाल	१ ,,
	सौंफ	१ ,,
	अमलतास	१ ,,

आध सेर पानी में पकाकर जब पाव भर रह जाय तो गर्म-गर्म भूखे पेट दें।

नीचे लिखी किसी दवा से मालिश करके गर्म रूअड़, कपड़े या ईंट से सेकें। सेंक के बाद अगर सम्भव हो तो उस जगह पर इसी को बांधकर जानवर के ऊपर झूल डाल देनी चाहिए।

(५) आक के पत्ते कूटकर रस निकालें और सेर भर रस में एक पाव तिल का तेल मिलाकर पकावें। जब रस जल जाय तो उसे छान लें और इस तेल की मालिश करें।

(६) १ तोला कपूर को एक छटांक तारपीन के तेल में भली प्रकार मिलाकर मालिश करें।

(७) एक पाव धतूरे के पत्ते का रस तिल के आध सेर तेल में मिलाकर पकावें। पानी जल जाय और खालिस तेल रह जाय तो छान लें और मालिस करें या २ तोला धतूरे के बीज बारीक कूट-पीसकर एक पाव तिल के तेल में मिलाकर १५-२० दिन तक धूप में रखें। और फिर छानकर शीशी में भर लें इसकी मालिश करें।

(८) एक पाव लहसुन को खूब कुचल लें या सिल-बट्टे पर पीस लें फिर उसे आध सेर तिल के तेल में मिलाकर खूब पका लें। जब भली प्रकार पक जाय तो कपड़े में डालकर छान लें और उसकी मालिश करें।

(९) दो सेर दूब-घास को दस सेर पानी में उबाल कर बफारा दें और गर्म-गर्म दुखती जगह पर डालें। इसी प्रकार पलास के फूलों को भी पानी में उबाल कर काम में ला सकते हैं।

जानवर को लाभ होने के बाद भी थोड़े दिन तक नीचे लिखी ताकत की दवा खिलानी चाहिए—

हीरा कसीस १ तोला सौंठ १ तोला चिरायता २ तोला

या

भंग १ तोला खाने का सोडा १ तोला

या नमक १॥ तोला

आध सेर पानी में घोलकर या गुड़ की डली और शोरे में मिलाकर सात दिन तक दें।

खानपान—पीने को गुनगुना पानी, खाने को शीघ्र पचनेवाली घास चाय, दलिया दूध इत्यादि। अच्छे होने पर धीरे-धीरे साधारण खूराक बीच में और अच्छे होने के एक दो महीने बाद तक भी चना, लेभिया, मटर खेसारी इत्यादि या अन्य द्विदल जाति के कब्ज और बादी करने वाला चारा न दें।

अन्य हिदायतें—अक्सर यह बीमारी खाने-पीने की खराबी की वजह से भी हो जाती है इसलिए पीने का पानी बदल दीजिए अर्थात् दूसरी जगह का पानी पीने को दें औ खाने का चारा-दाना भी जहां तक हो बदलकर दूसरी चीज दें। जानवर को नमी और ठण्ड से बचावें। उसके नीचे भली प्रकार बिछाली या रेत बिछा दें ताकि वह आराम से बैठ सके। आराम मिलने से जानवर जल्दी नीरोग होगा।

: ६ :

मादा पशुओं का गर्भधारण, ब्याना और खास बीमारियां

मादा (Female) पशु प्रायः नर (Male) पशुओं से कमजोर और नाजुक होते हैं। उनको नर की अपेक्षा जल्दी रोग सताता है। इसलिए उनकी देख-भाल, रहन-सहन; खाने-पीने में विशेष होशियारी रखनी चाहिए। दूध देने वाले जानवर की सेवा-टहल में जरा-सी चूक होने से ही बड़ी हानि होती है। जब पशु ब्याता है तब उसकी हालत बड़ी कमजोर होती है। उस समय जरा-सी नाजानकारी और असावधानी से न मालूम क्या रोग उत्पन्न हो सकता है। उस समय खासकर सब बातें समझकर किसी जानकार आदमी की सहायता से पशु को ब्याने में मदद करनी चाहिए और ब्याने के बाद भी १०-१५ दिन तक उसकी खास देख-भाल और सेवा-टहल करनी चाहिए।

(१) पशु के गाभिन होने से ब्याने तक का संक्षिप्त विवरण

भारतवर्ष में प्रायः गायें, भैंसे वगैरह करीब दो-ढाई वर्ष से चार या साढ़े चार वर्ष तक की उम्र में पहली बार गाभिन होती हैं। पहली बार जल्दी या देर से गाभिन होना उसके बचपन की खुराक, उसकी बढ़ोतरी तथा नस्ल पर निर्भर करता है।

गाय गाभिन होने के बाद २८० से २९० दिन तक में बच्चा देती है। अगर ८ महिने के पहले ब्या जाती है या उसका बच्चा बाहर आ जाता है तो वह गर्भ-पात कहलाता है। प्रायः वह बच्चा नहीं जीता।

गाय ब्याने के बाद हर इक्कीसवें दिन थोड़ा बहुत गर्माती है। ब्याने के करीब दो महिने बाद जब तक वह गाभिन न हो तेजी के साथ हर एक

इक्कीसवें दिन गर्माती है। उस समय उसको सांड से मिलाना चाहिए।

जिस गाय को पांच छः महीने का गर्भ हो उसको गर्भ पालने के लिए कुछ अधिक खुराक की आवश्यकता होती है और वह आवश्यकता जबतक वह ब्याती नहीं बराबर बढ़ती जाती है। इसलिए सब को इस समय अधिक खुराक देनी चाहिए वरना गाय भी कमजोर हो जायगी और बच्चा भी कमजोर पैदा होगा और जब वह ब्यायगी तो दूध भी कम देगी। इसलिए उस समय उसकी खिलाई-पिलाई उदारता-पूर्वक करनी चाहिए।

गाभिन होने के बाद जो उछलने-कूदनेवाली होती है वह गाय भी पहले के मुकाबले में शांत हो जाती है और यदि गर्भ ठहर जाता है तो ब्याने के समय तक गर्म नहीं होती। कभी-कभी गाय एक बार गाभिन होने के बाद फिर दुबारा और तिबारा गर्म हुआ करती है। उस हालत में यह समझना चाहिए कि वह गर्भवती नहीं है और इसलिए उसको सांड से मिला देना चाहिए। जब गाय गाभिन हो जाय तब उसे फौरन ही कोई विशेष पौष्टिक चीज खाने को दे देनी चाहिए। इससे गर्भ ठहर जाता है। इस समय एक दो मास तक कोई गर्म तासीर की चीज खाने को नहीं देनी चाहिए। यह पहचानना कि गाय ग्याभन हो गई है या नहीं बड़ा कठिन है। तीन महीने बाद डाक्टर लोग गर्भाशय में हाथ डालकर जांचकर बता सकते हैं। सर्व साधारण को इस जांच की कोई आवश्यकता नहीं होती। इसलिए हम यहां उसका कोई जिक्र नहीं कर रहे हैं। पांच-छः महीने के बाद तो गाय के चलते फिरते और खासकर के पानी पीते समय बच्चा हिलता हुआ दिखलाई दे जाया करता है और गाय की शारीरिक अवस्था से भी अन्दाजा हो जाता है। ज्यों ज्यों गर्भ की अवस्था बढ़ती जाती है उपरोक्त चिन्ह स्पष्ट होते जाते हैं।

गाय को ब्याने के करीब डेढ़-दो मास पहले दूध से सुखा देना चाहिए ताकि उसको कुछ समय आराम मिल जाय और दूध देने से जो थकावट और कमजोरी हो जाती है उसको पूरी कर सके। ऐसा न होने से गाय के स्वास्थ्य पर

खराब असर पड़ता है और वह अगले बियात में दूध भी कम देती है। अच्छा तो यह है कि दूध से सुखाने के बाद गाय को अन्य ढोरों से अलग रखा जाय और इसके खान-पान और सेवा-टहल का विशेष ध्यान रखा जाय। यदि यह संभव न हो तो कम-से-कम २०-२५ रोज पहले तो उसको अन्य ढोरों से अलग रखना ही चाहिए। अलग रहने का स्थान ऐसा हो जिसमें भली प्रकार रोशनी आती हो और हवा का प्रवेश हो परन्तु हवा का झोंका सीधे जानवर को न लगता हो और बैठने का स्थान बिलकुल सूखा तथा मुलायम या गुदगुदा हो ताकि जानवर आराम पा सके और अन्य जानवरों के झोंकने सींग मारने, लड़ने का डर न रहे। इस मौके पर जानवर का बहुत ज्यादा दूर चरने जाना, चलना, फिरना, कूदना हानिकारक होता है। जरा-सी चोट या धक्के इत्यादि से जानवर को नुकसान पहुँचने का डर रहता है।

ब्याने के दस-पन्द्रह रोज पहले जानवर के पुट्ठे और कोंख बच्चे के बोझ से झुक से जाते हैं और उसके लेवे में दूध भरना आरम्भ हो जाता है इसलिए वह फूला हुआ मालूम देता है। पूंछ की जड़ के पास दोनों तरफ खड्ढा-सा हो जाता है और सूजन दिखाई देने लगती है। इस समय गाय को डेढ़ पाव तिल या सरसों का तेल पिला देना चाहिए ताकि जानवर का कोठा साफ रहे और ब्याने में तकलीफ कम हो तथा आसानी पैदा हो जावे। इस समय उसको ब्याने के स्थान पर रखना चाहिए।

ब्याने के एक रोज पहले अगर जानवर को ऊपर लिखे अनुसार कोई तेल पिला दिया जाता है तो जानवर के ब्याने में तकलीफ कम होती है। ज्यों-ज्यों गाय के ब्याने का समय नजदीक आता जाता है गाय की बेचैनी बढ़ती जाती है। इस समय इसको ब्याने के ही स्थान पर रखना चाहिए। गाय बेचैन दिखाई देती है और बराबर गोबर पेशाब करती है। योनि से पानी की एक थैली निकल कर फूट जाती है जानवर का दर्द और भी बढ़ जाता है।

गाय कमर को तानकर पिछले पैरों को झुकाकर या बैठकर ब्याती है। ब्याने के समय बच्चे का मुंह सामने अगली टाँगों के ऊपर रखा हुआ

निकलता है। ब्याने के बाद गाय को कुछ गर्म और पौष्टिक तथा शीघ्र पचने वाली चीज खिलानी चाहिए ताकि उसको फौरन ही कुछ ताकत मिल सके। ब्याने के छः सात घन्टे तक प्रायः जेल डाल देती है। जेल को किसी सुरक्षित स्थान में गहरा गाड़ देना चाहिए ताकि कुत्ता इत्यादि कोई जानवर उसको निकालकर गन्दगी न फैलावे।

इस वर्णन (विवरण) में हमने साधारण अवस्था का वर्णन किया है। इसमें जो कुछ असाधारण अवस्था पैदा हो जाती है उसको दूर करने के उपाय या इलाज आगे मिलेगा।

गाय के ब्याते ही बच्चे को किसी कपड़े के टुकड़े से पोंछकर साफ कर देना चाहिए और एक साफ की हुई तेज कैंची या चाकू जिसको पहले से ही नीम के पत्तों के पानी में १५-२० मिनट तक उबाल लिया गया हो और जो उसी पानी में अभीतक रखा हुआ हो, निकालकर बच्चे की सूंडी या नाभि में जो एक लम्बी सुतली जैसी लटकती है उसको करीब १ इंच नाभि के पास से छोड़-कर काट लेना चाहिए और जब तक वह सूख न जाय छः-सात रोज तक एक बार रोज कपूर मिला हुआ उस पर तेल लगाते रहना चाहिए। बच्चे के खुर के आखिरी हिस्से में कुछ मुलायम हिस्सा होता है उसे हटाकर वहां कपूर मिला हुआ तेल या साफ सरसों के तेल में साफ रुई का फाहा भिगो-कर दो-चार बूंद हर एक कान, नाक और मुंह में डालदेना चाहिए। बच्चे को थपकी देकर खडा करने की कोशिश करनी चाहिये। यदि खड़ा होने में उसको कोई दिक्कत हो तो उसके चारों पैर ऊपर से नीचे हाथ से आहिस्ता-आहिस्ता मल दीजिए। इससे बच्चे के पैरों में ताकत आ जायगी और वह खड़ा हो जायगा।

गाय बच्चे को चाटेगी उसे चाटने दीजिए। गाय के ब्याने से जो स्थान इधर-उधर मैला कुचैला हो गया है उसे बिलकुल साफ करके सूखा कर दीजिए। नीम के उस गुनगुने पानी से जिसमें कैंची उबाली गई थी गाय का लेवा व थन धीरे-धीरे साफ कर दीजिए और पैर वगैरा भी जहां तक हो साफ

कर दीजिए। गरम पानी में ही कपड़ा तर करके उसको निचोड़कर इससे गाय के हरएक गीले अंग को सुखा दीजिए। अब सुहागा या कपूर मिला तेल, घी या मक्खन जो कुछ आपके पास हो चारों थनों पर लगाकर उनका आधा-आधा दूध निकाल लें। बाद में धीरे-धीरे बच्चे के मुंह में एक-एक थन दीजिए और उसको दूध पीना सिखाइये। वह जल्दी ही दो-चार मिनट में दूध पीना आरम्भ कर देगा। उसको दूध पिलाने के बाद बाकी का दुह लीजिए।

एक-दो रोज तक गाय को ठण्डी, गर्म व तेज हवा में बाहर नहीं निकालना चाहिए। जाड़े के दिनों में अगर ज्यादा हवा और ठण्डक न हो तो घन्टे-दो-घन्टे के लिए बाहर दोपहर के समय धूप में निकाल देने में कोई नुकसान नहीं। इस प्रकार रात के समय गर्मियों में यदि सख्त गर्मी हो तो गाय को मकान के बाहर रखा जा सकता है।

गाय को ब्याने के बाद यथाशीघ्र उसके वजन के अनुसार १२ छटांक गुड़ १ छटांक अजवायन, १ तोला सौंठ १ छटांक मेथी, १॥ सेर पानी में खूब उबालकर औंटी बनाकर पिलानी चाहिए। औंटी पिलाने के दो-तीन घंटे बाद यदि प्यास हो तो उसको थोड़ा गुनगुना पानी पिलाया जा सकता है।

खाने को पहले तीन दिन सूखी घास, बारीक सूखी जुआर की कुट्टी, सूखी जई का चारा या अन्य कोई सूखा शीघ्र पचनेवाला चारा देना चाहिए। उपरोक्त औंटी दोनों वक्त बच्चे को दूध पिलाने के बाद जो दूध निकले उसमें मिलाकर पिला देना चाहिए। तीन दिन के बाद शीघ्र पचनेवाला चारा और दोनों समय नीचे लिखा दलिया खिलाइए:—

६ छटांक से ८ छटांक गुड़ और तीन पाव से एक सेर गेहूँ या बाजरा या चोकर में से कोई चीज, आधी छटांक अजवायन और आधा तोला सौंठ में अन्दाज का पानी मिलाकर खूब उबालो। जब ठीक पक जाय तब बच्चे को दूध पिलाने के बाद जो दूध बचे उसमें मिलाकर खिला देना चाहिए। यह दलिया कम-से-कम दो-तीन रोज अवश्य देना चाहिए और हो सके तो सात दिन तक दें। पांच दिन के बाद धीरे-धीरे दाना इत्यादि भी थोड़ा-थोड़ा दिया जा

सकता है। पांचवें दिन दोनों वक्त आध-सेर चोकर छठे-दिन दोनों समय तीन पाव चोकर, सातवें दिन दोनों समय एक सेर चोकर, आठ दिन के बाद एक सेर चोकर और एक सेर अन्य दाना देना चाहिए। फिर धीरे-धीरे बढ़ाकर जो भी खल-दाना गायों को दिया जाता है, २१ दिन तक पूरी मिकदार में देना आरम्भ कर देना चाहिए।

बच्चे को यदि सम्भव हो तो ३-४ रोज तक गाय के मुंह के पास ही रखना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि जगह इतनी तंग न हो कि गाय के उठने-बैठने में बच्चे को चोट वगैरा लगने का डर हो। बच्चे को पहले रोज तीन-चार दफे थोड़ा-थोड़ा करके दूध पिलाना चाहिए। बाद में जब भूख लगेगी वह खुद ही पी लेगा। दिन में एक बार सरसों का साफ तेल रुई का फोहा भिगोकर बच्चे के मुंह में तोला-दो-तोला निचोड़ देना चाहिए। इस प्रकार तीन-चार रोज बच्चे को मां के पास रखकर फिर अलग स्थान पर रखना चाहिए।

गाय को जबतक साधारण चारा-दाना न आरम्भ किया जाय तबतक जच्चाखाने या ब्याने की जगह में ही रखना चाहिए। इस समय जच्चाखाना मैला हो जाता है। उसे फौरन साफ करके सुखा देना चाहिए। इस समय इसको जितना गरम, सूखा और साफ-सुथरा रखा जायगा उतना ही गाय को थनों या लेवे के सूजने की संभावना से तथा अन्य ब्याने के समय की बीमारियों से सुरक्षित रखा जा सकेगा।

ब्याने के समय बच्चे का ठीक स्थिति में न होना

गाय किस प्रकार ब्याती है इसका संक्षिप्त हाल हम पीछे लिख चुके हैं। यहां पर यह बतला देना चाहते हैं कि बच्चे के निकलने का ठीक तरीका क्या है? सबसे पहले बच्चे के दोनों अगले पैर दिखलाई देते हैं, जिनके ऊपर बच्चे का मुंह खुरों पर टिका हुआ होता है। ऐसी हालत में गाय के ब्याने में कोई विशेष तकलीफ नहीं होती, परंतु बाज दफे किसी कारण से बच्चा साधारण स्थिति में न होकर इधर-उधर हो जाता है। उसमें गाय को ब्याने

पैरों के खुरों पर टिका दीजिए और उसे आगे को कर दीजिए। जब वह योनि के मुंह पर आ जाय तब छोड़ दीजिए। गाय अपना जोर मारकर बच्चे को अपने आप निकाल देगी। यदि ऐसा न हो तो धीरे से दोनों हाथों से अगले पैर और सिर को थामकर बच्चे को बाहर खींच लीजिए।

दूसरी हालत में भी बच्चे को धीरे से पीछे ढकेल कर उसके पैर धीरे से उसके मुंह के नीचे ठीक स्थिति में करके ऊपर बताये अनुसार गाय को अपने आप ब्याने दीजिए। यदि थोड़ी देर तक अपने आप न ब्यावे तो धीरे से उपर बताये गये तरीके से बाहर खींच लीजिए।

तीसरी हालत ज्यादा कठिनाई से ठीक होती है। इस हालत में भी बच्चे को धीरे-धीरे पीछे ढकेलिए और उसके अगले पैर आगे को करके धीरे से एक फीता या डोरी से, जो पहले से ही नीम के पत्तों के पानी में आध घण्टा तक उबाली हुई तथा बिलकुल साफ और चिकनी की हुई हो, बच्चे के खुरों के पास बांध दीजिए। फिर एक दूसरा आदमी धीरे-धीरे इशारे से फीता या डोरी को खींचे और आप हाथ के इशारे से उसको बाहर की ओर कीजिए। बच्चे के बाहर आने के पहिले फिर देख लेना चाहिए कि अगले पैरों पर सिर ठीक स्थिति में टिका हुआ है या नहीं। इस प्रकार ठीक स्थिति में करके बच्चे को धीरे से खींच लेना चाहिए।

चौथी हालत में भी बच्चे को इशारे से पीछे ढकेलकर उसको पलट देना चाहिए अर्थात् ठीक स्थिति (Position) में करके निकालना चाहिए।

बच्चे को जहां तक हो इशारे से धीरे-धीरे ठीक स्थिति (Position) में करके जल्दी-जल्दी निकालना चाहिए अन्यथा ज्यादा देर होने से बच्चे के मर जाने का डर होता है। बच्चा मर जाय तो वह फूल जाता है और बिना आपरेशन के बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। उसका जहर मां को भी चढ़ने का डर रहता है। यदि बच्चा किसी तरह भी निकाला न जा सके तो पशुओं के डाक्टर को बुलाकर आपरेशन करवा के निकलवा देना चाहिए।

बच्चे के निकाल देने के बाद फोरन ही गाय को जल्दी-से-जल्दी ताकत पहुँचानेवाली दवा देनी चाहिए। इसके लिए पाव भर घी और आधी छटांक काली मिर्च दीजिए।

इसके घंटे-दो-घंटे बाद नीचे लिखी ओंटी दीजिए—

गुड़	एक से दो पाव
अजवायन	२ छटांक
सोंठ	१ छटांक

डेढ़ पाव पानी में खूब पकाकर पिला दीजिए। फिर पांच-छः घण्टे बाद पाव भर घी, १ तोला काली मिर्च, १ तोला भंग, १ तोला सौंठ मिलाकर दीजिए। जिस प्रकार गर्भ-पात (Abortion) में जेल न डालने की हालत में दोनों समय डूश करते हैं उसी प्रकार चार-पांच रोज तक डूश कीजिए और यदि गाय के अन्दरूनी हिस्से में किसी प्रकार की खराबी का अन्देशा हो तो आगे पर जो नुसखा (सड़ाव) देने के लिए लिखा है, वह दीजिए।

खान-पान—पहले दिन गाय को गुड़ मिलाकर तीन-चार बार एक सेर दूध दीजिए और खाने को मुलायम सूखा चारा दीजिए। बाद में गर्भ-पात (Abortion) जैसा खाने-पीने को दीजिए। अगर कुछ बुखार हो गया हो तो पीने के पानी में कलमी शोरा डालकर पिलाइए।

अन्य हिदायतें—गर्भ-पात जैसी। उसके अलावा गाय को तेज सर्दी-गर्मी से बचाना चाहिए। इस समय गाय की हालत नाजुक होती है इसलिए उसको अधिक-से-अधिक आराम देने की कोशिश करनी चाहिए।

नोट—एक मित्र का अनुभव है कि यदि गाय को कष्ट हो रहा हो और बच्चा ठीक स्थिति में होने पर भी बाहर न आता हो तो ढाई तोला निर्वसी पानी में घोलकर जरा गर्म करके पिला देने से बच्चा फौरन बाहर आ जाता है।

मरा बच्चा पैदा होना

यदि बच्चा पेट में मर जाय तो फौरन ही ढोरों के डाक्टर को बुलाकर आपरेशन द्वारा बच्चे को निकलवा देना चाहिए। यदि वह प्राप्त न हो तो

तेज चाकू को १५-२० मिनट तक नीम के पत्तों में पानी के साथ उबालकर और उस पानी से हाथ धोकर नीम का या कपूर मिला मीठा तेल हाथ पर चुपड़ कर, उस चाकू से मरे हुए बच्चे के छोटे-छोटे टुकड़े करके निकाल देना चाहिए और बाद में पिछली बीमारी में जो दवाइयां व इश इत्यादि बताई हैं, वे देनी चाहिए।

बच्चा गिरा देना (Abortion)

गर्म तासीर की चीजें ज्यादा खाने से, तेज दौड़ने, कूदने-फांदने, आपस में लड़ने, चोट लगने, किसी वजह से डर जाने, बहुत ज्यादा कमजोरी इत्यादि से पूरे समय के पहले ही गाय का बच्चा गिर जाता है। बाज दफा खून में विकार हो जाने के कारण भी बच्चा गिर जाता है। इसके अलावा यदि बिना किसी वजह के गाय बच्चा गिरा दे और इस प्रकार और भी आस-पास की गायों ने बच्चा गिरा दिया हो तो छूत की बीमारी समझनी चाहिए उसका विनाश छूत की बीमारियों में देखिए। यहां हम बिना छूत की बीमारी का जिक्र करते हैं।

पहचान—यदि गाभिन जानवर लगभग = महिने के पहले बच्चा गिराने की हरकत जाहिर करे तो उसको तन्दुरुस्त जानवरों से फौरन अलग कर देना चाहिए और यह समझना चाहिए कि बच्चा गिरने का अन्देशा है।

इलाज—चावल के आध सेर गर्म मांड में ४ माशे अफीम या १ माशा धतूरे के बीज भंग की तरह सिल पर पीसकर अच्छी तरह से घोलकर पिला दीजिए। पांच-पांच या छः-छः-घंटे के बाद दो-तीन खुराक दीजिए। अगर इससे बच्चा रुकना होगा तो रुक जायगा। यदि बच्चा गिर ही जाय तो बच्चे को तथा गाय के स्थान के मैले-कुचैले को खेत इत्यादि दूर जगह में तीन-चार फिट गहरा गड्ढा खोदकर गाड़ देना चाहिए। जिस जगह पर गाय बंधी हो उसको एकदम साफ करके उस पर या तो भली प्रकार आग जला देनी चाहिए या बुझा हुआ चूना बिखेर देना चाहिए। गाय को सफाई के बाद ब्याने पर जो औंटी इत्यादि दी जाती है वह दीजिए

ताकि वह जेल डाल दे। अक्सर बच्चा गिरने (Abortion) के बाद गाय आसानी से जेल नहीं डालती, इसलिए एक रोज तक उसको दो-तीन बार जेल डालने की दवा (जो आगे दी जायगी), दीजिए। यदि दो-तीन बार उपरोक्त दवा देने पर भी जानवर जेल डालता न दिखाई दे तो दूसरे दिन साबुन से हाथ धोकर और हाथों में नीम या कपूर या तारपीन का तेल मिला हुआ मीठा तेल चुपड़कर धीरे-धीरे हाथ से एक दो बार करके निकाल दीजिए और जेल निकालने के बाद गाय को चार-पांच रोज तक बराबर डूश दीजिए (पृष्ठ १२ पर देखिए) तथा नीचे लिखी दवा पिलावें—

गूलर	८ छटांक
राई	२ छटांक
सरसों की खल	४ छटांक
नमक	२ छटांक
छाछ या मट्ठा	२ छटांक

गूलर और सरसों की खल को कूट लें। राई और नमक को पीस लें। छाछ में मिलाकर गर्म जगह में रख दें। एक दिन बराबर धूप में ढका रहने दें। इससे वह सब सड़ जावेगी। जब सड़ जाय तो आधा सेर रोज नाल से पिला दें।

खान-पान—गाय को ब्याने के बाद जो खाने-पीने को देते हैं करीब-करीब वही देना चाहिए। और चार-पांच रोज के बाद साधारण खुराक आरम्भ कर सकते हैं।

अन्य हिदायतें—सफाई का खयाल रखना चाहिए। यह मालूम होते ही कि गाय को गर्भ-पात होने वाला है उसको दूसरे जानवरों से अलग कर देना चाहिए।

कभी-कभी निर्वसी से मरा बच्चा भी निकल आता है। २॥ तोला निर्वसी पानी में घोलकर जरा गरम करके देनी चाहिए।

जेल न गिरना

तन्दुरुस्त गाय प्रायः हमेशा ब्याने के दस-पन्द्रह घंटे के अन्दर जेल डाल

देती है। कमजोर, बीमार या जिनको गर्भ-पात की बीमारी हुई हो वह जेल ठीक समय पर नहीं डाला करती। गाय को ब्याने के बाद जो औंटी दी जाती है उसके तीन-चार घंटे तक यदि जेल न डाले तो दुबारा-तिबारा वही औंटी देनी चाहिए। इस पर भी यदि न डाले तो नीचे लिखी दवाएं देनी चाहिए:—

इलाज—नीचे लिखी दवाओं में से कोई एक दवा आठ-आठ दस-दस घंटे बाद दीजिए।

(१) बांस के पत्ते पाव भर से आध सेर तक
खारी नमक एक पाव तक

दोनों चीजों को खूब उबालकर पिलाइए।

(२) गुड़ आधा सेर
बेलगिरी आधा सेर
सौंठ १ तोला
अजवायन २ तोला

औंटी बनाकर पिलावें। दिन में दो-तीन खुराक से अधिक न दें।

(३) अन्त में उपरोक्त औंटी में बनाने के समय दो माशे गाजर के बीज सौंठ-अजवायन के साथ मिलाकर पिलावें।

यदि इससे भी जेल न गिरावे और गाय को ब्याये दो-तीन रोज हो जांय तो जेल को हाथ से निकालने की कोशिश करनी चाहिए।

इनके अलावा एक होम्योपैथिक दवा जो मेरी आजमाई हुई है इस बीमारी में बहुत कामयाब रही है। वह गांव में नहीं मिलती, बड़े कस्बे या शहर में होम्योपैथिक डाक्टर या हस्पताल में मिलती है। जिसके यहां चार-पांच जानवर हो उसे एक औंस लाकर किसी ठण्डे और साफ स्थान में किसी डिबिया या साफ बर्तन मे बन्द करके रखनी चाहिए। इस दवा का नाम 'पलसाटिला-मदर टिंचर' है।

गाय के ब्याने और बच्चा डाल देने के बाद घी और काली मिर्च देने

के पहले या बाद में ५ से ७ बूँद हर तीसरे घंटे के बाद कुएं के ताजा आधी छटांक पानी में डालकर गाय का मुंह खोलकर उसमें डाल दीजिए या १ तोला सत्तू साफ कागज पर रखकर उसमें ५ से ७ बूंद दवा डालकर गाय की जबान पर डाल दीजिए। इस प्रकार ५ खुराक रोज देनी चाहिए। इससे दो-तीन रोज में गाय यदि एक साथ नहीं तो थोड़ा-थोड़ा करके जेल डाल देगी। अन्यथा जेल को उपरोक्त विधि से अर्थात् हाथ से निकालना और डूश देना चाहिए।

जेल को हाथ से निकालने की तरकीब—पहले नाखून काट लें। फिर होशियारी से कोहनी तक हाथ धोकर १ छटांक मीठे तेल में ३ माशे नीम का तेल या एक माशा कपूर मिला लें और उससे हाथ भली-भांति चुपड़कर धीरे-धीरे गाय की योनि में हाथ डालकर बहुत होशियारी से हाथ से धीरे-धीरे जेल को, जिस जगह वह चिपकी हुई हो, धीरे-धीरे निकाल लीजिए। इसके बाद गाय को दोनों वक्त १॥ सेर पानी में नीम के पत्ते उबालकर या फिनाइल या कुएं में डालने की लाल दवा मिलाकर ५ या ७ दिन तक डूश करते रहें। (डूश की विधि पृष्ठ १२ पर देखिए) इसके बाद दो-तीन रोज तक नीचे लिखा सड़ाव या पलमाटिला (होम्योपैथिक दवा) देते रहना चाहिए:—

गूलर कच्चा	आधा सेर
राई	आधा पाव
सरसों की खल	एक पाव
नमक	आधा पाव
छाछ	तीन सेर

गूलर और सरसों की खल को कूट लें। राई और नमक को पीस लें। सबको छाछ में मिलाकर किसी गर्म जगह में रख दें। एक-दो दिन बराबर धूप में ढकी रहने दें। एक दिन में चीजें सड़ जायंगी। तब आध सेर रोज नाल से पिला दें।

खान-पान—गाय के ब्याने पर जो कुछ खान-पान देते हैं वही देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को आराम से मकान के अन्दर पुआल वगैरह बिछाकर रखना चाहिए। सफाई का खास ध्यान रखना चहिए।

प्रसूत या जच्चा का बुखार (Septic fever)

कभी-कभी गाय के ब्याने के बाद कोई खराबी हो जाने तथा गाय की बच्चादानी में हाथ डालने में कोई खरोंच वगैरह लग जाने या किसी प्रकार गन्दगी के प्रवेश हो जाने से बुखार हो जाया करता है।

पहचान—गाय का एकदम सुस्त हो जाना, खाना-पीना बन्द कर देना। एक तरफ गर्दन डालकर पड़ा रहना, एकदम कमजोर हो जाना, बुखार रहना। इसमें कभी-कभी कान ठण्डे हो जाते हैं और शरीर भी ठण्डा दिखाई पड़ता है। तब गाय की हालत ज्यादा खराब समझनी चाहिए।

इलाज—गाय को तेज गर्म-सर्द हवा से बचायें और उस पर झूल डाल दें ताकि मक्खी-मच्छर तंग न करें। उसके नीचे व आस-पास का स्थान बिलकुल साफ और सूखा रखें। बैठने के स्थान पर खूब अच्छी बिछाली देकर उसको बिठायें। दोनों वक्त डूश (विधि पृष्ठ १२ पर देखिए) करने के अलावा ब्याने के बाद जो औंटी दी जाती है वह एक वक्त उसे दें। दूसरे वक्त—

सौंठ	१ हिस्सा
अलसी	१ हिस्सा
काली मिर्च	१ हिस्सा

नौसादर आधा हिस्सा, सबको कूट-पीस लें; ४ तोला दवा एक पाव गुड़ में रखकर खिलाना चाहिए। पीने को गुनगुना पानी १ तोला कलमी शोरा मिलाकर दें।

खान-पान—अगर खाये तो सूखी मुलायम शीघ्र पचनेवाली घास,

दूध और चोकर की या अलसी की चाय दीजिए। पीने को गुनगुना पानी। बुखार उतरने के बाद थोड़ा-थोड़ा चोकर या दलिया दूध मिलाकर दिया जा सकता है। इसके बाद धीरे-धीरे साधारण खुराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—इस समय गाय की हालत बड़ी नाजुक होती है। उसे जितना अधिक-से-अधिक आराम पहुँचाया जायगा और वहां अधिक-से-अधिक जितनी सफाई रखी जायगी उतनी ही गाय के बचने की सम्भावना ज्यादा है। गाय को एक करवट आठ-दस घंटे से ज्यादा नहीं पड़े रहने देना चाहिए। इसलिए उसको चौबीस घण्टे में दो-तीन बार एक करवट से दूसरी करवट बदलते रहना चाहिए। उसका शरीर कहीं से गीला हो गया हो तो फौरन सुखा देना चाहिए और कपड़े या टाट से पोंछकर बिलकुल साफ रखना चाहिए।

बाक (लेवा) और थन का सूजना

यह बीमारी प्रायः अधिक दूध देनेवाली गायों में उस वक्त जबकि दूध का ज्यादा-से-ज्यादा जोर होता है और लेवा उसके जोर से तन जाता है, हुवा करती है। ऐसे समय गाय के सीली या गीली जगह में बैठने से, सर्द गर्म हो जाने से, लेवे में दूसरी गाय के सींग या लात मार देने से या थनों में दूध पीते हुए बच्चे के जोर से सिर मार देने से उसका लेवा फूल जाता है। अक्सर गाय को मेले या प्रदर्शिनी इत्यादि में दिखाने के लिए या अन्य किसी कारण से यथोचित समय से देर में दूध दुहा जाता है तब भी यह बीमारी हो जाती है। कभी-कभी जिस प्रकार गाय का लेवा सूजता है उसी प्रकार चोट इत्यादि और सील, ठण्ड या गर्मी से थन भी सूज जाया करता है। यदि उसका पूरा-पूरा इलाज और देखभाल नहीं होती तो सूजन बढ़ जाती है। उसमें एक प्रकार की बीमारी के कीटाणु पैदा हो जाते हैं जो ऊपर लेवे तक फैल जाते हैं और उसकी वजह से लेवा भी सूज जाता है। वह बीमारी चाहे थनों से आरम्भ हुई हो या लेवे से लेकिन यथोचित देख-भाल और

इलाज न होने के कारण फैलकर थनों से लेवे में और लेवे से थनों में हो जाती है।

पहचान—थन या बाक के सूजे हुए हिस्से से दूध कम निकलता है। दूध में फुटकी-सी आने लगती है। धीरे-धीरे दर्द बढ़ जाता है और गाय उस हिस्से पर हाथ लगाते ही लात मारती है। उस हिस्से का दूध गाढ़ा मवाद-सा हो-जाता है और यदि शीघ्र आराम न हो तो बिलकुल पानी की तरह हो जाता है। वह थन और लेवे का हिस्सा जिससे ऐसा दूध निकलता है, बेकार हो जाता, है। कभी-कभी बीमारी का असर एक दम बड़ी तेजी से होता है तब जानवर सुस्त हो जाता है। हलका बुखार हो जाता है। जुगाली करना बन्द कर देता है और कभी-कभी कांपने भी लगता है। उसके थन या लेवे के एक या अधिक हिस्सों पर इसका असर हो जाता है। सूजन बड़ी तेजी से बढ़ जाती है और वह हिस्सा लाल-सा हो जाता है। अगर जल्दी आराम न हो तो फिर सख्त हो जाता है। दूध बड़ी मुश्किल से निकलता है, शुरू में गाढ़ा और बदबूदार मवाद और खून मिला हुआ होता है, बाद में पानी जैसा हो जाता है। लेवे के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में बीमारी फैल जाती है और यदि जल्द आराम न हो तो लेवे के एक-दो या इससे ज्यादा हिस्से हमेशा के लिए बेकार हो जाते हैं।

हिफाजत—इस बीमारी को न होने देना ही अच्छा है क्योंकि एक बार हो जाने पर एक तो जानवर अच्छा मुश्किल से होता है, दूसरे अगर अच्छा हो भी जाता है तो इसका असर कुछ-न-कुछ रह ही जाता है और दूध सदा के लिए थोड़ा या बहुत कम हो जाता है। इससे बचने का एक मात्र उपाय गाय के बैठने के स्थान को बिलकुल साफ रखना और उसके नीचे यदि पक्का स्थान हो तो मुलायम और सूखा बिछावन रखना और कच्चा स्थान हो तो सूखा रेत या मिट्टी का रखना ही है। गाय को दुहने के पहले और सम्भव हो तो बाद में भी नीचे लिखी दवा उसके थनों पर भली-भांति लगानी चाहिए।

बारह हिस्से घी या मक्खन, वैसलीन या तिल का तेल और एक हिस्सा भुना हुआ या तवे पर फुलाया हुआ सुहागा या बोरिक एसिड या आधा हिस्सा कपूर—दोनों को भली प्रकार मिलाकर लागवें। यदि कपूर, तेल, मक्खन इत्यादि में जल्दी न मिले तो उसे थोड़ा शराब या स्पिरिट में घोलकर फिर तेल इत्यादि में घोलना चाहिए।

इलाज—सबसे पहले अगर गाय को कब्ज हो तो जुलाब देना चाहिए और पीने के पानी में १ तोला शोरा मिलाकर पिलाना चाहिए। गाय को दुहने के समय सूजे हुए और अच्छे हिस्से का दूध अलग-अलग बर्तन में निकालना चाहिए। अगर बच्चा थनों से दूध पीता हो तो उसे सिर्फ अच्छे थनों का ही दूध पिलाना चाहिए। जिस हिस्से में बीमारी हो गई हो उस हिस्से पर ऊपर लिखी चिकनाई लगाकर धीरे-धीरे तमाम दूध दुह लेना चाहिए। अगर उस हिस्से का सख्त होने की वजह से दूध निकलना कम भी हो गया हो तो भी और चाहे उस हिस्से से दूध की जगह मवाद निकले तो भी बराबर दुह लेना चाहिए क्योंकि अगर उसमें जरासा भी दूध रह गया या उसको देर तक नहीं दुहा गया तो वह हिस्सा बेकार हो जायगा।

दुहने के बाद नीचे लिखी कोई-सी दवा सेक करने के बाद सबेरे-शाम दोनों समय लगानी चाहिएः—

(१) मकोय के पत्तों को पानी में उबालकर उसके गर्म-गर्म पानी से १०-१५ मिनिट तक सेक करो। बाद में मकोय के ताजे पत्तों का अर्क, गेरू और ककरौंधा, कुकरमुत्ता या गुलेबास के पत्ते बारीक पीसकर गर्म करलो और गुनगुना-गुनगुना सूजनवाली जगह पर और उसके आस-पास लेप कर दो।

मकोय के ताजे पत्तों का अर्क, कालाजीरी और गेरू तीनों को मिलाकर गर्म करके गरम-गरम सूजन पर लेप करने से भी लाभ होता है।

(२) लोनी मिट्टी को पानी में औटावें, इस पानी से थनों का सेक करें। गाढ़े हिस्से का थनों पर लेप कर दें।

(३) नीम के पत्तों के उबले हुए पानी से सेक करने के बाद दो तोले

हल्दी और १ तोला साबुन दोनों को खूब बारीक पीसकर खूब औटाकर लेप करें ।

(४) नीम के पत्तों के उबले हुए पानी से सेक करने के बाद गेरू और अजवायन पीसकर पानी में मिलाकर पकावें और फिर लेप करें ।

(५) अमरबेल, मकोय और संभालू के पत्तों को पानी में औटाकर उस पानी से सेक करें । फिर इन तीनों के नये ताजे पत्तों को पीसकर गर्म करके लेप करें ।

(६) अमरबेल, झाड़ी के पत्ते और बरना के पत्ते पानी में उबालकर उस पानी से सेक करें और फिर तीनों के नये ताजे पत्तों को पीसकर गर्म करके लेप करें ।

(७) नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से धोने के बाद दिमौट (दीमक) के घर की मिट्टी को पानी में उबाल कर लेप कर दें ।

(८) नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से सेकने के बाद थनों को गीले कपड़े को निचोड़कर सुखाकर थोड़ी हींग, ५-६ गुने पानी में घोलकर गर्म करके उसका पानी सूजी हुई जगह या उसके आस-पास लगावें ।

खाने को नीचे लिखी दवा तीन दिन तक लगातार दें:—

उड़द या छोटे चने के बराबर रस कपूर की डली हरे केले को चीरकर उसमें रखकर दिन में एक बार खिला दें । रस कपूर एक तेज जहरीली दवा है इसको बड़ी होशियारी से काम में लाना चाहिए और २-३ दिन से ज्यादा लगातार नहीं देना चाहिए । इसके बाद दो बार रोज आध पाव शतावरी पाक खिलाइए । शतावरी पाक बनाने की विधि यह है—

शतावरी को कूटकर चलनी में छान लें और चौगुने मीठे तेल को कढ़ाई में डालकर आंच पर रख दें । जब तेल लाल हो जाय तब शतावरी उसमें डाल दें और फौरन कढ़ाई आंच पर से उतारकर किसी तसले में जिसमें पानी भरा हो, कढ़ाई रखकर बराबर उसको मिलाते रहें फिर ठण्डा करके उपरोक्त विधि से खिलावें । एक बार एक सेर दवा तैयार करलें ताकि कई रोज काम

में आ सके।

यदि ऊपर की दवा न दे सकें तो नीचे लिखी दवा की औंटी बनाकर दें—

सोंठ	१ तोला
अजवायन	२ तोला
मेथी	१० तोला
गुड़	१० तोला

आध सेर पानी में खूब पकावें जब आधा या पौना रह जाय तो गुन-गुना-गुनगुना पिला दें।

अगर जख्म हो जाय तो कपूर का तेल, बोरिक एसिड या फूले हुए सुहागे का मलहम जख्म पर लगावें। जख्म को पहले नीम के पत्तों के उबले हुए पानी से धो लें।

थन बन्द हो जाय तो गाय जब दुबारा ब्याने वाली हो तब ब्याने के थोड़ी देर पहले गाय को २॥ तोला हींग चने की रोटी में रखकर खिला दें।

अगर दो-चार दिन पहले ही थन बन्द हुआ हो तो नीचे की दवा ३-४ दिन तक दें—

काली जीरी	आध पाव
काली मिर्च	आध पाव

आध सेर घी में मिलाकर या शतावरी पाक आध पाव से एक पाव तक दिन में दो बार दें।

खानपान—इस बीमारी में जानवर को कोई ऐसी खुराक नहीं देनी चाहिए जिससे दूध बढ़े क्योंकि वह हानिकारक होता है। गाय को शीघ्र पचने वाली खुराक देनी चाहिए और ठण्डा पानी न पिलाकर गुनगुना या कुंए का ताजा पानी पिलाना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को तेज हवा और सर्दी से बचावें। उसके रहने की जगह एकदम सूखी रखें। सेक वगैरह के पानी से या वैसे ही जो

कीचड़ वगैरह हो जाय उसे बिलकुल साफ करके सूखी मिट्टी फैला दें। मवाद या सूजे हुए हिस्से का दूध इत्यादि जो भी निकले वह जहां तक हो फर्श पर न गिरना चाहिए बल्कि उसे अलग बर्तन में निकालना चाहिए। अगर फर्श पर गिर ही जाय तो फौरन साफ कर देना चाहिए।

योनि में कीड़े पड़ जाना

गन्दी जगह में रहने या बैठने से मक्खियां कीड़ों के अंडे छोड़ देती है जिससे कीड़े पड़ जाते हैं। कीड़े पड़ने से योनि सूज जाती है और जख्म हो जाता है। कभी-कभी पेशाब के साथ शुरू या आखिर में खून भी आता है। जब कीड़े इधर-उधर चलते हैं तो जानवर बेचैन हो जाता है।

इलाज—जानवर को गिराकर या अन्य तरीके से काबू में करके योनि को उबले हुए नीम के पत्तों के पानी से पिचकारी द्वारा धोइए। यदि कीड़े दिखलाई दें तो नीम के पत्तों के साथ उबाली हुई चिमटी से कीड़े निकाल दीजिए। इसके बाद एक हिस्सा तारपीन का तेल और एक हिस्सा मीठा तेल मिलाकर रुई के फायों के साथ कीडे वाले स्थान पर चिमटी से अन्दर कर दीजिए। इस प्रकार सबेरे-शाम दोनों समय दवा लगानी चाहिए। अगर तारपीन का तेल न हो तो फिनाइल और तेल मिलाकर लगाया जा सकता है या मरवे के पत्तों का रस टपका दीजिए। इससे कीड़े मर जायंगे।

कपड़े धोने के रीठे को पानी में उबालकर जख्म को धो डालने से भी कीड़े मर जाते हैं या मूलीम पंसारी से लाकर बारीक पीसकर कपड़छन कर लो एक रुई के फाये के साथ लपेट कर तारपीन के तेल की तरह अन्दर कर दो। कीड़े मर जायंगे या अपने-आप बाहर आ जायंगे।

खान-पान—साधारण दीजिए।

अन्य हिदायतें—फोतों के सूज जाने की बीमारी के अनुसार।

बच्चेदानी का बाहर लौट आना

बुढ़ापे में कमजोरी की वजह से या बच्चा होने के समय लापरवाही होने

से ऐसा हो जाता है।

पहचान—बच्चा होने के समय बाद में जेज़ गिरने के लिए जोर लगाने के समय या और थोड़े दिन बाद बच्चेदानी का बाहर निकल आना।

इलाज—ज्योंही बच्चादानी बाहर निकले फौरन ही स्प्रिट, शराब फिटकरी के पानी या नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से बच्चादानी को धो देना चाहिए और फिर अपने हाथ धोकर उसको आहिस्ता से अन्दर करके हथेलियों से उस जगह को थोड़ी देर दबाये रखना चाहिए। फिर कपड़े की पट्टी से उस जगह को बांध देना चाहिए ताकि बच्चेदानी बाहर न निकले। जानवर को थोड़ा-सा धीरे-धीरे टहलाना चाहिए ताकि बच्चादानी अपनी जगह पर भली प्रकार बैठ जाय। इस प्रकार चौबीस घंटे तक पट्टी या छींका बंधा रहना चाहिए। आस-पास की जगह नीम के पानी व फिटकरी के पानी से बराबर साफ करते रहना चाहिए।

इसके लिए नीचे लिखी दवा देनी चाहिए—

सौंठ	६ माशा
काली मिर्च	१ तोला
घी	पाव भर

घी को थोड़ा गर्म करके दोनों चीजें पीसकर उसमें मिलाकर दो-चार दिन तक बराबर रोज दीजिए।

खान-पान—खाने को शीघ्र पचने वाली खुराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—बच्चेदानी अन्दर करने के बाद जानवर को आठ-दस घंटे तक बैठने न देना चाहिए और दस बारह रोज तक ज्यादा दूर चलाना या तेज दौड़ाना नहीं चाहिए। बैठने का स्थान सूखा होना चाहिए तथा बैठने की जगह बिछावन कर देना चाहिए।

यथोचित समय पर गाय का गर्भ धारण न करना

कई बार गाय ब्याने के ४-५ महिने बाद तक या इससे भी ज्यादा समय तक गाभिन नहीं होती। इसके तीन कारण हो सकते हैं:—

(१) **नस्ल का स्वाभाविक धर्म**—किसी-किसी नस्ल की गायें प्रायः ब्याने के काफी अर्से बाद ही गाभिन हुआ करती हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी उस नस्ल में यही चला आ रहा है, इसलिए ऐसी जातियों की गायों का स्वभाव ही ऐसा हो जाता है।

(२) **व्यक्तिगत स्वभाव**—किन्हीं-किन्हीं गायों का यह स्वभाव होता है कि वे ब्याने के काफी अर्से बाद सांड से मिलती हैं और ग्याभन होती हैं।

(३) **खाने-पीने और रहने-सहने का तरीका**—जब किसी गाय को गर्म तासीर की खुराक ज्यादह मिलती है या जब उसका बच्चा मर जाता है या जब उसके बच्चे को सीधा थनों से दूध न पिलाकर ऊपर से दूध पिलाया जाता है और जब वह चरने या टहलने जाती है और बराबर उसके साथ या रेवड़ में सांड हो तो ऐसा देखा गया है कि वह जल्दी गाभिन हो जाती है। इसके विपरीत जिनको पूरी खुराक नहीं मिलती, जिनके पास सांड नहीं रहता या जिनका सांड से मिलना दुर्लभ होता है, वे बहुत दिनों में गाभिन होती है।

यदि होशियारी से और बराबर इस कमी को दूर करने की कोशिश की जाय तो तीनों ही हालत में कामयाबी हो सकती है, परन्तु तीसरी हालत में खुराक इत्यादि ठीक देकर इस कमी को औरों से जल्दी दूर किया जा सकता है। बाज दफा वर्षों तक और जड़ से ही गाय गाभिन नहीं होती। उनका कारण बच्चादानी या बच्चा पैदा करने के अन्य अंगों में सूजन होना उनका मुंह टेढ़ा या बन्द हो जाना या उसमें अन्य खराबियां हो जाना होता है।

इलाज—बच्चेदानी या बच्चा पैदा करने के अन्य अंगों का मुंह बन्द

हो जाना या थोड़ा मुड़ जाना, गाय के ज्यादा मोटा हो जाने और चर्बी बढ़ जाने की वजह से भी हो जाता है। अगर ऐसी बात हो तो उसकी खुराक कम कर देनी चाहिए, उससे काम लेना चाहिए और उसको खूब चलाना-फिराना चाहिए ताकि जो चर्बी छा गई है और मोटापन आ गया है वह कम हो जाय। यदि यह बीमारी मुटापा या चर्बी छाने की वजह से नहीं है तो ढोरों के होशियार डाक्टर को दिखाकर ऑपरेशन द्वारा ठीक (इलाज) कराना चाहिए।

इसके अलावा दूसरी हालतों में देर में गाभिन होनेवाली गायों को नीचे लिखी दवायें लाभप्रद होती हैं। अगर गाय ब्याने के बाद १०० दिन तक गाभिन न हो तों १०१ वें दिन नीचे लिखी दवाओं में से एक दीजिए:—

(१) २ सेर गेहूँ या जई को पानी में १२ घंटे भिगो दें इसके बाद गीले कपड़े या बोरी में लपेटकर रख दें। जब तक गेहूँ जम न जाय और दो अंगुल लम्बे अंकुर निकल न आवें तब तक कपड़ा गीला रखें ऐसे अंकुर निकले गेहूँ १५ दिन तक बराबर जानवर को खिलाएँ।

(२) अढ़ाई पाव मेथी बारीक पीसकर थोड़ा पानी मिलाकर लुगदी बना लें। इसे तीन-चार दिन सबेरे खिलावें।

(३) ४ से ८ छुहारे प्रति दिन दो-तीन दिन तक दें। पहले दिन ४ छुहारे दें। इससे भी गर्भ न हो तो दूसरे दिन ५, तीसरे दिन ७ और पांचवें दिन ८ छुहारे रोटी या गुड़ में मिलाकर खिला दें।

(४) मसूर १। सेर
बैंगन १। सेर

दोनों को पकाकर तीन दिन तक रोज खिलावें।

(५) भिड़ों के छत्ते को, जिसमें अण्डे न हों, एक छटांक पीस लो और १ छटांक जामुन की छाल पीस लो। दोनों को मिलाकर सबेरे ७ दिन तक दो।

(६) कबूतर की बींट १ तोला सबेरे दो-तीन दिन तक बराबर खिलावें। यह दवाई सब दवाइयों से तेज है।

यदि उपरोक्त किसी भी दवाई से फायदा न हो तब देर में गाभिन होने की कमी को दूर करने के लिए एक प्रकार के इन्जेक्शन (Injection) यानी खाल में सुई द्वारा दवाई पहुँचाने का जो नया इलाज निकला है, उसे ढोरों के होशियार डाक्टर से दिलाना चाहिए।

खान-पान—जो जानवर अधिक मोटे हों और जिनपर चर्बी चढ़ गई हो उनकी खूराक कम कर देनी चाहिए और जो दुबले और कमजोर हो उनकी खुराक बढ़ा देनी चाहिए ताकि वे अपनी ठीक अवस्था को प्राप्त कर लें। गाय को गाभिन होने के पहले हमेशा ज्यादा गर्म तासीर की खुराक दीजिए।

अन्य हिदायतें—गाय के ब्याने के ६० दिन के बाद बहुत होशियारी से गाय की हरकतों को देखते रहना चाहिए, क्योंकि करीब ६३ दिन और उसके बाद लगभग हर इक्कीसवें दिन के बाद गर्म होगी। इन दिनों में जब भी ज्यादा चंचल दिखाई दे या कूदे-फांदे, दूसरे जानवरों पर चढ़े तब फौरन उसको सांड से गाभिन कराने के लिए मिलाना या उसके साथ रखना चाहिए।

गाय का बार-बार गाभिन होना

यह खराबी गर्म खुराक खिलाने से या गाय के गर्भ धारण की ताकत कम हो जाने की वजह से हुआ करती है या जो सांड गाय को गाभिन करता है उसमें कुछ खराबी होने के कारण भी ऐसा हो जाता है।

पहचान—एक बार गर्म होने पर सांड से मिलने के बाद बार-बार गर्म होना और गर्भ धारण न करना इसकी पहचान है।

इलाज—गर्मी को दूर करने के लिए गाय को ठंडी खुराक देनी चाहिए। इसके लिए गाय को गाभिन होते ही एक पाव घी और उसमें छः माशे

बारीक पिसी हुई काली मिर्च मिलाकर दीजिए। इसके बाद नीचे लिखी दवा में से कोई सी दवा दीजिए:—

(१) लिसोढे के दो सेर हरे पत्ते गाभिन होने के बाद खिला दें। जिस दिन गाभिन हो उस दिन खाना न दें और दें तो बहुत कम और ठण्डा दें।

(२) गाय जब गाभिन होने को हो तो १-२ दिन पहले ४ सेर गेहूँ या जई भिगो लें और गाभिन हो जाने के बाद गाय को खिला दें इस प्रकार जमे या अंकुर निकले हुए गेहूँ या जई बराबर चार-पांच दिन तक खिलावें।

(३) पाव भर सफेद तिल को मिट्टी के बर्तन में भिगो दें और सबेरे उनको खूब घोट-पीसकर पिला दें। जिस दिन गाय गाभिन हुई हो उस दिन और दो रोज बाद तक रोज पिलादें। अब कड़ी सर्दी हो तो यह दवा नहीं देनी चाहिए या सिर्फ गाय गाभिन हुई हो तो उसी दिन देकर बन्द कर देनी चाहिए।

उपरोक्त दवाएं दो-तीन बार जिस दिन गाय गाभिन हुई हो तो उसके १६ वें, २० वें, दिन भी दीजिए ताकि गाय के दुबारा गर्म होने का डर न रहे। गाभिन होने के एक रोज बाद ठण्डे पानी का डूश भी लाभप्रद होता है।

खान-पान—गाय को जहां तक हो ठण्डी तासीर वाली और पौष्टिक खुराक दीजिए। गर्म चीज न खिलाइये। जिस दिन गाय गाभिन हो उस रोज से दस पन्द्रह दिनों तक उसकी खुराक कुछ कम कर दें।

: ७ :

शरीर की बाहरी साधारण बीमारियां

अब हम किसी दुर्घटना या चोट लग जाने से तथा किसी कीड़े, मक्खी या जानवर के काटने से शरीर के बाहरी भाग में होने वाली बीमारियों के बारे में लिखते हैं। इन बीमारियों में जानवर को और खासकर उसके उस अंग को जिसमें तकलीफ है, पूरा आराम देना चाहिए और उसकी पूरी सफाई रखनी चाहिए। इस प्रकार की बीमारियों में जो भी दवा व इलाज होता है वह तो प्रायः केवल छूत से बचाने, दर्द को कम करने तथा गंदा माद्दा निकालकर जख्म इत्यादि को साफ रखने के लिए ही होता है। प्रकृति को अगर अपने काम करने का पूरा मौका दिया जाय तो जानवर को जल्दी ही फायदा हो जाता है।

(१) सूजन (वरम)

चोट, सर्दी-गर्मी या कोई खराब माद्दा इकट्ठा हो जाने की वजह से कभी-कभी बदन के किसी खास हिस्से में सूजन हो जाती है।

पहचान—वह जगह कुछ उभरी हुई मालूम पड़ती है। वहां दर्द होता है। यह दबाने से दबती नहीं, अक्सर सुर्ख हो जाती है और छूने से गर्म मालूम पड़ती है। उस हिस्से से काम नहीं होता। जानवर बेचैन मालूम पड़ता है। कभी-कभी हलकी हरारत-सी हो जाती है।

इलाज—चोट वगैरह की वजह से यदि सूजन हो तो नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से उस जगह को भली-भांति धोकर सेकें और बाद में नीचे लिखी कोई दवा लगावें:—

(१) तवे पर हल्दी और घी डालकर अच्छी तरह से भूनकर पका लें। और फिर रुई के फोये पर रखकर बांध दें।

(२) कपूर भुना हुआ या तवे पर फुलाया हुआ सुहागा बराबर-बराबर लेकर बराबर तिल के तेल अथवा घी, वेसलीन, मक्खन इत्यादि किसी में भली-भांति मिलाकर चुपड़ दें।

यदि खराब मादे के इकट्ठा हो जाने की वजह से या खून की खराबी की वजह से फोड़ा-फुंसी होने के पहले की सूजन हो तो नीम के पत्ते, मकोय आकसंड में से एक या सबको पानी में डालकर खूब पकाकर उसके गर्म पानी से बार-बार कपड़ा या टाट भिगोकर दस-पन्द्रह मिनट सेंक करना चाहिए और बाद में नीचे लिखे लेपों में से कोई एक करना चाहिए।

(१) २ तोला हल्दी २ तोला साबुन में मिलाकर गर्म-गर्म लेप कर दें।

(२) १ तोला गेरू २ तोला मकोय के रस में मिलाकर गर्म-गर्म लेप करें।

(३) हल्दी और चूना दोनों बराबर-बराबर गर्म पानी या मकोय, आकसंड या आकाशबेल किसी के रस में मिलाकर गर्म-गर्म लेप करें।

अगर लेप या सेंक करने से उसका पकना शुरू हो जाय, और उसमें मवाद पड़ने लगे तो समझ लेना चाहिए कि वह फोड़ा बन जायगा और फिर उसका इलाज फोड़े-फुन्सी की तरह करना चाहिए। फोड़े-फुन्सी का इलाज आगे देखिये।

यदि सूजन या दर्द दूसरे किसी कारण से है तो आरम्भ में ठंडे पानी की धार डालने व ठंडे पानी में भिगोकर कपड़े व टाट की गद्दी रखने से भी लाभ होता है। लेकिन जब मर्ज बढ़ जाय और उससे लाभ न हो तो सेंक करना चाहिए। सेंक दो प्रकार का होता है एक तर और दूसरा खुश्क। तर सेंक गर्म पानी में दवा डालकर उस पानी में बार-बार कपड़ा भिगोकर किया जाता है और सेंक करने के बाद उस पर दवा का लेप करना मुनासिब है। गर्म ईंट, रेत या मिट्टी वगैरह कपड़े या टाट में रखकर खुश्क सेंक किया

जाता है। खुश्क सेंक करने के पहले दर्द को दूर करने के लिए नीचे लिखा कोई भी तेल धीरे-धीरे जानवर के रोग के रुख के अनुसार मल देना चाहिए। मालिश और सेंक करने के बाद अरण्ड के पत्ते तेल में चुपड़ कर बांध दें।

(१) १ तोला कपूर को १ छटांक तारपीन के तेल में घोलकर पाव भर तिल के तेल में मिलाकर मालिश करें।

(२) आक के पत्ते कूटकर रस निकालें और सेर भर रस में पाव भर तिल का तेल मिलाकर पकावें। जब रस जल जाय तो उसे छान लें और इस तेल की मालिश करें।

(३) धतूरे के पत्तों का रस पाव भर, तिल के आधसेर तेल में मिलाकर पकायें। पानी जल जाय और खालिश तेल रह जाय तो छान लें और मालिश करें। २ तोला धतूरे के बीज बारीक कूट पीस कर एक पाव तिल के तेल में मिलाकर १५ या २० रोज तक धूप में रखें और फिर छान कर शीशी में भर कर रखलें और मालिश करें।

(४) पाव भर लहसुन को खूब छेत लें या सिलबट्टे पर पीस लें। फिर उसे आधा सेर तिल के तेल में मिला कर पकावें। जब भली-भांति पक जावे तो कपड़े में छान लें और उसकी मालिश करें।

यदि उपरोक्त इलाज से फायदा न हो तो राई या लहसुन का पलस्तर लगाना चाहिए।

पलस्तर की विधि—राई को पानी में पीस कर गर्म करके मलहम की तरह कपड़े पर फैला कर लगावें।

लहसुन १ हिस्सा और आटा २ हिस्से दोनों को सिलबट्टे पर खूब बारीक पीसें जब मलहम जैसा हो जाय तो गर्म करके कपड़े पर लगाकर चिपका दें।

जब पलस्तर से जगह लाल हो जाय या उपाड़ हो जाय तो पलस्तर को उतार देना चाहिए और तेल चुपड़ देना चाहिए। पलस्तर लगाने के

बाद अगर खाल उतर जाय तो लोनी, घी या मक्खन में बारीक पिसा हुआ खाने का नमक मिलाकर लगाना चाहिए।

यदि सूजन की वजह से बुखार हो जाय तो पानी में १ तोला शोरा डालकर पिलाना चाहिए। यदि बुखार तेज हो जाय तो बुखार की दवा करनी चाहिए।

खान-पान—खाने को चना, मटर, मसूर वगैरा द्विदल जाति की देर में पचनेवाली तथा बादी या कब्ज करने वाली चीजें नहीं खिलानी चाहिए। पीने को कुँए का ताजा पानी देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को जहां तक हो आराम देना चाहिए और खास करके उस अंग को, जिसमें बीमारी है, मक्खी मच्छर से बचना चाहिए और सेक या मालिश या पलस्तर के बाद जानवर को हवा का सीधा झोंका और तेज सर्दी बिलकुल नहीं लगनी चाहिए।

(२) रसौली या मस्सा

कई बार खाल के नीचे से गेंद-सी बनकर सूजती या बढ़ती चली जाती है जिसको दबाने से दर्द नहीं होता। वह चलने-फिरने में भी कोई रुकावट नहीं करती, पर जानवर को बदसूरत कर देती है या बढ़कर किसी अंग को ढक या दबा लेती है तो हानि पहुँचाती है।

इलाज—रसौली में सेक इत्यादि जिस प्रकार सूजन की अवस्था में किया जाता है, करना चाहिए। यदि इससे दब जाय तो ठीक है अन्यथा ३ हिस्से पानी और एक हिस्से कच्चे पपीते के फल या पेड़ में कील या चाकू चुभाने से जो रस निकलता है उसे मिलाकर एक चौड़े मुंह वाली शीशी में रख लीजिए। फिर उसमें रुई या कपड़ा भिगोकर ठीक उस स्थान पर लगाकर कपड़े से बांध दीजिए। बराबर ऐसा करने से लाभ होगा। यदि इससे भी लाभ न हो तो ढोरों के डाक्टर को बुलवाकर आपरेशन करवाकर निकलवा देना चाहिए। अगर शरीर के किसी अन्दरूनी भाग में रसौली हो तो उसका इलाज ढोरों के डाक्टर से आपरेशन करवाकर कराना चाहिए।

मस्से को सब पहचानते हैं।

इलाज—उसके लिए नीचे लिखी दवा आजमाइये;—

(१) चूना, सज्जी बराबर-बराबर किसी कांच के बर्तन या सीपी वगैरा में रखकर ज़रा-सा पानी डाल किसी तिनके के सिरे पर रुई का फ़ोहा या फुरेरी लगाकर उससे यह दवा ठीक मस्से पर दिन में दो-तीन बार लगाइये। दो-चार दिन में मस्सा सूख जायगा।

(२) पपीते में चाकू चुभाने से जो रस निकलता है, उसे तीन हिस्से पानी में मिलाकर लगाने से भी आराम होता है।

खान-पान—खान-पान में कोई खास बात नहीं है। साधारण रोजाना की खुराक दे सकते हैं।

अन्य हिदायतें—दवाई होशियारी से रसौली या मस्से के ऊपर ही लगनी चाहिए। यदि और दूसरी जगह लग जायगी तो जख्म कर देगी और तकलीफ होगी।

(३) फोड़ा-फुंसी

जब सूजन अधिक दूर तक न फैलकर किसी खास जगह ऊपर को उठती चली आती है तो वही फोड़ा हो जाती है। यह चोट लगने या खून की खराबी से भी होता है।

पहचान—उस जगह बहुत दर्द मालूम पड़ता है जिसके कारण बेचैनी हो जाती है। वह जगह लाल हो जाती है, गर्म मालूम पड़ती है और वहां पर हर समय कुलकुलाहट-सी हो जाती है। बेचैनी रहती है। कभी-कभी बुखार भी आ जाता है।

इलाज—यदि खून की खराबी से ऐसा है तो जुलाब देना चाहिए और सूजन के बताये हुए इलाज के मुताबिक पहले सेंक इत्यादि करना चाहिए। यदि इससे फोड़ा-फुंसी दब जाय तो अच्छा है और यदि उसमें मवाद पड़ गया हो तो उसको पकाने का प्रबन्ध करना चाहिए। इसके लिए नीम के पत्ते

डालकर उबाले हुए पानी से सेंक करके कोई चीज जैसे प्याज, कुकरौंधा, गुलबास सिलबट्टे पर बारीक पीसकर गर्म करके गर्म-गर्म ही दिन में दो बार बांधना चाहिए या नीचे लिखी पुलटिस दिन में दो-तीन बार गरम-गरम बांधिए:—

आटा	१ तोला
हल्दी	१ माशा
तेल मीठा	१ तोला
सुहागा	१ माशा
सिन्दूर	१ माशा
तूतिया (नीला थोथा)	२ रत्ती

जब उसमें मवाद पड़ जाय तो नीम के पत्तों के साथ २०-२५ मिनट तक उबाले हुए एक तेज चाकू से चीरा देकर मवाद निकाल देना चाहिए और फिर जख्म का इलाज करना चाहिए।

खान-पान—बादी करनेवाली खुराक व द्विदल जाति की चीजें न देकर शीघ्र पचनेवाला मुलायम चारा देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—गन्दगी बिलकुल नहीं रहनी चाहिए। सफाई का खास ध्यान रखना चाहिए वरना रोग के बढ़ जाने का डर रहता है।

४ घाव या जख्म

किसी फोड़े फुन्सी के पक कर फूटजाने या चोट लगने या तेज चीज के कारण घाव हो जाता है। इसमें से मवाद, खराब खून आदि निकलता रहता है। यदि अच्छी तरह इसका इलाज न किया जाय तो उसमें कीड़े पड़ जाते हैं और गलना सड़ना भी शुरू हो जाता है।

इलाज—उस हिस्से को आराम देना चाहिए। जहां तक हो हिलाना डुलाना नहीं चाहिए। सफाई का खास ध्यान रखना चाहिए। उस जगह के बाल इत्यादि काट देने चाहिए। यदि कहीं की खाल या मांस इत्यादि बेढँगे तरीके का होगया हो तो १५-२० मिनट तक नीम के पत्ती के साथ

उबाली हुई कैंची या तेज चाकू से काट देना चाहिये ताकि जो भी दवा लगाई जाय वह सहूलियत से लग सके और अपना असर कर सके। जो रुई, कपड़ा इत्यादि काम में लें वह भी साफ होना चाहिये। घाव पर लाल दवा मिले गरम पानी से या नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से धोकर साफ करके फिर दवा लगानी चाहिए। घाव तब साफ समझना चाहिए जब वह लाल हो जाय। यदि मवाद या गली खाल या अन्य कोई चीज लगी हो तो साफ नहीं समझना चाहिए। जब वह बिलकुल साफ हो जाय और लाल दिखाई देने लगे तभी दवा लगानी चाहिए।

अगर घाव में कीड़े पड़ गये हों तो उसे धोने के बाद बराबर की फिनाइल या तारपीन के तेल मिले हुए तिल के तेल में रुई का फोहा भिगोकर एक तिनके से अच्छी तरह घाव के अन्दर करदें ताकि अन्दर के कीड़े सब मर जांय और उसके आस-पास भी यही तेल चुपड़कर मक्खी धूल-गर्द से बचाने के लिए और कोई चीज लगाने की आवश्यकता हो तो उसे लगा दीजिये। और यदि पट्टी बाँधने की आवश्यकता हो तो उसे बाँध दीजिए। इस प्रकार दोनों समय सुबह-शाम दवा लगाइये। जब कीड़े मर जांय तब दूसरी दवा लगावें।

यदि घाव में कीड़े न पड़े हों या पड़ कर मर गए हों तो उसे दोनों समय सवेरे-शाम उपर्युक्त विधि के अनुसार धोकर साफ करके और फिर नीचे लिखी कोई दवा लगावें:—

(१) १ हिस्सा कपूर, १ हिस्सा सुहागा, १६ हिस्से मक्खन, घी व तिल का तेल मिलाकर लगावें।

(२) १ हिस्सा तूतिया, ४ हिस्से तेल तारपीन, १० हिस्सा कपूर, २० हिस्सा तिल का तेल लें। कपूर को तारपीन के तेल में घोल कर तिल का तेल डालकर खूब घोट लें। बाद में बारीक पिसा हुआ तूतिया व मोम मिलाकर हल्की आँच पर पकालें। यह मलहम लगावें।

(३) एक हिस्सा तूतिया, १० हिस्से राल, २० हिस्से पिसी हुई ताजा

नीम की पत्तियाँ गाय के दूध में पका लें और मलहम लगावें।

(४) मरुए या गेंदे के पत्ते सिलबट्टे पर बारीक पीस कर लुगदी बनाकर घाव पर रखकर बाँध दें या इन्हें सिल-बट्टे पर पीस कर तिल के तेल व गाय के घी में पकाकर लगावें।

(५) १ हिस्सा भुना या फुलाया हुआ सुहागा, ४ हिस्से मक्खन, घी या तिल के तेल में मिलाकर लगावें।

(६) १ हिस्सा तूतिया, आधा हिस्सा खड़िया मिट्टी और १ हिस्सा लकड़ी के कोयले खूब बारीक पीस कर कपड़-छान करके तेल चुपड़ने के बाद बुरका दें।

अगर जख्म में दाने-दाने से दिखाई दें या कोई हिस्सा फूलकर सतह से ऊपर आ गया हो या ज्यादा उभरा हो, टेढ़ा-मेढ़ा होगया हो, या मांस बढ़ गया हो तो तूतिये की डलीसे उसको रगड़ कर एक-सा कर देना चाहिए। ऐसा करने में जानवर को थोड़ी तकलीफ होगी परन्तु यह याद रखना चाहिए कि घाव का समान भरना ही ठीक है वरना खोल रह जायगा जो दुख देगा। घाव जब करीब-करीब ऊपर तक भर जाय तो दूसरी दवाइयाँ न लगा कर सिर्फ १ हिस्सा कपूर जरा-सी देशी शराब में घोल कर १२ हिस्से तिल के तेल में मिलाकर इस कपूर मिले हुए तेल को ही दिन में दो-तीन बार चुपड़ देना चाहिए और घाव को खुला रखना चाहिए ताकि जल्द सूख जाय।

खान-पान—बादी व कब्ज करने वाली खूराक न देकर शीघ्र पचने-वाली व मुलायम खुराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—सफाई का बहुत ध्यान रखना चाहिए। मवाद इत्यादि से जो गन्दगी हो जाय उसे फौरन साफ करते रहना चाहिए। जानवर को अधिक-से-अधिक आराम देना चाहिए।

(५) हड्डी पर चोट लगना, टूटना, उतरना और मोच आ जाना

शरीर हड्डियों के ढाँचे का बना हुआ है। चोट लग जाने से, पैर

फिसल जाने से या अन्य किसी कारण से हड्डी टूट जाती है या जोड की जगह से अलग हो जाती है।

पहचान—उस जगह दर्द होता है। वह हिस्सा हरकत नहीं करता कई बार खून भी निकलने लगता है। हड्डी टूट जाने पर हिलाने से आवाज होती है। यदि जोड़ उतर जाय तो वह हिस्सा दूसरे के मुकाबले में बढ़ा हुआ, टेढ़ा और काम के नाकाबिल हो जाता है।

इलाज—अगर साधारण मोच आई है और उसकी वजह से सूजन आ गई है और दर्द होता है तो ठण्डे पानी की गद्दी इत्यादि लगानी चाहिए। इससे आराम न हो तो तर व गर्म सेंक व मालिश या लेप जो सूजन के इलाज में पीछे बताये हैं, उसके मुताबिक करना चाहिए।

अगर हड्डी उतर गई हो तो जानकार आदमी द्वारा हड्डी चढ़वाकर बताये अनुसार मालिश व खुश्क सेंक पहले करना चाहिए और जानवर को कुछ दिन आराम देना चाहिए। अगर हड्डी टूट गई है तो उसके सिरों को जानकार आदमी द्वारा ठीक मिलाकर रूई, लोगड़, कपड़ा रखकर बांस की खपच्ची लगाकर उस जगह को ऐसे बांध देना चाहिए कि जानवर के हिलने-डुलने इत्यादि से वह ढीली न हो सके और हड्डी के जो दोनों सिरे मिलाये गये हैं वे ज्यों के त्यों मिले रहें। डेढ़ महिने तक हड्डी को बराबर उसी तरह बांधे रखने से वह जुड़ जाती है।

साधारण मोच के अलावा दूसरी हालतों में ढोरों के होशियार डाक्टर से उपर्युक्त काम में मदद लेनी चाहिए ताकि इलाज विधि-पूर्वक हो सके। ढोर को चोट लगते ही नीचे लिखी दवा पिला देने से उसको आराम मिलता है:—

फिटकरी	५ तोला
हल्दी	२॥ तोला
दूध	१ सेर

गरम दूध में सब चीजें घोल कर गरम-गरम पिला दीजिए। दो-तीन दिन तक रोज पिलाइये।

खान-पान—शीघ्र पचने वाला तथा मुलायम चारा-दाना देना चाहिए और बादी व कब्ज करने वाली खुराक नहीं देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को ज्यादा-से-ज्यादा आराम देना चाहिए। हिलने-डुलने न देना चाहिए। उसके बैठने की जगह बहुत साफ रखनी चाहिए और वहां बिछानी लगा देनी चाहिये। यदि इस बीच बंधी हुई जगह के आस-पास जख्म हो जाय तो बड़ी दिक्कत होगी। इसलिए पहले से ही हिफाजत रखनी चाहिए ताकि जख्म न हो। अगर जानवर को करवट देनी हो तो होशियारी से देनी चाहिए, जिससे उसे तकलीफ न हो और बंधे हुए स्थान पर किसी किस्म का जोर न पड़े।

(६) खुरों में फोड़ा-फुन्सी, घाव इत्यादि हो जाना

पक्की सड़क पर बराबर चलने से खुर घिस जाते हैं। बहुत तेज गर्म रेत में चलने से खुरों के बीच में सूजन व फफोला-सा हो जाता है। कील, कंकड़ या दूसरी चीज चुभने से भी खुरों में घाव हो जाता है।

पहचान—जानवर लंगडाकर चलता है और चलने में तकलीफ होती है।

इलाज—जब जानवर लंगड़ाकर चले तो सबसे पहले उसका मुंह देखना चाहिये कि मुंह या जबान पर किसी प्रकार के छाले तो नहीं हैं। यदि ऐसा है तो खुर मुंह की बीमारी समझनी चाहिए और उसको तन्दुरुस्त ढोरों से अलग करके खुर-मुंह की बीमारी का इलाज करना चाहिए। पृष्ठ २६ पर देखिए।

अगर इसका सन्देह न हो तो फिर जानवर के खुर अच्छी तरह देखना चाहिये। और अगर उनमें कोई कील-कांटा वगैरा नुकीली चीज चुभी हो तो उसे वहां से निकाल कर उस जगह कपूर और तारपीन मिले हुए तिल के तेल में रूई का फोहा भिगोकर उसे सावधानी से अन्दर घुसेड़ देना चाहिए और आस-पास की जगह पर भी तेल चुपड़ देना चाहिए। इस प्रकार दो-चार रोज तक यह दवा लगाने से आराम हो जायगा।

अगर मवाद पड़ गया है तो नीम के पत्तों के उबाले हुऐ पानी से धोकर जैसे घाव का इलाज करते हैं, वैसे करना चाहिऐ। यदि कीड़े पड़ गये हों तो कीड़े मारने का इलाज करना चाहिए।

गर्म रेत में चलने की वजह से सूजन या फफोला होगया हो तो बारीक पिसा हुआ नमक मक्खन में मिलाकर लगावें अगर खुर घिस गये हों तो जानवर को आराम देना चाहिए और यदि पक्की सड़क के ऊपर ज्यादा चलने-फिरने का काम हो तो उसके खुरों पर लोहे का नाल लगवा देना चाहिऐ।

खान-पान—खाने के लिए रोजाना की साधारण खुराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—कभी-कभी जानवर के खुरों के अधिक फैल जाने या उनके आगे को बढ़ जाने के कारण वह लंगडा कर या खुरों को धरती में लगाकर चलता है। ऐसी हालत में उसके खुरों को कटवाकर ठीक करवा देना चाहिए खुर में दवा जानवर को गिरा कर लगाई जाती है ताकि दवा लगानेवाला शांति से अपना काम कर सके। जानवर को गिराने में ध्यान रखना चाहिए कि उसे सख्त जगह पर न गिराया जाय बल्कि मुलायम मिट्टी, रेती या घांस इत्यादि पर गिराना चाहिए और फुर्ती से दवा इत्यादि लगानी चाहिए ताकि जानवर को देर तक गिराये रखने से जो उसको अफारा-सा हो जाया करता है उसके पहले ही सब काम पूरा हो जाय। फिर भी यदि अफारा हो जाय तो जानवर को एक बार छोड़ देना चाहिए और फिर थोड़ी देर बाद गिराकर काम समाप्त करना चाहिए।

(७) सींग में कीड़ा लग जाना या चोट से टूट जाना

किसी गन्दगी के कारण या सींग के आस-पास के किसी फोड़े-फुन्सी की देखभाल न होने के कारण सींग में कीड़ा लग जाया करता है। लड़ने या किसी प्रकार चोट लगने से भी सींग में घाव होकर कीड़े लग जाते है या ज्यादा चोट लगने से टूट जाया करता है।

पहचान— सींग में जब कीड़ा लग जाता है तो जानवर बराबर अपना सींग किसी खम्भे, पेड़, दीवार या आस-पास के खूँटे पर या अन्य किसी जगह पर रगड़ता रहता है। जब कीड़ों का असर ज्यादा हो जाता है तो सींग एक तरफ को झुक जाता है।

इलाज—अगर सींग में कीड़े लगने का सन्देह हो तो सींग व आस-पास की जगह गुनगुने नीम के पानी से भली-भांति साफ करके देखना चाहिए कि कहीं कोई सूराख या घाव तो नहीं है। यदि वह मिल जाय तो तारपीन के तेल में रूई का फाहा भिगोकर सींख द्वारा उसको अन्दर कर देना चाहिए ताकि कीड़े मर जांय। इस प्रकार दिन में दो-तीन बार कीड़े मारने की दवा लगानी चाहिए और घाव हो गया हो तो कीड़े मारने के बाद उसका इलाज कराना चाहिए। अगर कीड़ों का इतना असर हो गया हो कि सींग झुक गया हो या चोट लगने से टूट गया हो तो उसको जरा नीचे से आरी से काट कर अलहदा करदें। खून रोकने के लिए ठण्डे पानी में जरा-सी फिटकरी घोलकर उसकी पट्टी या गद्दी लगादें। खून रुक जाने पर दो हिस्से फिटकरी, १ हिस्सा तूतिया बारीक पिसवा कर उस पर बुरकाकर ऊपर से साफ रूई रख कर या कपड़े की गद्दी देकर कसकर बांध दें। बाद में घाव का इलाज करें।

खान-पान—रोजाना जैसा साधारण।

अन्य हिदायतें—जबतक घाव बिलकुल अच्छा न हो जाय, जानवर को ऐसे तरीके से बांधना चाहिए कि वह सींग को किसी चीज से न रगड़ पाये। यदि ऐसा करने में उसे खाने-पीने में तकलीफ हो तो एक आदमी जानवर के पास बैठकर उसे खिला-पिला दे ताकि वह सींग न रगड़ सके।

(८) कान में मवाद और घाव पड़जाना

चोट या दूसरे किसी कारण से फोड़ा-फुन्सी हो जाने से कान में मवाद व घाव हो जाया करता है।

पहचान—कान को हिलाना, फटफटाना, किसी चीज से खुजलाना या

रगड़ना या जिस कान में तकलीफ हो उधर ही गर्दन नीची रखना इसकी पहचान है।

इलाज—कान को नीम के उबले पानी से धोना चाहिए। अगर सूजन हो तो उसमें नीम के पत्तों के साथ थोड़ी मकोय और आकसंड के पत्ते और मिला देने चाहिए। धोने के बाद कान को उसी पानी में रूई भिगोकर और निचोड़ कर उसे एक तिनके के सिरे पर फुरहरी की तरह बांध कर उससे कान को सुखाना चाहिए और फिर १ हिस्सा कपूर, १ हिस्सा भुना हुआ सुहागा और २० हिस्सा सरसों के तेल में मिलाकर दवा फुरहरी से लगादें और दो चार बूँद कान में डाल दें।

(२) आक का तेल फुरहरी से लगादें और दो-चार बूँद कान में डाल दें।

खान-पान— जानवर को शीघ्र पचनेवाली चीजें खाने को देनी चाहिए; पानी कुएँ का ताजा पिलावें।

अन्य हिदायतें—कान की सफाई का खास ध्यान रखें और मक्खी से बचावें। जानवर को आराम से रखें। यह ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने कान किसी चीज से न रगड़े।

(९) आंख का खुजलाना, पानी या गीड़ का बहना

किसी चोट से या किसी चीज के आंख में गिर जाने के कारण, सख्त गर्मी से बदबूदार गन्दी हवा या धुएँ वाले मकान में रहने से आंख दुखने लगती है। कभी-कभी मच्छर के काटने से भी ऐसा हो जाता है।

पहचान—आंखों का सुर्ख होना, आंख से आंसू और गीड़ का बराबर निकलते रहना इसकी पहचान है।

इलाज—**खूब उबले हुए पानी को साफ बारीक कपड़े में छान कर और ठण्डा करके ४ छटांक पानी में १ माशा फिटकरी घोल लीजिए। फिर उसके कुल्ले जानवर की दुखती हुई आंखों में कराइए। जानवर की आंख को गर्द**

गिरने व हवा लगने से बचाएं। जहां तक हो सके उसको अंधेरे में रखिए। यदि पिचकारी मिल सके तो बजाय कुल्ले करने के फिटकरी के पानी की पिच-कारी से जानवर की आंख धोइए।

खान-पान—खाने को चने का दाना व द्विदल जाति का चारा तथा ज्यादा गर्म तासीर की चीजें न देकर चोकर, हरी दूब, घास देनी चाहिए! पीने के पानी में १ तोला कलमी शोरा डालकर पिलाना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को आंख नहीं रगड़ने देना चाहिए। आंख की सफाई का भी ध्यान रखना चाहिए। दिन में दो-तीन बार उसकी आंख धो सकें तो दवा के पानी से नहीं तो साफ ठण्डे पानी से ही धोते रहना चाहिए। धूप तथा गर्द या आंधी में जहां तक हो जानवर जबतक बिलकुल अच्छा न हो जाय, तबतक उससे काम न लें।

(१०) कन्धा आ जाना व फाला लग जाना

अधिक काम करने से, कहीं ज्यादा जोर करने से, बैल को पहले-पहले जोतने पर, कन्धे पर बार-बार झटका लगने पर बहुत देर तक ढलेवाली सख्त जमीन में हल चलाने से या किसी और कारण से बैल का कन्धा फूल जाया करता है और उससे बैल काम करने के काबिल नहीं रहता। कभी-कभी कुछ असावधानी हो जाने के कारण या किसी चीज से हल उछल जाने से फाला बैल के पैर में लग जाता है।

पहचान—कन्धा लाल हो जाता है। सूजन आ जाती है। कभी-कभी यह इतना फूल जाता है कि वहां हंडिया-सी बन जाती है। बैल के कन्धे पर जूआ रखते ही वह गर्दन गिरा लेता है और जोर नहीं लगाता। फाला लग जाने पर बैल लंगडाने लगता है और कभी-कभी खून भी निकलने लगता है।

इलाज—कन्धा आजाने पर सबसे पहिले खारा या खाने का नमक मिले गर्म पानी से सेंक करना चाहिए। (सूजन में बताई हुई तर सेंक करने की विधि पृष्ठ १११ पर देखिए)। यदि सूअर की चरबी मिल सके तो उसकी मालिश करना बहुत लाभप्रद है। यदि इससे आराम न हो और

कन्धा फूल जाय तो उसको पकाने की दवा लगा कर (पृष्ठ ११५ देखिए) उसको पकाने की कोशिश करनी चाहिए। जब पक कर फूटजाय तो फिर घाव का इलाज पृष्ठ १२८ पर बताये अनुसार करना चाहिए।

बैल के फाला लगजानेपर फौरन ही उसको एक तरफ ले जाकर उसके चोट की जगह पर पेशाब कर देना चाहिए। दिन में दो-तीन बार इस प्रकार एक-दो रोज पेशाब करने से लाभ हो जाता है या आम के अचार की फांक बांध कर पट्टी बांध देनी चाहिए। यदि घाव हो जाय या कीड़े पड़ जायं तो उनका इलाज ऊपर बताये तरीके से कीजिए।

खान-पान—साधारण देना चाहिए। सिर्फ यह ध्यान रखना चाहिए कि जानवर कमजोर न होने पावे या उसको कोई ऐसी चीज खाने को न दें जो मवाद बढ़ानेवाली हो।

अन्य हिदायतें—जानवर को यथा सम्भव आराम देना चाहिए और खास करके उस अंग को जिसमें तकलीफ है। परन्तु फाला लगते ही या कन्धा आजाने पर साधारण हालत में उससे थोड़ा बहुत काम लेना चाहिए ऐसी हालत में बिलकुल काम न लेना भी हानिकारक होता है।

(११) आग से जलजाना

बाज दफा भूल में आग लग जाने से या छप्पर या मकान में आग लगने के कारण ढोर आग से झुलस जाया करते हैं।

पहचान—कम जलने पर जगह सुर्ख-सी हो जाती है और अधिक जलने पर वहां फफोले पड़ जाते हैं।

इलाज—चूने के निथरे हुए पानी को अलसी, गोले (नारियल), तिल में से किसी एक तेल में थोड़ा कपूर मिलाकर बराबर का लेकर बोतल में भर लें और उसको खूब हिलायें। जब एक-सा हो जाय तब दिन में दो तीन बार लगावें। मक्खियों से बचाने के लिए उसे चादर या झूल से ढक देना चाहिए और यह ध्यान रखना चाहिए कि जानवर उस जगह को चाट न सके।

गाय के घी को फूस या कांसी की थाली में डालकर बराबर का साफ ठण्डा पानी डालकर खूब फेंटें। फिर थोड़ी देर रखकर वह पानी निकाल दें और दूसरा पानी डालकर फिर फेंटें। इस प्रकार २० से १०० बार पानी में फेंटा हुआ गाय का घी जली हुई जगह पर लगाने से आराम होता है। जितनी अधिक बार फेंटा हुआ घी होगा उतना ही अच्छा होगा। दिन में तीन-चार बार रोज दवा लगायें। मक्खी-मच्छर से बचाना चाहिए।

चूने के पानी में तिल या अरण्डी या नारियल का तेल मिलावें। इससे एक मलहम बन जायगा इसको लगावें। ऊपर से बड़, लेसवे या मेंहदी के पत्ते जलाकर उसकी राख छिड़कने से भी आराम होता है।

खान-पान— शीघ्र पचनेवाली पौष्टिक खुराक देनी चाहिए। गुड़, दूध चोकर, दलिया, अवश्य देना चाहिए ताकि जानवर कमजोर न होने पावे। पीने को ताजा पानी दें।

अन्य हिदायतें—यदि जानवर ज्यादा जल गया हो तो उसको बहुत होशियारी से दिन में दो-तीन बार करवट दिलवाना नहीं भूलना चाहिए, नहीं तो खाल गल जायगी और घाव हो जायगा। खूब अच्छी मुलायम बिछाली बिछानी चाहिए और जानवर को ऐसी जगह रखना चाहिए कि मच्छर-मक्खी उसे न सतावें और उसपर झूल डाल देनी चाहिए।

परिशिष्ट

(इस पुस्तक में जो दवाइयां बताई गई हैं उनकी सूची)

घर में मिलने वाली चीजें

१ अजवायन (Carum Copticum, Bishops Weed, Species of Dill)
२ अमचूर या आम की सूखी हुई खटाई (Dry mango pulp)
३ आम का अचार (Mango-pickle)
४ गुड़ (Gur. Jaggery)
५ घी, मक्खन (Clarified butter, Butter)
६ छाछ, मट्ठा, लस्सी (Butter milk, churned curd)
७ जीरा (सफेद) (White Cumin seed or Carraway 'White')
८ तम्बाकू (Tobacco)
९ तिल का तेल (Til oil, Sesame oil, Jingeley oil)
१० धनिया (Coriander seeds)
११ नमक (Common Salt)
१२ प्याज (Onion)
१३ मिट्टी का तेल (Kerosine oil)
१४ लाल मिर्च (Chili)
१५ सरसों का तेल (Mustard oil)
१६ सौंठ (Dry ginger)
१७ हलदी (Turmeric)

गांव में मिलनेवाली चीजें

१ अदरक (Ginger)
२ अलसी (Lin-seed)
३ कत्था (Catechu)
४ कबूतर की बींट (Pigeon's dung)
५ काली मिर्च (Pepper)
६ खारी नमक (Crude Glauber's Salt, Crude Soda Sulph)
७ गाजर के बीज (Carrot seeds)
८ गेरू (Ochre)
९ चाय (Tea)
१० चूना (Burnt lime, Unslacked-lime)
११ छुहारे (Dried dates)
१२ तूतिया या नीला थोथा (Blue Vitriol or Copper Sulphate)
१३ नीम का तेल (Neem oil or Margosa oil)
१४ फिटकरी (Alum)
१५ खांड का बतासा (Batasha made from Sugar)
१६ मेथी (Fenugreek)
१७ लहसुन (Garlic)
१८ सफेद तिल्ली (Sesame or Jingeley seeds 'White')
१९ सरसों की खल (Mustard oil cake)
२० साबुन (Soap)
२१ सिरका (Vinegar)
२२ सौंफ (Foeniculum vulgare, Anise seeds)
२३ शहद (Honey)
२४ शीरा (Molasses)
२५ हींग (Asafoetida)

आस-पास खेत या जंगल में मिलने वाली चीजें

१ अडूसा या वांसा (Adhatosavasica)
२ अमलतास की फली (Fruit of Cassia a fistula tree)
३ अमरबेल या आकाशबेल (Para site creeper Air creeper)
४ अनार का छिलका (Pomegranate bark)
५ अरण्ड के पत्ते (Castor-seed plant leaves)
६ आक्संड के पत्ते (Aksand leaves)
७ आक या मदार के पत्ते या जड़ (Mudar or Calotropis - gigantee or proceta leaves or roots)
८ कच्चे आम (Unripe Mango)
६ इमली के पत्ते (Tamarind leaves)
१० ककरौंधा, कुकर मुत्ता, जंगली तम्बाकू
११ कीकर या बबूल की छाल(Araibic gum-tree Acacia Arabbica tree's bark)
१२ केले की फली तथा रस व राख (Green Bananas fruits its juce and ash)
१३ गूलर (A fruit in appearance similar to wild fig)
१४ गुलाबाँस (It is a kind of plant found in gardans)
१५ गेंदा का फूल (Marigold flower)
१६ गोमा (घास)Goma, a kind of weed found in cultivated fields)
१७ ग्वारपाठा, घीकुवार (Bardadies Aloes or Indian Aloes)
१८ जवासा (Manna, Hebrew or Alhagi-Maurorum)
१६ झरबेरी के पत्ते (Zizyphus Jujuba or Jujube hedge)
२० दूब-घास (Dub-grass)
२१ धतूरे के बीज या पत्ते (Datura or Thornapple (white) seed)

९ देशी शराब (Country wine)
१० नौसादर (Amonium chloride)
११ भंग (Cannabic Indica or Indian hemp)
१२ रस कपूर (Muriate of Mercury)
१३ राई (Yellow Mustared)
१४ राल (Resin)
१५ सुहागा (Borax)
१६ शोरा (Nitre or Salt Peter, Potassium Nitrute)
१७ हीरा या हरा कसीस (Ferrous sulphate or green Vitriol)
१८ रीठा (Soap nut)